VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

नीतिशास्त्र

क्लासरूम स्टडी मटेरियल 2025

जून 2024 से मई 2025

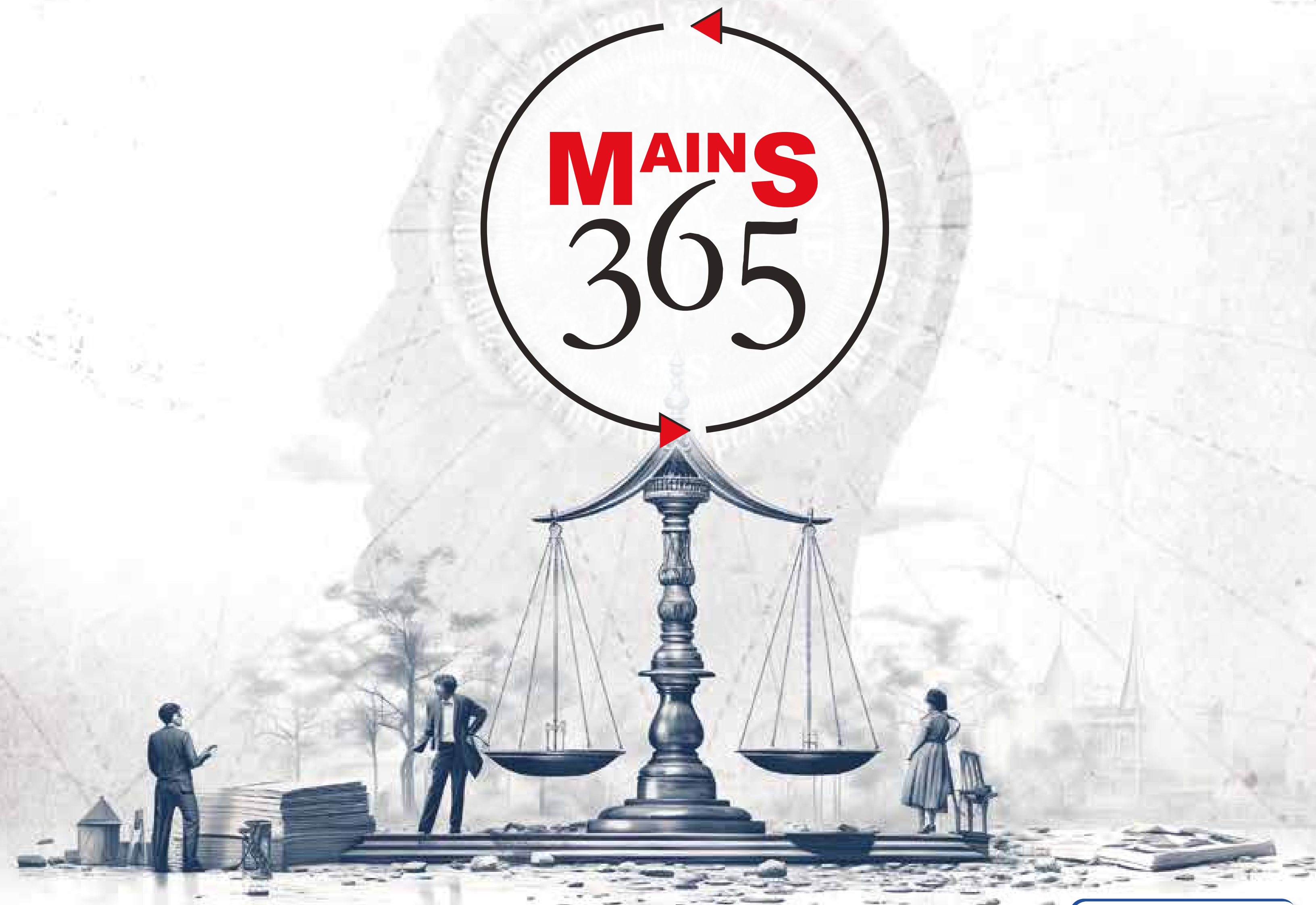

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias_upsc vision_ias /VisionIAS_UPSC www.visionias.in

ENGLISH MEDIUM
1 July | 5 PM

हिन्दी माध्यम
5 July | 5 PM

- द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, लाइवमिंट, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक टाइम्स, योजना, आर्थिक सर्वेक्षण, बजट, इंडिया ईयर बुक, RSTV आदि का समग्र कवरेज।
- मुख्य परीक्षा हेतु विशिष्ट लक्ष्योन्मुखी सामग्री।
- मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से एक वर्ष की समसामयिक घटनाओं की खंड–वार बुकलेटस (ऑनलाइन स्टूडेंटस के लिये मेटेरियल केवल सॉफ्ट कॉपी में ही उपलब्ध)
- लाइव और ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाएं जो दूरस्थ अभ्यार्थियों के लिए सहायक होंगी जो क्लास टाइमिंग मे लचीलापन चाहते हैं।

मुख्य परीक्षा
2025 के लिए 1 वर्ष का
समसामयिक घटनाक्रम
केवल 60 घंटे में

UPSC सिविल सेवा परीक्षा 2024 में चयनित सभी उम्मीदवारों को हार्दिक बधाई

10 in Top 10 Selections in CSE 2024 (from various programs of VISIONIAS)

हिन्दी माध्यम में 30+ चयन

AIR	नाम
137	अंकिता कांति
182	रवि राज
412	जितेंद्र कुमावत
438	ममता
448	सुख राम
483	ईश्वर लाल गुर्जर
509	अमित कुमार यादव
554	विमलोक तिवारी
564	गौरव छिम्वाल
618	राम निवास सियाग
622	आलोक रंजन
651	अनुराग रंजन वत्स
689	खेतदान चारण
718	रजनीश पटेल
731	तेशुकान्त
760	अश्वनी दुबे
795	कर्मवीर नरवाडिया
865	आनंद कुमार मीणा
873	सिद्धार्थ कुमार मीणा
890	सुषमा सागर
893	अरुण मालवीय
895	अजय कुमार
899	रितिक आर्य
911	अरुण कुमार
921	ममता जोगी
925	विजेंद्र कुमार मीणा
953	राजकेश मीणा
998	इकबाल अहमद

नीतिशास्त्र (Ethics)

विषय-सूची

1. नैतिक मूल्य (Ethical Values) ____ 6
1.1. जवाबदेही ____ 6
1.2. नेतृत्व ____ 7
1.3. निःस्वार्थता ____ 8
1.4. समानुभूति ____ 9
1.5. न्याय ____ 10
1.6. प्रोबिटी/ शुचिता ____ 11
1.7. ईमानदारी ____ 12
1.8. लोक सेवा के प्रति समर्पण ____ 13
1.9. सत्यनिष्ठा ____ 14
1.10. वस्तुनिष्ठता ____ 15
1.11. निष्पक्षता ____ 16
1.12. सहिष्णुता ____ 17
1.13. अंतःकरण ____ 17
2. प्रमुख अवधारणाएं (Key Concepts) ____ 18
2.1. अभिवृत्ति ____ 18
2.2. सामाजिक प्रभाव ____ 19
2.3. अनुनय ____ 20
2.4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता ____ 21
3. शासन और प्रशासन में नैतिकता (Ethics in Governance and Administration) ____ 23
3.1. लोक प्राधिकारियों के हितों का टकराव ____ 23
3.2. व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता ____ 25
3.3. सार्वजनिक अवसंरचना और सार्वजनिक सेवा वितरण ____ 27
3.4. सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी ____ 29
3.5. भ्रष्टाचार ____ 31
3.6. सोशल मीडिया और सिविल सेवक ____ 32
3.7. सुशासन की भारतीय अवधारणा ____ 34
3.8. मुख्य शब्दावलियां ____ 35
3.9. अभ्यास प्रश्न ____ 36
4. नैतिकता और समाज (Ethics and Society) ____ 37
4.1. गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार ____ 37
4.2. तुरंत न्याय ____ 39
4.3. बॉडी शेमिंग के नैतिक आयाम ____ 42
4.4. शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता ____ 43
4.5. प्रसन्नता/ सुख) ____ 44
4.6. अच्छा जीवन: कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाने की कला ____ 47
4.7. मुख्य शब्दावलियां ____ 49
4.8. अभ्यास प्रश्न ____ 49
5. नैतिकता और व्यवसाय (Ethics and Business) ____ 50
5.1. परोपकार: सामाजिक भलाई के लिए एक नैतिक अनिवार्यता ____ 50
5.2. सर्विलांस कैपिटलिज्म ____ 51
5.3. व्यावसायिक छंटनी की नैतिकता ____ 53
5.4. जिम्मेदार पूंजीवाद ____ 55
5.5. मुख्य शब्दावलियां ____ 56
5.6. अभ्यास प्रश्न ____ 56
6. नैतिकता और मीडिया (Ethics and Media) ____ 57
6.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन ____ 57
6.2. सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स के समय में सामाजिक प्रभाव और अनुनय ____ 58
6.3. अनुनय और भ्रामक सूचना ____ 61
6.4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता ____ 62
6.5. मुख्य शब्दावलियां ____ 63
6.6. अभ्यास प्रश्न ____ 63
7. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (Ethics and Technology) ____ 64
7.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता ____ 64
7.1.1. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और क्रिएटिविटी ____ 65
7.2. ऑनलाइन गेमिंग की नैतिकता ____ 66
7.3. मुख्य शब्दावलियां ____ 68
7.4. अभ्यास प्रश्न ____ 69
8. सुर्ख़ियों में रहे प्रमुख व्यक्तित्व (Key Personalities in News) ____ 70
8.1. महात्मा गांधी और करुणा ____ 70
8.2. रतन नवल टाटा ____ 72
8.3. श्री तुलसी गौड़ा ____ 73
8.4. मुख्य शब्दावलियां ____ 73
8.5. अभ्यास प्रश्न ____ 74

© Vision IAS

9. विविध (Miscellaneous) ____ 75

9.1. युद्ध की नैतिकता ____ 75

9.2. शांति के पहलू ____ 76

9.3. मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार ____ 79

9.4. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन ____ 80

9.5. मृत्युदंड और नैतिक आयाम ____ 82

9.6. मुख्य शब्दावलियां ____ 83

9.7. अभ्यास प्रश्न ____ 84

10. अपनी योग्यता का परीक्षण कीजिए (Test Your Learning) ____ 85

11. परिशिष्ट (Test Your Learning) ____ 92

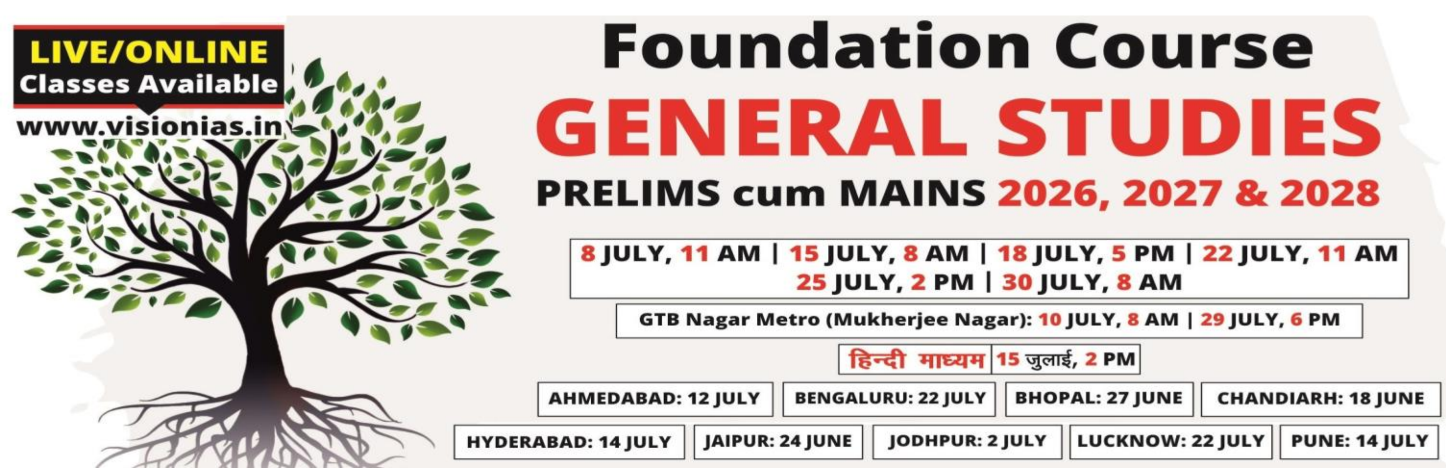

भूमिका

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

UPSC सिविल सेवा मुख्य परीक्षा केवल ज्ञान का परीक्षण नहीं है, बल्कि यह सटीकता, स्पष्ट अभिव्यक्ति और स्मार्ट रिवीजन की एक कठिन कसौटी है। सामान्य अध्ययन के विशाल सिलेबस में, एथिक्स खंड कुल अंक बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए **VISION IAS प्रस्तुत करता है — Mains 365: नीतिशास्त्र,** एक सुनियोजित, संक्षिप्त और परीक्षा-केंद्रित डॉक्यूमेंट जो आपकी अंतिम तैयारी का भरोसेमंद साथी है।

यह केवल समसामयिक आर्थिक घटनाओं का संकलन नहीं, बल्कि एक रणनीतिक साधन है जो उत्तर लेखन की गुणवत्ता सुधारने, वर्तमान एथिकल परिप्रेक्ष्य को सैद्धांतिक स्पष्टता के साथ जोड़ने और अंतिम चयन में निर्णायक भूमिका निभाने वाले अतिरिक्त अंकों को अर्जित करने में आपकी मदद करता है। परीक्षा-केंद्रित, संक्षिप्त और व्यावहारिक होने के लिए डिज़ाइन किया गया यह संकलन परीक्षा के अंतिम दिनों में भी तेज़, प्रभावी और समग्र रिवीजन को संभव बनाता है।

Mains 365: नीतिशास्त्र डॉक्यूमेंट स्मार्ट तैयारी और परीक्षा हॉल में रणनीतिक बढ़त के लिए आपका शॉर्टकट है।

स्पष्टता, रिवीजन और सफलता के लिए इसे अपना विश्वसनीय मार्गदर्शक बनाएं।

प्रश्न 1. 90% UPSC अभ्यर्थी मुख्य परीक्षा में असफल क्यों हो जाते हैं?

- **बिखरी हुई जानकारी:** कई स्रोतों के उपयोग से भ्रम पैदा होता है
- **पुराना कंटेंट:** ऐसे कंटेंट का उपयोग करना जो हालिया घटनाक्रमों को प्रतिबिंबित नहीं करते
- **एकीकरण का अभाव:** स्टेटिक ज्ञान को समसामयिक घटनाओं से जोड़ने में असमर्थता
- **खराब उत्तर संरचना:** ज्ञान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत न कर पाना
- **UPSC माइंडसेट को न समझ पाना:** यह न जान पाना कि आयोग वास्तव में क्या चाहता है

लेकिन क्या होगा यदि आप एक व्यापक स्रोत के साथ इन सभी चुनौतियों पर काबू पा सकें?

प्रश्न 2. Mains 365: नीतिशास्त्र क्यों?

- यह एक वन-स्टॉप वार्षिक संकलन है, जो प्रमुख नैतिक **बहसों को संक्षिप्त एवं परीक्षा-केंद्रित नोट्स के रूप में प्रस्तुत करता है। इसे UPSC CSE मुख्य परीक्षा के GS पेपर-IV के सिलेबस से व्यवस्थित रूप से जोड़ा गया है।**
- यह डॉक्यूमेंट आपकी केवल GS पेपर IV की तैयारी को ही नहीं, बल्कि निबंध लेखन को भी समृद्ध करता है, क्योंकि इसमें वास्तविक जीवन से लिए गए लोकसेवकों के उदाहरण और गवर्नेंस, मीडिया, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों से जुड़ी आधुनिक नैतिक दुविधाओं को शामिल किया गया है।

प्रश्न 3. मेरे पास पहले से ही स्टैटिक भाग की किताबें हैं। मुझे इसकी आवश्यकता क्यों है?

एथिक्स की स्टैटिक अवधारणाएं तभी सार्थक होती हैं, जब उन्हें वास्तविक जीवन के संदर्भों में लागू किया जाए। Mains 365 नीतिशास्त्र डॉक्यूमेंट नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को हालिया मुद्दों से जोड़कर इस कमी को दूर करता है, जिससे आपके उत्तर अधिक प्रासंगिक, विश्लेषणात्मक और प्रभावशाली बनते हैं।

प्रश्न 4. क्या इससे परीक्षा हॉल में मेरा समय बचेगा?

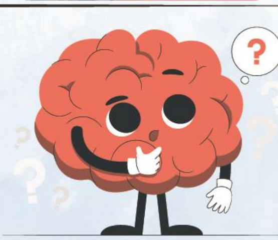

हाँ। इन्फोग्राफिक्स (मूल्य, अवधारणाएं, आदि), परिचय ब्लॉक, उद्धरण आदि विज़ुअल फ़्लैशकार्ड की तरह काम करते हैं; आपको एक तस्वीर याद आती है, एक पैराग्राफ नहीं। इससे हर 10 अंक वाले प्रश्न का उत्तर देने में कुछ मिनट बच जाते हैं।

 © Vision IAS

संक्षिप्त और आसानी से समझने योग्य परिभाषाएं

वस्तुनिष्ठता

अर्थः
वस्तुनिष्ठता का अर्थ है **तथ्यों – यानी प्रमाण – पर टिके** रहना। इसका मतलब है किसी भी पूर्वाग्रह, व्यक्तिगत विश्वास, भावनाओं या बाहरी प्रभाव के बिना, तथ्यों के आधार पर प्रत्येक स्थिति का **निष्पक्ष** मूल्यांकन करना।

- इसलिए, यह तर्कसंगत होती है और अधिकांश समय, अनुभवात्मक (Empirical) प्रकृति की होती है।

वस्तुनिष्ठता की शर्तें

3.5. भ्रष्टाचार (Corruption)

परिचय के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है

परिचय

हाल ही में, केंद्रीय सतर्कता आयोग ने अपनी 60वीं वार्षिक रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में सभी श्रेणियों के अधिकारियों/ कर्मचारियों के खिलाफ **भ्रष्टाचार की 74,203 शिकायतें** प्राप्त हुईं। इनमें से 66,373 का निपटारा कर दिया गया, जबकि 7,830 मामले अभी लंबित हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
लोक प्राधिकारी	• सरकारी अधिकारी व्यवस्था को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए प्रयास करते हैं, हालांकि, कुछ अधिकारी निजी लाभ के लिए शक्ति का दुरुपयोग करते हैं।
नागरिक	• सार्वजनिक सेवाओं तक निर्बाध पहुंच।
नागरिक समाज	• भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना। • सुशासन और पारदर्शिता की मांग करना।

यह डॉक्यूमेंट हितधारकों और उनके हितों की एक संरचित सूची प्रदान करता है, जिससे आपको ऐसे प्रश्नों के प्रति अधिक सूक्ष्म और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में

"किसी **व्यवसाय की एकमात्र सामाजिक जिम्मेदारी** यह है कि वह अपने संसाधनों का उपयोग लाभ बढ़ाने वाली गतिविधियों में करे।"

–मिल्टन फ्रीडमैन

प्रत्येक आर्टिकल के अंत में प्रासंगिक उद्धरण दिए गए हैं, ताकि आप यह समझ सकें कि अपने उत्तरों में वैल्यू एडिशन के लिए उनका प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे किया जाए।

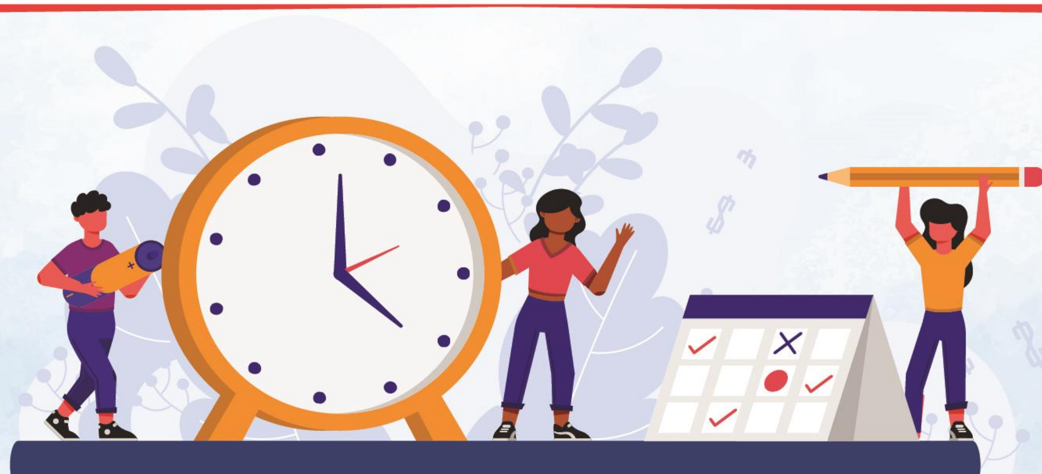

प्रश्न 5. मेरे उत्तरों को अतिरिक्त विश्वसनीयता क्या देती है?

उपयोग में आने वाले नैतिक उद्धरण (जैसे- गांधी, रॉल्स), सिविल सेवकों के वास्तविक जीवन के उदाहरण आदि तुरंत विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। परीक्षक उन उत्तरों को अधिक महत्व देते हैं जिनमें ठोस नैतिक गहराई और सटीक संदर्भ हों।

प्रश्न 6. यह डॉक्यूमेंट 3 घंटे की परीक्षा के अनुसार कैसे तैयार किया गया है?

हर सब-टॉपिक को एक निर्धारित क्रम में प्रस्तुत किया गया है: परिचय (संदर्भ)→हितधारक→नैतिक मुद्दे/दुविधा। आप इस फ्रेमवर्क को सीधे उठाकर उसमें अपने इनसाइट जोड़ सकते हैं और **तेज़ी से उत्तर लिख सकते** हैं, जबकि अन्य अभी भी फ्रेमवर्क बना रहे होंगे।

प्रश्न 7. क्या आप इसे एक वास्तविक प्रश्न के उदाहरण से समझा सकते हैं?

PYQ: "प्रशासनिक तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए इनपुट के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का अनुप्रयोग एक बहस का मुद्दा है। नैतिक दृष्टिकोण से इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (2024)"
Mains 365: नीतिशास्त्र से लिया गया अंश→

- **AI और प्रौद्योगिकी:** एल्गोरिदम में पूर्वाग्रह, आदि
- **नैतिक सिद्धांत:** स्वायत्तता, जवाबदेही, पारदर्शिता, अहिंसा
- **उदाहरण:** दिल्ली पुलिस की फेसिअल रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी निष्पक्षता और सम्यक् प्रक्रिया पर चिंताएं बढ़ाती है
- **दार्शनिक दृष्टिकोण:** नैतिकता संबंधी काण्ट के विचार (साध्य बनाम साधन), उपयोगितावाद (क्षमता को अधिकतम करना बनाम हानि)

इन्हें परिचय-मुख्य भाग-निष्कर्ष में शामिल करें:

- प्रशासन में नैतिक तर्कसंगतता को परिभाषित करके उत्तर की शुरुआत करें।
- AI की भूमिका - दक्षता बनाम नैतिक जोखिम (पूर्वाग्रह, सहानुभूति की कमी) का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।
- दोनों पक्षों का विश्लेषण करने के लिए वास्तविक उदाहरणों और नैतिक सिद्धांतों का उपयोग करें। मानव-AI पूरकता, नैतिक निरीक्षण और जवाबदेही ढांचे की आवश्यकता के साथ निष्कर्ष निकालें।

परिणाम: सिद्धांत और समकालीन नैतिक विमर्श पर आधारित एक फोकस्ड, समृद्ध उत्तर - बिल्कुल वही जो UPSC अपेक्षा करता है।

प्रश्न 8. कोई अंतिम प्रो टिप?

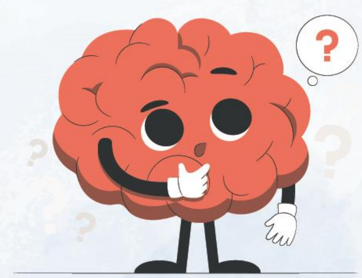

Mains 365 डॉक्यूमेंट को एक तैयार उत्तर बैंक के रूप में सोचें: यह पहले से तैयार है- आपका काम बस चुनना, व्यवस्थित करना और अपनी खुद की अंतर्दृष्टि जोड़ना है।

शुभकामनाएं,

टीम VisionIAS

फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2026

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- मौलिक अवधारणाओं की समझ के विकास एवं विश्लेषणात्मक क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- योजनाबद्ध तैयारी हेतु करेंट ओरिएंटेड अप्रोच
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- प्री फाउंडेशन कक्षाएं
- सीसैट कक्षाएं
- PT 365 कक्षाएं
- MAINS 365 कक्षाएं
- PT टेस्ट सीरीज
- मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज
- निबंध टेस्ट सीरीज
- सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन - शैली की कक्षाएं
- करेंट अफेयर्स मैगजीन

नोट: ऑनलाइन छात्र हमारे पाठ्यक्रम की लाइव वीडियो कक्षाएं अपने घर पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। छात्र लाइव चैट विकल्प के माध्यम से कक्षा के दौरान अपने संदेह और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। वे अपने संदेह और प्रश्न नोट भी कर सकते हैं और दिल्ली केंद्र में हमारे कक्षा सलाहकार को बता सकते हैं और हम फोन/मेल के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर देंगे।

Scan the QR CODE to download VISION IAS app

DELHI : 15 जुलाई, 2 PM | JAIPUR : 24 जून | JODHPUR : 2 जुलाई

Lakshya

MAINS MENTORING PROGRAM 2025

30 Days Expert Intervention

A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims Examination

15 JULY 2025

- Highly experienced and qualified team of Mentors for continuous support and guidance
- A structured plan of revision for GS Prelims, CSAT, and Current Affairs
- Effective Utilization of learning resources, including PYQs, Quick Revision Modules (QRMs), and PT-365

Lakshya

PRELIMS & MAINS INTEGRATED MENTORING PROGRAM

Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Program 2026

(A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims and Mains Examination 2026)

VisionIAS introduces the Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Programme 2026, offering unified guidance for UPSC aspirants across both stages, ensuring comprehensive support and strategic preparation for success

2026 | 13.5 MONTHS | 16 JULY

Highlights of the Program

- Coverage of the entire UPSC Prelims and Mains Syllabus
- Development of Advanced answer writing skills
- Highly experienced and qualified team of senior mentors
- Special emphasis to Essay & Ethics

1. नैतिक मूल्य (Ethical Values)

1.1. जवाबदेही (Accountability)

जवाबदेही

"संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, अगर उसे लागू करने वाले लोग अच्छे नहीं हैं, तो वह बुरा साबित होगा।"
– डॉ. बी.आर. अंबेडकर

अर्थ:
जवाबदेही का अर्थ है **लोक अधिकारियों को उनके व्यवहार के लिए जवाबदेह बनाना तथा उस संस्था के प्रति उत्तरदायी बनाना, जिससे वे अपना प्राधिकार प्राप्त** करते हैं।

जवाबदेही के विभिन्न प्रकार:

- **लंबवत जवाबदेही (Vertical accountability):** इसका आशय प्रिंसिपल-एजेंट संबंध से है, उदाहरण के लिए- चुनाव, जहां मतदाता (प्रिंसिपल) सरकारों (एजेंट्स) को जवाबदेह ठहराते हैं।
- **क्षैतिज जवाबदेही (Horizontal accountability):** यह जवाबदेही संस्थानों के एक नेटवर्क की सहायता से तय की जाती है, जिसमें शासन की विभिन्न शाखाओं (कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका) तथा स्वतंत्र संस्थानों के बीच पारंपरिक तरीके से एक-दूसरे पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है।
- **सामाजिक जवाबदेही (Social accountability):** जब सार्वजनिक अधिकारियों के कार्यों की कई नागरिक समाज संगठनों, स्वतंत्र मीडिया आदि द्वारा समीक्षा की जाती है, तो उसे सामाजिक जवाबदेही कहा जाता है।

लोक सेवाओं में जवाबदेही एक **कानूनी अवधारणा** है, क्योंकि इसकी रूपरेखाएं **कानून** द्वारा निर्धारित की जाती हैं। आदर्श रूप से इसमें **तीन तत्व** शामिल हैं:	**जवाबदेही:** इसका अर्थ है कि लोक सेवक अपने किए गए कार्य और छोड़े गए कार्य के संबंध में कानूनी रूप से जवाब देने के लिए बाध्य हैं।	**प्रवर्तनीयता:** इसका अर्थ है कि संबंधित लोक सेवक अपने आधिकारिक कर्तव्यों के निर्वहन में दोषी पाए जाने पर कानून के अनुसार दंडित होने के लिए उत्तरदायी है।	**शिकायत निवारण:** इसका अर्थ है कि पीड़ित व्यक्ति की उसकी शिकायतों को सुनने और उनका समाधान करने के लिए पर्याप्त संस्थागत तंत्र तक पहुंच होनी चाहिए।

जवाबदेही की प्रभावशीलता:

- यह लोक सेवकों को **मनमाने अधिकार रखने से रोकती** है, क्योंकि उन्हें जवाबदेह बनाया गया है।
- लोक सेवकों के कार्यक्षेत्र को स्पष्ट रूप से सीमांकित करके **हितों के टकराव से बचाती** है।
- सार्वजनिक सेवा वितरण में **न्याय, समानता और निष्पक्षता को बढ़ावा** देती है।
- **सार्वजनिक सेवाओं में वैधता** लाती है और लोक सेवकों को **ईमानदारी, निष्ठा एवं दक्षता के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन** करने के लिए प्रेरित करती है।

जवाबदेही और उत्तरदायित्व (Accountability and Responsibility):

- **उत्तरदायित्व** का तात्पर्य स्वयं के प्रति जवाबदेही से है, यानी जहां एक व्यक्ति अपने सभी कार्यों के लिए स्वयं के प्रति जवाबदेह महसूस करता है, भले ही वह किसी कानून के तहत न हो।
- **जवाबदेही** के लिए व्यक्ति को अपने द्वारा किए गए कार्यों हेतु उत्तरदायी और जवाबदेह दोनों होना चाहिए। इसके विपरीत, **उत्तरदायित्व** के लिए व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उसे सौंपे गए कार्यों को पूरा करने के लिए विश्वसनीय और भरोसेमंद हो।

कार्य में जवाबदेही से जुड़े उदाहरण

मोरारजी देसाई (1977-79 के दौरान भारत के प्रधान मंत्री) अलग-अलग मुद्दों पर **चर्चा एवं वाद-विवाद की जीवंतता के साथ-साथ लोकतंत्र के चौथे स्तंभ अर्थात् मीडिया की स्वतंत्रता में विश्वास** करते थे। वे नियमित रूप से प्रेस कॉन्फ्रेंस करते थे, जहां पत्रकारों को सवाल पूछने की पूरी आजादी दी जाती थी।

रेल मंत्री के रूप में कार्य करते हुए **लाल बहादुर शास्त्री ने दो बड़ी रेल दुर्घटनाओं के कारण अपने पद से त्याग-पत्र** दे दिया था। हालांकि, वे व्यक्तिगत रूप से दुर्घटना के लिए जिम्मेदार नहीं थे, फिर भी उन्होंने **नैतिक जिम्मेदारी** लेते हुए अपना त्याग-पत्र दे दिया था।

1.2. नेतृत्व (Leadership)

नेतृत्व (लीडरशिप)

"नेतृत्वकर्ता वह है जो अपने मार्ग के बारे में जानता है, उस मार्ग पर चलता है और अपने सहयोगियों का मार्गदर्शन करता है।"
-जॉन मैक्सवेल

अर्थ:
एक व्यक्ति, जो अपने सहयोगियों का किन्हीं विशेष साध्य या लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सफलतापूर्वक मार्गदर्शन करता है, नेतृत्वकर्ता (लीडर) कहलाता है।

- **लीडरशिप की भावना** किसी अधिकार या शक्ति की बजाय **सामाजिक प्रभाव से उत्पन्न** होती है और इसमें **इच्छित परिणाम के साथ-साथ एक लक्ष्य** भी शामिल होता है।

- **लीडरशिप की प्रभावशीलता: लीडरशिप सुशासन का एक महत्वपूर्ण घटक है।** एक प्रभावी नेतृत्वकर्ता **निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी** सुनिश्चित करता है तथा **विधि के शासन को समान रूप से लागू** करता है। इसके अलावा, वह **पारदर्शिता एवं जवाबदेही को बनाए रखता है।**
- **ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप (परिवर्तनकारी नेतृत्व):** यह एक प्रेरक शैली है, जिसमें लीडर्स अपनी टीम/ फॉलोअर्स को प्रेरित करते हैं और उन्हें संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ट्रांसफॉर्मेशनल लीडरशिप

बौद्धिक प्रोत्साहन (इंटेलेक्चुअल स्टीमुलेशन)	व्यक्तिगत विचार (इंडिविजुअल कंसीडरेशन)	आदर्श प्रभाव (आइडियलाइज्ड इन्फ्लुएंस)	प्रेरणादायक प्रोत्साहन (इंस्पिरेशनल मोटिवेशन)
नवाचार	मेंटरशिप	रोल मॉडल	स्पष्ट दृष्टि
रचनात्मकता	समानुभूति	कर के दिखाना	आशावाद
लक्ष्य	उद्देश्य	उत्साह	समावेशन
चुनौती	क्षमता एवं कौशल	मूल्यों का अनुकरण	उत्पादकता

जीवन में नेतृत्व से जुड़े उदाहरण

डॉ. वर्गीज कुरियन को भारत में **श्वेत क्रांति का जनक** माना जाता है। उन्होंने एक **सफल सहकारी संगठन "अमूल" की स्थापना** की थी। इस सहकारी संगठन का **स्वामित्व किसी एक व्यक्ति के पास न होकर सभी उत्पादक सदस्यों के पास** है और वे प्रत्येक स्तर पर हितधारक तथा निर्णयकर्ता होते हैं।

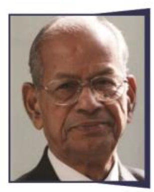

ई. श्रीधरन को **"भारत के मेट्रो मैन"** के नाम से भी जाना जाता है। सूक्ष्म दृष्टि यानी चीजों की बारीकियों पर ध्यान, समय-सीमा के मामले में प्रतिबद्धता और गुणवत्ता पर ध्यान देने जैसे गुणों ने उन्हें प्रभावी परियोजना प्रबंधक और इंजीनियरिंग नेतृत्व का प्रतीक बना दिया है।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
A.I.T.S
GS PRELIMS TEST SERIES 2026
ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ एवं मेंटरिंग प्रोग्राम
कॉम्प्रिहेंसिव रिवीजन, अभ्यास और मेंटरिंग के साथ बेहतर प्रदर्शन के लिए एक इनोवेटिव मूल्यांकन प्रणाली
30 टेस्ट
5 फंडामेंटल टेस्ट | 15 एप्लाइड टेस्ट
10 फुल लेंथ टेस्ट
2026 | ENGLISH MEDIUM 13 JULY | हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

1.3. निःस्वार्थता (Selflessness)

निःस्वार्थता

"स्वयं को पाने का सबसे अच्छा तरीका स्वयं को दूसरों की सेवा में खोना है" – **महात्मा गांधी**

अर्थ:
निःस्वार्थता एक ऐसी अभिवृत्ति है, जो स्वयं और दूसरों की **आवश्यकताओं के बीच** संतुलन स्थापित करती है। इसका आशय यह नहीं है कि **कोई अपनी आवश्यकताओं को पूरी तरह से त्याग** दे।

- **शासन व्यवस्था (गवर्नेंस) में निःस्वार्थता** के विचार का आशय है कि सार्वजनिक भूमिकाओं का निर्वहन करने वाले व्यक्ति **पूरी तरह से लोक हित में कार्य** करते हैं। इसका अर्थ है कि ऐसे **व्यक्तियों द्वारा उनकी स्वयं की निजी आवश्यकताओं की बजाय जनता की आवश्यकताओं पर अधिक प्राथमिकता** से ध्यान दिया जाता है।
  - निःस्वार्थता का सिद्धांत **सार्वजनिक क्षेत्रक के सेवा प्रदाता और प्राप्तकर्ता को मिलने वाले लाभ के बीच संभावित संघर्ष का समाधान** करता है।

निःस्वार्थ व्यक्तित्व के लक्षण

- समानुभूति (Empathy)
- करुणा (Compassion)
- दयालुता (Kindness)
- सम्मान (Respect)

जीवन में निःस्वार्थता से जुड़े उदाहरण

आकांक्षा फाउंडेशन और टीच फॉर इंडिया (TFI) की संस्थापक **शाहीन मिस्त्री** ने अमेरिका के टफ्ट्स विश्वविद्यालय में अपनी उच्च स्तरीय लिबरल आर्ट्स की पढ़ाई छोड़कर भारत में गरीब परिवार के बच्चों को पढ़ाने का फैसला किया। 1991 में, उन्होंने **पहला आकांक्षा केंद्र खोला,** जहां झुग्गी बस्तियों के बच्चों को पढ़ाया जाता है।

महाराष्ट्र पुलिस के तुकाराम ओम्बले ने 26/11 मुंबई हमलों के दौरान अनुकरणीय साहस और निःस्वार्थता का परिचय दिया। उन्होंने एक आतंकवादी से लड़ते हुए अपने साथी सैनिकों को बचाया एवं स्वयं शहीद हो गए।

1.4. समानुभूति (Empathy)

समानुभूति

"मेरे बच्चों, महसूस करो, महसूस करो; गरीबों के लिए, अज्ञानियों के लिए, दमितों के लिए महसूस करो... इन्हें ही अपना ईश्वर मानो।"
– स्वामी विवेकानंद

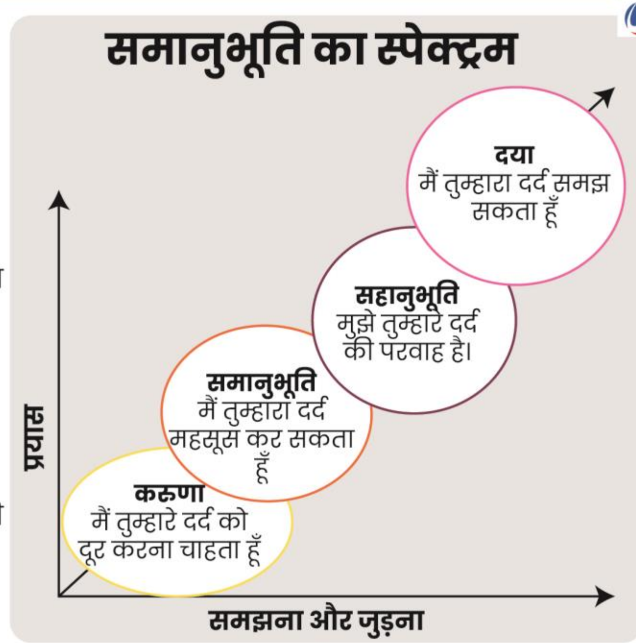

अर्थ:
समानुभूति को आम तौर पर **दूसरों की मन: स्थितियों/ भावनाओं को समझने की क्षमता** के साथ-साथ यह कल्पना करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है कि **कोई और क्या सोच रहा है या महसूस** कर रहा है।

- सरल शब्दों में कहें तो, इसका अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति की स्थिति को उसके परिप्रेक्ष्य से समझना और उन परिस्थितियों में स्वयं को रखकर महसूस करना जो वह महसूस कर रहा होगा।

- **समानुभूति के विभिन्न प्रकार:**
  - **भावनात्मक समानुभूति (Affective empathy):** दूसरों की मन: स्थितियों/ भावनाओं को समझ लेने के बाद, हम जिन संवेदनाओं और भावनाओं की अनुभूति करते हैं, तथा उसके अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं।
  - **संज्ञानात्मक समानुभूति (Cognitive empathy):** दूसरों की मनः स्थिति को पहचानना और उसे ठीक से समझना संज्ञानात्मक समानुभूति कहलाता है। इसमें दूसरों की मनः स्थिति को महसूस करना शामिल नहीं होता। इसे कभी-कभी "पर्सपेक्टिव टेकिंग" भी कहा जाता है।
- **समानुभूति की प्रभावशीलता:** यह नौकरशाही को और अधिक प्रभावी बनाती है, जन-केंद्रित प्रशासन सुनिश्चित करती है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय लेने की क्षमताओं में सुधार करती है, तथा सामाजिक सामंजस्य एवं समावेशिता को बढ़ाती है।
- **सहानुभूति एवं समानुभूति:**
  - **सहानुभूति (Sympathy)** सहज या स्वाभाविक भाव है और इसमें मुख्य रूप से संज्ञानात्मक (विवेक या बौद्धिकता) पहलू शामिल होता है। उदाहरण के लिए- बारिश वाली सर्दी की रात में किसी गरीब व्यक्ति को देखकर आप उसके लिए कुछ करने के बारे में सोचेंगे, लेकिन जरूरी नहीं कि आप उसके लिए कुछ करें ही।
  - **समानुभूति (Empathy),** सहानुभूति से अधिक गहरी और मजबूत होती है, क्योंकि इसमें संज्ञानात्मक या बौद्धिक पहलू के अलावा **भावनाएं भी जुड़ी** होती हैं।
- **समानुभूति (Empathy) और करुणा (Compassion):** समानुभूति व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति की स्थिति में रखकर यह समझने में मदद करती है कि दूसरा व्यक्ति क्या महसूस कर रहा है, वहीं **करुणा** एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की मदद करने के लिए प्रेरित करती है।

जीवन में समानुभूति से जुड़े उदाहरण

1984 में सिख समुदाय के खिलाफ हुए दंगों के बाद, टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष **रतन टाटा** ने समानुभूति का एक अनुकरणीय कार्य किया था। उन्होंने दंगों में सब कुछ खो चुके सिख ट्रक ड्राइवरों को नए ट्रक प्रदान किए थे।

विश्व की सबसे व्यापक स्वास्थ्य बीमा पहल, **आयुष्मान भारत योजना को समानुभूतिपूर्ण नीति-निर्माण के एक उदाहरण** के रूप में देखा जा सकता है। इसके तहत 12 करोड़ से अधिक गरीब और सुभेद्य परिवारों को द्वितीयक एवं तृतीयक स्तर की चिकित्सा हेतु अस्पताल में भर्ती होने पर प्रति वर्ष प्रति परिवार 5 लाख का हेल्थ कवरेज प्रदान किया जाता है।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
SANDHAN
Vision IAS की ओर से पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज

1.5. न्याय (Justice)

न्याय

"कार्यवाही में सच्चाई ही न्याय है" **- बेंजामिन डिस्राएली**

अर्थ:
न्याय को अक्सर **"निष्पक्षता (Fairness)" या "समान व्यवहार (Equal treatment)"** के रूप में परिभाषित किया जाता है। हालांकि, अलग-अलग समूहों के लिए इसके अलग-अलग मायने होते हैं।

- सरल शब्दों में, न्याय का अर्थ है **बिना किसी डर या पक्षपात के सही कार्य का चुनाव करना।**
- परंपरागत रूप से, **न्याय को चार प्रमुख सद्गुणों (Cardinal virtues) में से एक** माना गया है। **जॉन रॉल्स** ने इसे **"सामाजिक संस्थाओं के प्रथम सद्गुण"** के रूप में वर्णित किया है।
- **न्याय का सबसे मौलिक सिद्धांत -** जिसे अरस्तू ने परिभाषित किया था - वह है कि "समानों के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिए और असमानों के साथ असमान व्यवहार किया जाना चाहिए"।

चार मुख्य सद्गुण: आत्मसंयम | न्याय | विवेक | साहस

जीवन में न्याय से जुड़े उदाहरण

सागरमल गोपा (प्रजा मंडल के नेतृत्वकर्ता) ने अपनी पुस्तक **"जैसलमेर में गुंडाराज" में जवाहर सिंह (जैसलमेर के शासक) के अत्याचारों का उल्लेख किया** और वे जैसलमेर के लोगों को न्याय दिलाने पर अडिग रहे थे।

पी. नरहरि (IAS अधिकारी, 2001 बैच) की ओर से ग्वालियर जिले में **दिव्यांग व्यक्तियों, वरिष्ठ नागरिकों व महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों तक सुगम्य पहुंच सुनिश्चित करने में मदद हेतु चलाया गया अभियान सामाजिक न्याय के मूल्य को प्रदर्शित** करता है।

1.6. प्रोबिटी/ शुचिता (Probity)

प्रोबिटी (शुचिता)

"एक सिविल सेवक का यह परम कर्तव्य है कि वह ईमानदार, निष्पक्ष और कर्तव्य के प्रति समर्पित रहे।" - **सरदार वल्लभभाई पटेल**

अर्थ:
प्रोबिटी शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'probitas' से हुई है, जिसका अर्थ है "**अच्छाई**", और आमतौर पर इसे भ्रष्टाचार से मुक्त या अटूट ईमानदारी के रूप में देखा जाता है।

- प्रोबिटी या शुचिता का आशय **मजबूत नैतिक सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, शालीनता, चरित्र या व्यवहार में ईमानदारी** से है।

➔ **शुचिता की प्रभावशीलता:**
- **सुशासन:** शासन व्यवस्था या गवर्नेंस में शुचिता न केवल एक अनिवार्य घटक है, बल्कि एक कुशल और प्रभावी शासन प्रणाली सुनिश्चित करने तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए भी यह आवश्यक है।
- **तंत्र की वैधता:** यह राज्य की संस्थाओं में विश्वास का निर्माण करती है और यह धारणा बनाती है कि राज्य की कार्रवाइयां सामाजिक कल्याण के लिए होंगी।
- **निष्पक्षता:** यह प्रक्रिया की निष्पक्षता पर एक वस्तुनिष्ठ और स्वतंत्र दृष्टिकोण प्रदान करती है।
- **नौकरशाही से जुड़ी बाधाओं को कम करती है:** यह भाई-भतीजावाद, पक्षपात व राजनीतिक पक्षपात को दूर करने में मदद करती है और सहभागी शासन को सुगम बनाती है।

शुचिता की कमी → **भ्रष्टाचार के रूप में प्रकट होती है** → **अंततः अमीरों एवं गरीबों के बीच खाई बढ़ती है।**

➔ जहां **सत्यनिष्ठा (Integrity)** एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें समग्र नैतिक चरित्र शामिल है, वहीं **शुचिता (Probity)** विशेष रूप से पेशेवर जीवन में **ईमानदारी और भ्रष्टाचार-मुक्त** होने पर अधिक केंद्रित होती है।

जीवन में शुचिता से जुड़े उदाहरण

जैसिंडा अर्डर्न (न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री) ने 2023 में यह कहते हुए इस्तीफा दे दिया कि **अब उनके पास इस पद के अनुसार काम करने के लिए "पर्याप्त क्षमता नहीं है"। आत्म-जागरूकता का यह प्रदर्शन और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की बजाए देश की जरूरतों को प्राथमिकता देना शुचिता का उदाहरण है।**

षणमुगम मंजूनाथ (इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के अधिकारी) ने कई फ्यूल स्टेशनों पर पेट्रोल में व्यापक मिलावट के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जबकि उन्हें लगातार गंभीर धमकियां मिल रही थीं। इसके कुछ समय बाद उन्हें एक पेट्रोल पंप के मालिक ने गोली मार दी। ईमानदारी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और खतरे का सामना करने का उनका साहस सच्चे अर्थों में शुचिता का उदाहरण है।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
✓ सामान्य अध्ययन ✓ निबंध ✓ दर्शनशास्त्र
2025 | ENGLISH MEDIUM 13 JULY | हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026 | ENGLISH MEDIUM 13 JULY | हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

ऑप्शनल सब्जेक्ट टेस्ट सीरीज़
✓ भूगोल ✓ समाजशास्त्र ✓ दर्शनशास्त्र ✓ हिंदी साहित्य
✓ राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध
2025 | ENGLISH MEDIUM 13 JULY | हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026 | ENGLISH MEDIUM 13 JULY | हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

1.7. ईमानदारी (Honesty)

ईमानदारी

"ईमानदारी सबसे उत्तम नीति है, लेकिन जो स्वयं के लिए ईमानदार नहीं है, वह दूसरों के लिए ईमानदार नहीं हो सकता"
- महात्मा गांधी

अर्थ:
ईमानदारी का अर्थ सत्य बोलने और उसी के अनुसार कार्य करने से है। ईमानदारी **झूठ नहीं बोलने, धोखा नहीं देने, चोरी या धोखाधड़ी नहीं करने से कहीं अधिक है।**

- इसमें **दूसरों के प्रति सम्मान प्रकट करना और आत्म-जागरूकता** शामिल है।
- ईमानदारी **विश्वास की नींव** है और सामाजिक संबंधों में यह बहुत महत्वपूर्ण है।

→ **नैतिकता के परंपरागत (क्लासिकल) फ्रेमवर्क में ईमानदारी:**

- **अरस्तू द्वारा प्रतिपादित सद्गुण नीतिशास्त्र या सदाचार युक्त नैतिकता (Virtue ethics)** के अनुसार, ईमानदारी एक ऐसा सद्गुण है, जो व्यक्ति में अन्य सद्गुणों का भी विकास करता है।
    - इसके अनुसार, ईमानदारी से रहित होने के परिणामस्वरूप एक व्यक्ति अविश्वासी बन सकता है। वहीं दूसरी ओर, बहुत अधिक ईमानदारी के परिणामस्वरूप एक व्यक्ति लोगों की भावनाओं की कीमत पर अनावश्यक रूप से सत्य बातें सामने रखता है।
- **ईमानदारी का मध्य मार्ग (Middle ground)** वह है, जहां अपनी ईमानदारी को इस तरह से ढाला जा सकता है, जो मध्यम स्तर पर और रचनात्मक हो।
- दूसरी ओर, इमैनुएल कांट द्वारा प्रतिपादित **कर्तव्यशास्त्र** (Deontology) के अनुसार, ईमानदारी वस्तुतः **निरपेक्ष नैतिक दायित्व** है, भले ही उसकी कीमत कुछ भी हो।

जीवन में ईमानदारी से जुड़े उदाहरण

अनिल स्वरूप (सेवानिवृत्त IAS अधिकारी) ने कोयला ब्लॉक आवंटन के लिए पारदर्शी ई-नीलामी प्रणाली लागू की, शिक्षक नियुक्तियों और स्थानांतरण आदि में पारदर्शिता बढ़ाई, जिससे शासन में ईमानदारी का उदाहरण प्रस्तुत हुआ।

2011 के ICC विश्व कप में वेस्टइंडीज के खिलाफ मैच के दौरान, सचिन तेंदुलकर को ग्राउंड अंपायर ने कैच आउट के लिए नॉट आउट करार दिया था। विश्व कप में बहुत कुछ दांव पर लगे होने के बावजूद, तेंदुलकर स्वेच्छा से मैदान से बाहर चले गए, जिससे उन्हें आउट करार माना गया। **ईमानदारी और खेल भावना** के इस कार्य की, विशेष रूप से ऐसे महत्वपूर्ण टूर्नामेंट में, व्यापक रूप से प्रशंसा की गई और खेल में ईमानदारी के लिए उनकी प्रतिष्ठा को भी मजबूती मिली।

1.8. लोक सेवा के प्रति समर्पण (Dedication to Public Service)

लोक सेवा के प्रति समर्पण

"एक सिविल सेवक को मशीन की तरह काम नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे अपने कार्य में समर्पण और सेवा की भावना लानी चाहिए।" **– सरदार वल्लभभाई पटेल**

अर्थ:
किसी महत्वपूर्ण लक्ष्य को पाने के लिए **अपना समय, स्वयं को और अपनी पूरी ताकत झोंक देना ही समर्पण** कहलाता है।

- लोक सेवा के प्रति समर्पण का अर्थ है **"लोक हित को व्यक्तिगत हित से पहले प्राथमिकता देना।"**

- लोक सेवक सरकार और नागरिकों के लिए काम करते हैं, इसलिए उन्हें लोगों की आकांक्षाओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए **सेवा की उच्च भावना** (समाज या देश के लिए योगदान की भावना) एवं त्याग की आवश्यकता होती है।
  - कांट के अनुसार, **कर्तव्य की भावना से प्रेरित होकर किए गए किसी कार्य का नैतिक मूल्य** उस कार्य द्वारा प्राप्त किए जाने वाले या इच्छित परिणाम में नहीं बल्कि उस नैतिक सिद्धांत में निहित होता है, जिसके अनुसार कार्य पर निर्णय लिया जाता है। कांट के अनुसार, नैतिक मूल्य एक नैतिक सिद्धांत या "मैक्सिम (Maxim)" से आता है - वह सिद्धांत जो किसी के कर्तव्य को पूरा करने पर जोर देता है, चाहे वह कर्तव्य कुछ भी हो।
- **समर्पण और प्रतिबद्धता (Dedication and Commitment):** समर्पण प्रतिबद्धता से भिन्न होता है, क्योंकि प्रतिबद्धता में कोई व्यक्ति **औपचारिक रूप से दायित्व से बंधा** होता है, जबकि **समर्पण कर्तव्यबोध से प्रेरित** होता है और यह **राज्य या समाज के आदर्शों से प्रेरणा** प्राप्त करता है।

जीवन में लोक सेवा के प्रति समर्पण से जुड़े उदाहरण

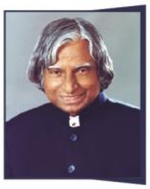

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपना जीवन अनेक रूपों में देश की सेवा में समर्पित किया। डॉ. कलाम का सबसे महत्वपूर्ण कार्य **भारत के स्वदेशी मिसाइल कार्यक्रम की शुरुआत और परमाणु कार्यक्रम में योगदान** है।

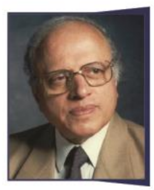

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन ने अपना जीवन अनेक रूपों में लोक सेवा हेतु समर्पित कर दिया। इनमें शामिल हैं: भारत में हरित क्रांति के लिए डॉ. नॉर्मन बोरलॉग के साथ सहयोग; राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसी महत्वपूर्ण सिफारिशें देना आदि।

Lakshya
MAINS MENTORING PROGRAM 2025
30 Days Expert Intervention
A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims Examination
15 JULY 2025
Highly experienced and qualified team of Mentors for continuous support and guidance
A structured plan of revision for GS Prelims, CSAT, and Current Affairs
Effective Utilization of learning resources, including PYQs, Quick Revision Modules (QRMs), and PT-365

Lakshya
PRELIMS & MAINS INTEGRATED MENTORING PROGRAM
Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Program 2026
(A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims and Mains Examination 2026)
VisionIAS introduces the Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Programme 2026, offering unified guidance for UPSC aspirants across both stages, ensuring comprehensive support and strategic preparation for success
2026 | 13.5 MONTHS | 16 JULY
Highlights of the Program
- Coverage of the entire UPSC Prelims and Mains Syllabus
- Development of Advanced answer writing skills
- Highly experienced and qualified team of senior mentors
- Special emphasis to Essay & Ethics

 © Vision IAS

1.9. सत्यनिष्ठा (Integrity)

सत्यनिष्ठा

"सत्यनिष्ठा एक अच्छे मनुष्य का सार है।" **- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

अर्थ:
'इंटीग्रिटी' शब्दावली की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'integer' से हुई है, जिसका अर्थ है पूर्ण या अखंड होना।

- एक व्यक्ति जिसमें सत्यनिष्ठा (इंटीग्रिटी) होती है, वह **ईमानदारी, निष्पक्षता, शालीनता जैसे मजबूत नैतिक सिद्धांतों** का पालन करता है और उन्हें बदलने से इंकार करता है।
- सत्यनिष्ठा का सार यह है कि व्यक्ति **सिद्धांतों का पालन** करता है; वह सही आचरण को चुनता है, उस चयन के अनुसार निरंतर आचरण करता है (भले ही वह अलाभकारी या असुविधाजनक ही क्यों न हो), और खुलकर अपने विचारों को प्रकट करता है।

सत्यनिष्ठा के लक्षण	ईमानदारी/ सच्चाई	निष्पक्षता	शालीनता/ सम्मान	नैतिक सिद्धांतों का पालन करना	साहस	उत्तरदायित्व/ विश्वसनीयता

- **ईमानदारी और सत्यनिष्ठा (Honesty and Integrity)**
  - जहाँ **ईमानदारी** का अर्थ है तथ्यों को ज्यों का त्यों रखना, अर्थात सत्य को कायम रखना, वहीं सत्यनिष्ठा का अर्थ है परिणामों की परवाह किए बिना हर समय वही करना जो सही है।
  - कभी-कभी, एक व्यक्ति को **ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के बीच चयन** करना पड़ता है। उदाहरण के लिए- सांप्रदायिक दंगों से ग्रस्त किसी शहर में, भीड़ से भागता हुआ एक व्यक्ति आपके घर में शरण मांगता है, जब भीड़ दिखाई नहीं देती। आप उस व्यक्ति को अपने घर के अंदर छिपने के लिए कहते हैं और जब हथियार लिए भीड़ आपके घर पर आती है, तो आपके सामने दो विकल्प होते हैं:
    - **ईमानदारी का अर्थ** है कि आप भीड़ को बताएं कि जिस आदमी को वे खोज रहे हैं वह आपके घर में छिपा है।
    - **सत्यनिष्ठा का अर्थ** है कि आप गलत दिशा की ओर इशारा करें या अपनी अज्ञानता प्रदर्शित करें कि आपने उस व्यक्ति को नहीं देखा है।
- **सत्यनिष्ठा की प्रभावशीलता:** यह जवाबदेही बढ़ाती है, भ्रष्टाचार को हतोत्साहित करती है, निर्णय लेने में पारदर्शिता को बढ़ाती है, प्रशासनिक दक्षता में सुधार लाती है, बेहतर जनसेवा सुनिश्चित करती है, आदि।

जीवन में सत्यनिष्ठा से जुड़े उदाहरण

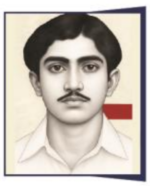

शहीद हेमू कालाणी एक क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे। जब उन्होंने **ट्रेन को पटरी से उतारने की योजना** बनाई थी, तो उनके साथियों और उनके संगठन (स्वराज सेना) की पहचान उजागर करने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें थर्ड-डिग्री टॉर्चर दिया था। फिर भी, उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया और निडरता से यातनाएं झेलीं एवं किसी का नाम उजागर नहीं किया।

आईएएस अधिकारी के.के. पाठक (जिन्हें बिहार के सरकारी स्कूलों में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है) ने बिहार शिक्षा विभाग में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते हुए इस्तीफा दे दिया।
उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हुए बेहतर मध्याह्न भोजन उपलब्ध कराने, स्कूलों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति को कम करने, और शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करने का प्रयास किया था।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
न्यूज़ टुडे
रोजाना 9 PM पर न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए
न्यूज टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए
न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए
अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

"न्यूज टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:

किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए

न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है

टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

1.10. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

वस्तुनिष्ठता

अर्थ:
वस्तुनिष्ठता का अर्थ है **तथ्यों - यानी प्रमाण - पर टिके** रहना। इसका मतलब है किसी भी पूर्वाग्रह, व्यक्तिगत विश्वास, भावनाओं या बाहरी प्रभाव के बिना, तथ्यों के आधार पर प्रत्येक स्थिति का **निष्पक्ष** मूल्यांकन करना।

- इसलिए, यह तर्कसंगत होती है और अधिकांश समय, अनुभवात्मक (Empirical) प्रकृति की होती है।

सिविल सेवाओं में वस्तुनिष्ठता:

- यह लोक सेवकों को **कानून, तर्क, योग्यता और स्वीकृत मानकों, प्रथाओं एवं मानदंडों को बनाए** रखने में सहायता करती है।
- हालाँकि, नैतिक दृष्टिकोण से **व्यावहारिक स्थिति में पूर्ण वस्तुनिष्ठता हमेशा वांछनीय नहीं** हो सकती।
- वस्तुनिष्ठता को **समानता, न्याय और निष्पक्षता के अंतिम मूल्यों** को प्राप्त करने के लिए एक औसत मूल्य के रूप में माना जाता है।
- **वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता: वस्तुनिष्ठता (Objectivity)** पर्यवेक्षणों और सूचना विश्लेषण में तथ्यों एवं साक्ष्यों पर केंद्रित होती है। वहीं **निष्पक्षता (Impartiality)** सुनिश्चित करती है कि निर्णय या फैसले किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के बिना लिए जाएं।

वस्तुनिष्ठता की शर्तें

वस्तुनिष्ठता
- तथ्य-आधारित
  - सत्य
  - प्रासंगिक
- निष्पक्षता
  - संतुलित/ पक्षपात रहित
  - तटस्थ प्रस्तुति

जीवन में वस्तुनिष्ठता से जुड़े उदाहरण

पोषण ट्रैकर डैशबोर्ड पर आधारित पोषण अभियान के कार्यान्वयन के लिए साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना, सार्वजनिक नीति निर्माण और उसके कार्यान्वयन में वस्तुनिष्ठता का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

केंद्र सरकार के अधिकारियों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए **डिजिटल पोर्टल - प्रोबिटी, स्पैरो और सॉल्व - कार्मिक प्रबंधन में वस्तुनिष्ठता** का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

1.11. निष्पक्षता (Impartiality)

निष्पक्षता

"सहिष्णुता और निष्पक्षता वास्तविक रूप से एक सभ्य समाज की कसौटी हैं" **– डॉ. एस. राधाकृष्णन**

अर्थ:
किसी व्यक्ति या समूह को दूसरों की तुलना में वरीयता न देना तथा व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को अपने कार्यों में शामिल न करना ही निष्पक्षता है।

- इसका सीधा सा अर्थ है किसी का पक्ष न लेना और इसे आमतौर पर न्याय के सिद्धांत के रूप में समझा जाता है।
- इसके अनुसार निर्णय पूर्वाग्रह या पक्षपात की बजाय वस्तुनिष्ठ मानकों पर आधारित होने चाहिए।

➔ **निष्पक्षता (Impartiality) और गैर-पक्षपात (Non-Partisanship):** जहां निष्पक्षता किसी का पक्ष न लेना है, वहीं गैर-पक्षपात एक संकीर्ण अवधारणा है जो एक सिविल सेवक द्वारा **गैर-राजनीतिक व्यवहार या राजनीतिक तटस्थता** को दर्शाती है।

- भारत में, इन्हें **संविधान; केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियमावली, 1964; अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियमावली, 1968; और आचार संहिता, 1997** के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है।

➔ **निष्पक्षता और गैर-पक्षपात की प्रभावशीलता**

- **जनता का विश्वास:** यह लोक सेवा के कामकाज के संबंध में जनता में विश्वसनीयता और भरोसा लाती है।
- **सुशासन:** निष्पक्षता लोक सेवकों को शासन के वैकल्पिक विचार प्रस्तुत करने का अधिकार देती है, जिससे सार्वजनिक सेवा में सुधार होता है।
- **न्याय:** यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समानता, निष्पक्षता और न्याय सुनिश्चित करती है।

जीवन में निष्पक्षता से जुड़े उदाहरण

भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त **टी. एन. शेषन (1990-1996)** ने चुनाव संबंधी कई सुधारों को लागू किया और किसी भी राजनीतिक दबाव के आगे झुके बिना गैर-पक्षपातपूर्ण तरीके से स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित किए।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) के पूर्व अध्यक्ष **नंदन नीलेकणी** ने आधार के तकनीकी और प्रशासनिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी की परवाह किए बिना विभिन्न सरकारों के साथ मिलकर काम किया। यह भारत में शासन के प्रति नीलेकणी के गैर-पक्षपाती दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा 2024 में चयनित सभी उम्मीदवारों को हार्दिक बधाई

10 in Top 10 Selections in CSE 2024 (from various programs of VISIONIAS)

हिन्दी माध्यम में 30+ चयन

1.12. सहिष्णुता (Tolerance)

सहिष्णुता

"अगर हम लोकतंत्र की सच्ची भावना का विकास करना चाहते हैं, तो हम असहिष्णु नहीं हो सकते। असहिष्णुता अपने उद्देश्य में विश्वास की कमी को दर्शाती है।" **– महात्मा गांधी**

अर्थ:
सहिष्णुता का मतलब उन लोगों के प्रति निष्पक्ष, वस्तुनिष्ठ और उदार रवैया रखना है जिनकी राय, व्यवहार, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता आदि खुद से अलग हैं।

- **भारत जैसे बहुलवादी समाज में सद्भाव और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने के लिए** विविधता एवं विभिन्न सामाजिक समूहों के प्रति सहिष्णुता तथा पारस्परिक सम्मान महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **सहिष्णुता का अभाव या असहिष्णुता** संकीर्ण मानसिकता को दर्शाती है तथा स्वतंत्र सोच की विरोधी होती है।
- **सिविल सेवा में सहिष्णुता**
  - सिविल सेवाओं में वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, गैर-पक्षपात, करुणा, न्याय आदि सहित कई **अन्य मूल्यों को बनाए रखने हेतु सिविल सेवक में सहिष्णुता का होना अनिवार्य है।**
  - सहिष्णुता सिविल सेवकों को **समावेशी नीति निर्माण और उसके कार्यान्वयन तथा समाज में सुदृढ़ सामाजिक पूंजी विकसित** करने में मदद करती है।

जीवन में सहिष्णुता से जुड़े उदाहरण

नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका के प्रथम राष्ट्रपति) ने जेल से रिहा होने और राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने के बाद, **सहिष्णुता और सुलह की बेहतरीन मिसाल पेश की थी। उन्होंने बदला लेने की इच्छा के बिना,** अतीत के अन्याय को दूर करने के लिए **सत्य और सुलह आयोग** की स्थापना की थी।

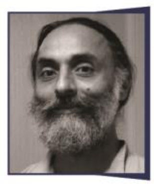

भारत के सुप्रीम कोर्ट ने अपने विभिन्न निर्णयों में काफी सहिष्णुता दिखाई है, जिनमें **ट्रांसजेंडर लोगों को 'थर्ड-जेंडर' की मान्यता प्रदान करना (नालसा बनाम भारत संघ वाद, 2014), आपसी सहमति पर आधारित समलैंगिक संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर करना (नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत संघ, 2018),** आदि शामिल हैं।

1.13. अंतःकरण (Conscience)

अंतःकरण

"अंतःकरण की अभिव्यक्ति ही ईश्वर की अभिव्यक्ति है।" **– महात्मा गांधी**

अर्थ:
अंतःकरण मन की एक विशेष क्रिया है, जो व्यक्ति को **यह आंकने में सक्षम बनाती है कि उसके कार्य कितने नैतिक हैं।**

- सीधे शब्दों में कहें तो, अंतःकरण **नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों को पहचानने की हमारी जन्मजात, अपरिवर्तनीय एवं अविनाशी क्षमता है।**
  - एक सुगठित और सुविज्ञ अंतःकरण हमें स्वयं को और अपनी दुनिया को जानने एवं उसके अनुसार कार्य करने में सक्षम बनाता है।
- अंतःकरण **दो तथ्यों का वर्णन करता है – एक व्यक्ति क्या सही मानता है और एक व्यक्ति कैसे सही का निर्णय लेता है।** यह एक खाली डिब्बे की तरह है जिसे किसी भी प्रकार की नैतिक सामग्री से भरा जा सकता है।
  - **उदाहरण के लिए–** जहां कुछ चिकित्सक गर्भपात पर अंतःकरण संबंधी आपत्ति उठाते हैं, वहीं किसी और का अंतःकरण गर्भपात कराने की मांग कर सकता है।
- **अंतःकरण का संकट**
  - अंतःकरण का संकट आंतरिक दुविधा या अंतःकरण की आवाज़ और बाहरी प्रेरणाओं के प्रभाव के बीच आंतरिक संघर्ष की स्थिति है, जो व्यक्ति को विपरीत निर्णय लेने के लिए मजबूर करती है।

जीवन में अंतःकरण का उदाहरण

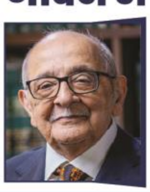

1975 के आपातकाल के दौरान भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल रहे **फली नरीमन** ने अपनी अंतःकरण की आवाज़ सुनी और आपातकाल के दौरान संवैधानिक अधिकारों के निलंबन का समर्थन करने से स्पष्ट रूप से इनकार कर दिया। उन्होंने अपना रुख अपनाया, अपनी ईमानदारी बनाए रखी और अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

2. प्रमुख अवधारणाएं (Key Concepts)

2.1. अभिवृत्ति (Attitude)

अभिवृत्ति

अर्थ: अभिवृत्ति को किसी व्यक्ति के किसी विषय या किसी अन्य व्यक्ति को देखने और उसका मूल्यांकन करने के तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह किसी निश्चित विचार, वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करने की प्रवृत्ति या पूर्वधारणा होती है।

अभिवृत्ति के घटक

संज्ञानात्मक (Cognitive): यह किसी व्यक्ति के ज्ञान को दर्शाता है, जिसमें सत्य या असत्य, अच्छा या बुरा, वांछनीय या अवांछनीय चीजों के बारे में निश्चितता के अलग-अलग स्तर होते हैं।

व्यवहारात्मक (Behavioural): यह किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति उसकी संज्ञानात्मक और भावात्मक प्रतिक्रिया पर आधारित व्यवहार करना है।

भावात्मक (Affective): यह एक भावनात्मक घटक है जो मनोवृत्तिगत अभिप्राय जैसे पसंद और नापसंद, या उत्पन्न भावनाओं के प्रति चेतना का निर्माण करता है।

अभिवृत्ति को निर्धारित करने वाले कारक

क्लासिकल कंडीशनिंग: बार-बार अनुभवहीन प्रोत्साहन के चलते एक तटस्थ प्रोत्साहन भी वही अनुभवहीन प्रतिक्रिया पैदा करने लगता है।
- **उदाहरण के लिए-** जब कोई बच्चा पाकिस्तान के नकारात्मक रवैये के कारण अपने पिता से बार-बार सुनता है कि वह एक शत्रु देश है, तो उसके मन में धीरे-धीरे पाकिस्तान के प्रति नकारात्मक रवैया विकसित हो जाता है, हालांकि शुरुआत में पाकिस्तान शब्द उसके लिए एक तटस्थ शब्द था।

इंस्ट्रूमेंटल कंडीशनिंग: व्यक्ति उन व्यवहारों को सीखते हैं, जिन्हें पुरस्कृत किया जाता है तथा ऐसे व्यवहारों का अनुसरण करने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत, जिन व्यवहारों को पुरस्कृत नहीं किया जाता है, उनका अनुसरण करने की संभावना घट जाती है।
- **उदाहरण के लिए-** बच्चे यह सीखते हैं कि वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए माता-पिता के समान अभिवृत्ति का अनुसरण करना महत्वपूर्ण है।

कॉग्निटिव अप्रेजल्स: अभिवृत्ति का विकास करने के लिए जानकारी और अनुभवों का मूल्यांकन करना आवश्यक होता है।
- **उदाहरण के लिए-** मतदाता राजनीतिक उम्मीदवारों की नीतियों और बहस के प्रदर्शन का विश्लेषण करके उनके बारे में अपनी राय बनाते हैं।

ऑब्ज़र्वेशनल लर्निंग: सहकर्मियों के व्यवहार और उनके परिणामों के जरिए अभिवृत्ति का विकास करना।
- **उदाहरण के लिए-** छात्र परिवार के सदस्यों की जीवन शैली और नौकरी से संतुष्टि के आधार पर व्यवसायों के बारे में अपनी अभिवृत्ति विकसित करते हैं।

पर्सुएशंस: संचार के जरिए अभिवृत्ति को बदलने के लिए जानबूझकर किए गए प्रयास।
- **उदाहरण के लिए-** आकर्षक विज्ञापन देखने के बाद किसी उत्पाद के प्रति उपभोक्ताओं की अभिवृत्ति में बदलाव हो सकता है।

अभिवृत्ति के कार्य

ज्ञान: नई जानकारी को व्यवस्थित और उसकी व्याख्या करने के लिए एक ढांचे के रूप में कार्य करती है। इससे हम अपने परिवेश को शीघ्रता से समझ कर उसके प्रति अनुक्रिया कर पाते हैं।
- **उदाहरण के लिए-** किसी व्यक्ति के बारे में ज्ञान के अभाव में लोग उसके बारे में रुढ़िबद्ध दृष्टिकोण अपनाते हैं।

उपयोगितावादी: व्यवहार को इस तरह निर्देशित करती है, जिससे हमारे सामाजिक और भौतिक परिवेश में लाभ अधिकतम एवं लागत न्यूनतम हो।
- **उदाहरण के लिए-** इसरो के सफल अंतरिक्ष अभियानों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, विज्ञान शिक्षा और STEM क्षेत्रों में करियर के लिए समर्थन को प्रोत्साहित करके एक उपयोगितावादी कार्य करती है।

अहं-रक्षा: आत्म-सम्मान की रक्षा करने, सकारात्मक आत्म-अवधारणा बनाए रखने और भावनात्मक संघर्षों से निपटने में मदद करती है।
- **उदाहरण के लिए-** बॉडी पॉजिटिविटी मूवमेंट ने शरीर के विविध रूपों को स्वीकार करने और उनके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति अपनाने की प्रेरणा दी है, जिससे लोग उन अवास्तविक सौंदर्य मानकों से पैदा होने वाली हीन भावना से बच सकें।

मूल्य-अभिव्यक्ति: हमारी व्यक्तिगत आत्म-भावना को मान्य करने और हमारे मूल्यों को दूसरों तक पहुँचाने की अनुमति देती है।
- **उदाहरण के लिए-** बिश्नोई समुदाय द्वारा प्रकृति के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का मूल्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके सकारात्मक अभिवृत्ति में परिलक्षित होता है।

2.2. सामाजिक प्रभाव (Social Influence)

सामाजिक प्रभाव

अर्थ: सामाजिक प्रभाव वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा **व्यक्ति अन्य लोगों के साथ सामाजिक संपर्क के परिणामस्वरूप अपनी राय या व्यवहार को बदलते हैं अथवा अपनी मान्यताओं को संशोधित** करते हैं।

- सोशल इन्फ्लुएंसर वह व्यक्ति होता है, जो किसी विशेष ऑनलाइन चैनल या प्लेटफॉर्म के जरिए अपने दर्शकों का मनोरंजन करता है और उनके साथ जुड़ाव बनाए रखता है। वह सोशल मीडिया पर ब्लॉग, पोस्ट, ट्वीट आदि के माध्यम से अपने विचार साझा करता है और इस तरह लोगों की राय, पसंद और व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

सामाजिक प्रभाव के मॉडल

	व्यवहार	अभिवृत्ति	मूल्य
अनुपालन (Compliance)	✔	✘	✘
पहचान (Identification)	✔	✔	✘
आत्मसात्करण (Internalization)	✔	✔	✔

सामाजिक प्रभाव के विविध प्रकार

अनुरूपता (Conformity): किसी समूह या समाज के मानदंडों, विचारों या व्यवहारों के साथ खुद को ढाल लेना।
- **उदाहरण के लिए-** सरकारी कार्यालयों में बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली की शुरुआत करना, ताकि समय की पाबंदी के मानदंड को व्यापक रूप से अपनाया जा सके।

स्व-पूर्ति की भविष्यवाणी यानी व्यवहारिक पुष्टि (Self-fulfilling prophecy): एक ऐसी भविष्यवाणी जो लोगों की मान्यताओं और परिणामी व्यवहारों के कारण सच साबित होती है।
- **उदाहरण के लिए-** कुछ शहरों (जैसे आई.टी. के लिए बेंगलुरु या वित्त बाजार के लिए मुंबई) के बारे में लोगों की धारणा एक उद्योग केंद्र के रूप में बनी हुई है। ये शहर और अधिक कंपनियों एवं कुशल पेशेवरों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, जिससे उनकी स्थिति और अधिक मजबूत होती है।

आज्ञाकारिता (Obedience): किसी **प्राधिकरण के निर्देश या अधिकारी के सीधे आदेश** दिए जाने के कारण अपने व्यवहार में बदलाव लाना।
- **उदाहरण के लिए-** उच्च अधिकारियों से नीतिगत निर्देश प्राप्त होने पर उसका कार्यान्वयन करना, जैसे कि कोविड-19 महामारी के दौरान अचानक ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाना।

अनुनय (Persuasion): किसी व्यक्ति के विचारों को बदलने या जानकारी, भावनाओं या तर्क के जरिए उसे किसी ख़ास तरह से कार्य करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करना।

© Vision IAS

2.3. अनुनय (Persuasion)

अनुनय

अर्थ: अनुनय का अर्थ है- एक व्यक्ति या संचारकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति के विश्वास, दृष्टिकोण, व्यवहार या पसंद को बदलने के लिए सोच-समझकर किया गया प्रयास।

- यह ज्यादातर जानबूझकर, स्पष्ट और मौखिक होता है, जो भाषा एवं रुचियों में समानता के माध्यम से कथित मित्रता के विचारों पर आधारित होता है।
- **सिद्धांत:** पारस्परिकता, संगति, सामाजिक प्रमाण, अधिकार, पसंद, कमी और एकता।
- **उपयोग की जाने वाली तकनीकें:** आकर्षक तस्वीरें और वीडियो, दिलचस्प कहानियां, सामाजिक प्रमाण, तथा सकारात्मक सामाजिक मानदंडों को बढ़ावा देना।

अनुनय के तरीके (Modes of Persuasion)

एथोस (विश्वास और विश्वसनीयता संबंधी आग्रह)	पैथोस (भावना संबंधी आग्रह)	लोगोस (तर्क संबंधी आग्रह)
उदाहरण: शोधकर्ता अपनी योग्यता और पिछले कामों का हवाला देते हैं, ताकि वे नए निष्कर्ष प्रस्तुत करने से पहले अपनी विश्वसनीयता साबित कर सकें।	**उदाहरण:** राष्ट्रीय प्रतीकों या ऐतिहासिक घटनाओं का उपयोग करके गर्व और एकता की भावना जागृत करना।	**उदाहरण:** एंटी-टोबैको अभियान में धूम्रपान को रोकने के लिए फेफड़े के कैंसर के आंकड़े दिखाना।

अनुनय को प्रभावित करने वाले कारक

स्रोत: स्रोत की विश्वसनीयता, स्रोत के प्रति निष्ठा, स्रोत के विषय में विशेषज्ञता तथा स्रोत का अधिकार क्षेत्र आदि।
- **उदाहरण के लिए-** एम्स (दिल्ली) के पूर्व निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने कोविड-19 से बचाव के लिए किए जाने वाले उपायों के बारे में बताया था।

संदेश सामग्री: दर्शकों के लिए संदेश की प्रासंगिकता, संदेश की स्पष्टता और अस्पष्टता आदि।
- **उदाहरण के लिए-** स्वच्छता तथा स्वास्थ्य और गरिमापूर्ण जीवन पर इसके प्रभाव के बारे में स्पष्ट और प्रासंगिक संदेशों का प्रसार करके स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई।

लक्षित लोगों की विशेषताएं: दर्शकों की मौजूदा मान्यताएं और जानकारी का स्तर, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि।
- **उदाहरण के लिए-** अलग-अलग जनसांख्यिकी के प्रति समर्पित वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को तैयार करना, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सरल शब्दों में संदेश तैयार करना तथा शहरी पेशेवरों के लिए अधिक परिष्कृत सामग्री तैयार करना।

पारस्परिकता: अनुरोध करने से पहले कुछ मूल्यवान चीज़ की पेशकश करना।
- **उदाहरण के लिए-** 'गिव इट अप' अभियान के बाद पी.एम. उज्ज्वला योजना की शुरुआत करना।

सामाजिक प्रमाण: यह प्रदर्शित करना कि अन्य लोगों ने पहले से ही इस विश्वास या व्यवहार को अपना लिया है।
- **उदाहरण के लिए-** 'आदर्श ग्राम योजना' के तहत कुछ गांवों को आदर्श गांव के रूप में विकसित करना, ताकि उसके आस-पास के गांवों को समान विकास प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जा सके।

समय और संदर्भ: वह माहौल जिसमें संदेश दिया जाता है, वर्तमान मुद्दे, आदि।
- **उदाहरण के लिए-** महामारी के दौरान जब आर्थिक आत्मनिर्भरता को लेकर चिंताएं अधिक थीं तब "वोकल फॉर लोकल अभियान" की शुरुआत की गई।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
DAKSHA MAINS
MENTORING PROGRAM 2026
दिनांक 3 जुलाई
अवधि 5 महीने
हिन्दी/English माध्यम
दक्ष : मुख्य परीक्षा 2026 के लिए मेंटरिंग प्रोग्राम
(मुख्य परीक्षा 2026 के लिए स्ट्रेटेजिक रिवीजन / प्रैक्टिस और आवश्यक सुधार हेतु मेंटरिंग कार्यक्रम)

2.4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता

अर्थ: भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) किसी व्यक्ति की **स्वयं और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है।**

- इस शब्दावली का पहली बार उल्लेख 1990 में शोधकर्ता **जॉन मेयर** और **पीटर सलोवी** ने किया था। हालांकि बाद में **मनोवैज्ञानिक डैनियल गोलमैन** ने इसे अत्यधिक लोकप्रिय बनाया।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का उच्च स्तर **अंतर्वैयक्तिक कौशल को मजबूत करने** में सहायता करता है। यह विशेष रूप से **संघर्ष प्रबंधन और संप्रेषण** से संबंधित मामलों में तथा गैर-संज्ञानात्मक कौशल विकसित करके **व्यक्तित्व का समग्र विकास** करने में भी सहायता करता है।
  - उदाहरण के लिए- **गैर-संज्ञानात्मक कौशल जैसे कि धैर्य, दृढ़ता, शैक्षणिक रुचि और लर्निंग से संबंधित मूल्य आदि।**

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की विशेषताएं (डैनियल गोलमैन का मॉडल)

	मान्यता	विनियमन
व्यक्तिगत क्षमता	**आत्म-जागरूकता** • आत्मविश्वास • अपने सबल और दुर्बल पक्ष को समझना • दूसरों पर अपने व्यवहार के प्रभाव को समझना • दूसरों के व्यवहार का अपनी भावनात्मक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना	**आत्म-प्रबंधन** • भावनात्मक विनियमन: हानिकारक भावनाओं पर नियंत्रण रखना • अपने मूल्यों के अनुरूप कार्य करना • **परिवर्तन के लिए तैयार रहना:** अनुकूलनशीलता • बाधाओं के बावजूद लक्ष्य पर ध्यान देना
सामाजिक क्षमता	**सामाजिक जागरूकता** • सामाजिक परिस्थितियों को समझना • सहानुभूतिपूर्ण झुकाव • सक्रिय होकर सुनना	**सामाजिक प्रबंधन** • टीम प्रबंधन • संघर्ष समाधान • संवेदनशील एवं सहानुभूतिपूर्ण पारस्परिक संबंध एवं संचार

EQ और IQ के मध्य अंतर

भावनात्मक लब्धि (Emotional Quotient: EQ)	बौद्धिक लब्धि (Intelligence Quotient: IQ)
• इसमें पांच डोमेन के जरिए **भावनाओं की पहचान, अनुभव और विनियमन करना** शामिल होता है: **आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, समानुभूति, सामाजिक कौशल और प्रेरणा।** • **उदाहरण के लिए- तनावपूर्ण** स्थितियों में शांत रहना और **वस्तुनिष्ठता के साथ निर्णय लेना।**	• इसमें **तार्किक क्षमता, संज्ञानात्मक क्षमता,** स्मृति, शब्द की समझ, गणनात्मक कौशल, अमूर्त और स्थानिक सोच, **मानसिक क्षमता,** आदि शामिल हैं। • **उदाहरण के लिए-** एकेडेमिक्स में **अच्छे अंक प्राप्त करना।**
• यह **परिवेश और सामाजिक प्रभावों** के अधीन है, इसलिए इसे समय के साथ सक्रिय रूप से प्रशिक्षित एवं विकसित किया जा सकता है।	• इसे **आनुवंशिकी** से प्रभावित एक स्थायी विशेषता माना जाता है।
• इसके लिए कोई **सार्वभौमिक रूप से मानकीकृत परीक्षण नहीं है।** इसके परीक्षण में किसी व्यक्ति के अपने **विशिष्ट व्यवहार** का योग्यता परीक्षण और स्वतः रिपोर्ट किए गए विश्लेषण शामिल हो सकते हैं।	• आयु समूह में औसत प्रदर्शन की तुलना करके **मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों (IQ परीक्षणों)** के जरिए मूल्यांकन किया जाता है।
• आम जन के कल्याण में इसकी एक महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के **मानसिक स्वास्थ्य** और **रिश्तों की गुणवत्ता को बढ़ावा** देता है। **IQ औसत होने के बावजूद व्यक्ति EQ के कारण पारस्परिक सफलता** प्राप्त कर सकता है।	• यह **बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि और रोजगार में बेहतर प्रदर्शन** में योगदान दे सकता है।

© Vision IAS

»»» गवर्नेंस में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व

- **नेतृत्व में प्रभावशीलता:** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लीडर्स अपनी टीमों को बेहतर ढंग से प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए-** न्यूजीलैंड की पूर्व प्रधान मंत्री जैसिंडा अर्डर्न ने संकट के दौरान देश को एकजुट करने में मदद करने के लिए क्राइस्टचर्च मस्जिद गोलीबारी (2019) के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया था।
- **निर्णय लेना:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता से प्रशासकों को नीतियों और निर्णयों के भावनात्मक प्रभाव को समझने में मदद मिलती है। साथ ही, यह हितधारकों के लिए समानुभूति के साथ संतुलित व तर्कसंगत विश्लेषण करने में सहायता भी करती है।
  - **उदाहरण के लिए-** GST के क्रियान्वयन के लिए केंद्र सरकार की ओर से विभिन्न राज्यों, व्यवसायों आदि की भावनाओं तथा चिंताओं को दूर करने के लिए उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता थी।
- **संचार:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता संदेशों को स्पष्ट और प्रेरक ढंग से व्यक्त करने की क्षमता को बढ़ाती है तथा सक्रिय रूप से सुनने से संबंधित कौशल में भी सुधार करती है।
  - **उदाहरण के लिए-** कोविड-19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य दिशा-निर्देशों के बारे में स्पष्ट और सहानुभूतिपूर्ण संचार ने भय और सार्वजनिक चिंता के प्रभावी प्रबंधन में मदद की।
- **विवादों का समाधान:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चलते विभागों, कर्मचारियों या जनता के बीच विवादों को बेहतर तरीके से प्रबंधित करने में मदद मिलती है, जिससे सभी के लिए फायदेमंद समाधान खोजने में आसानी होती है।
  - **उदाहरण के लिए-** नागा शांति समझौते की वार्ता में सरकार और नागा समूहों के बीच जटिल ऐतिहासिक तथा भावनात्मक मुद्दों को सुलझाने के लिए उच्च स्तरीय भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता थी।
- **सार्वजनिक सहभागिता और परिवर्तन-प्रबंधन:** समानुभूतिपूर्ण वार्ता के माध्यम से जनता में विश्वास को बढ़ाना और परिवर्तन के खिलाफ प्रतिरोध को प्रेरित करने वाली अंतर्निहित भावनाओं की पहचान कर उनका प्रबंधन करना।
  - **उदाहरण के लिए-** टी.एन. शेषन (पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त) ने चुनावों की अखंडता में सुधार करने के लिए जमीनी वास्तविकता की समझ के साथ नियमों के सख्त प्रवर्तन को संतुलित करने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल किया था।

सामाजिक बुद्धिमत्ता

» **अर्थ:** यह किसी व्यक्ति की पारस्परिक संबंधों को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता को संदर्भित करती है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता के पहलू

- **सामाजिक जागरूकता:**
  - **आदिम समानुभूति:** शारीरिक हाव-भाव के माध्यम से दूसरों की भावनाओं को समझना।
  - **सामंजस्य:** पूर्ण ग्रहणशीलता के साथ सुनना; व्यक्ति के साथ सामंजस्य बिठाना।
  - **सटीक समानुभूति:** दूसरे व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और इरादों को समझना।
  - **सामाजिक अनुभूति:** यह समझना कि सामाजिक दुनिया कैसे चलती है।
- **सामाजिक सुविधा:**
  - **समन्वयता:** शारीरिक हाव-भाव या अशाब्दिक स्तर पर दूसरों के साथ आसानी से वार्ता करना।
  - **आत्म-प्रस्तुति:** स्वयं को अच्छी तरह से प्रस्तुत करना।
  - **प्रभाव:** सामाजिक अंतःक्रिया के निष्कर्षों को आकार देना।
  - **चिंता:** दूसरों की जरूरतों का ख्याल रखना और उसके अनुसार कार्य करना।

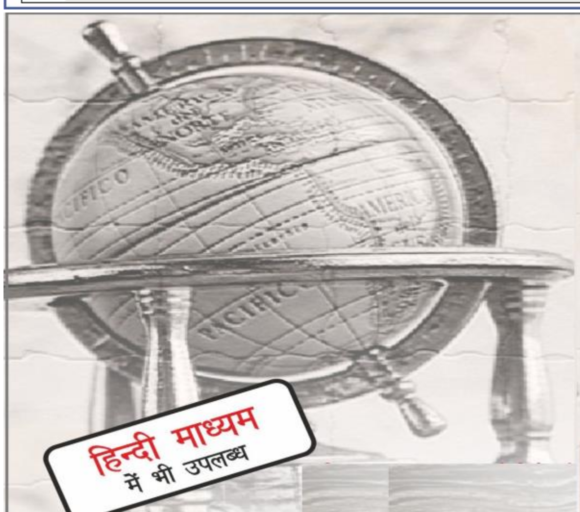

PHILOSOPHY/ दर्शनशास्त्र
by
ANOOP KUMAR SINGH

Classroom Features:
- ☑ Comprehensive, Intensive & Interactive Classroom Program
- ☑ Step by Step guidance to aspirants for understanding the concepts
- ☑ Develop Analytical, Logical & Rational Approach
- ☑ Effective Answer Writing
- ☑ Printed Notes
- ☑ Revision Classes
- ☑ All India Test Series Included

Offline Classes @
JAIPUR | PUNE | AHMEDABAD

3. शासन और प्रशासन में नैतिकता (Ethics in Governance and Administration)

3.1. लोक प्राधिकारियों के हितों का टकराव (Conflict of Interests of Public Officials)

परिचय

हाल ही में, एक अमेरिकी फर्म ने सेबी के अध्यक्ष पर सेबी की आचार संहिता का उल्लंघन करने का आरोप लगाया, जिससे हितों के संभावित टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई। यह स्थिति उच्च पदों पर आसीन सिविल सेवकों या व्यक्तियों के **निजी हितों और सार्वजनिक कर्तव्यों के बीच संभावित हितों के टकराव** का एक नया परिदृश्य प्रस्तुत करती है।

हितों का टकराव क्या है?

- **परिभाषा:** OECD के दिशा-निर्देशों के अनुसार, 'हितों के टकराव' में एक लोक प्राधिकारी के **सार्वजनिक कर्तव्य** और **निजी हितों** के बीच टकराव होता है। इस स्थिति में लोक प्राधिकारी के निजी हित उसके आधिकारिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के निष्पादन को अनुचित रूप से प्रभावित कर सकते हैं।
- **हितों के टकराव के प्रकार:**
  - **वास्तविक टकराव: उदाहरण के लिए-** एक लोक प्राधिकारी द्वारा अपने परिवार के सदस्य के स्वामित्व वाली कंपनी को एक आकर्षक अनुबंध प्रदान किया जाना।
  - **संभावित टकराव: उदाहरण के लिए-** किसी कंपनी के उत्पादों से संबंधित अध्ययन के लिए एक अकादमिक शोधकर्ता द्वारा उस कंपनी से धन प्राप्त किया जाना।
  - **अनुमानित टकराव: उदाहरण के लिए-** एक निर्वाचित अधिकारी का किसी लॉबिस्ट द्वारा आयोजित निजी कार्यक्रम में भाग लेना, भले ही उसने किसी तरह की प्रत्यक्ष सहायता का अनुरोध न किया हो।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
लोक प्राधिकारी	पेशेवर सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और तटस्थता बनाए रखना, कोड ऑफ एथिक्स और आचार संहिता आदि का पालन करना।
सरकार	नैतिक मानकों को लागू करना, कुशल और प्रभावी सार्वजनिक सेवा वितरण, शासन, में लोगों का भरोसा और विश्वास बनाए रखना आदि।
नागरिक	सार्वजनिक सेवाओं तक निष्पक्ष पहुंच, सार्वजनिक धन का प्रभावी उपयोग, पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन और शासन इत्यादि।
व्यवसाय	सरकारी कॉन्ट्रैक्ट में उचित और निष्पक्ष अवसर, अनुकूल कारोबारी माहौल, विनियामकीय उदारता आदि।
विनियामक निकाय	विनियामकीय प्रक्रियाओं में सत्यनिष्ठा बनाए रखना, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करना और लोक हित की रक्षा करना आदि।

हितों के टकराव में शामिल नैतिक मुद्दे

- **सार्वजनिक विश्वास का कमजोर होना:** जनता के विश्वास की इस क्षति के परिणामस्वरूप **सरकारी निर्णयों और संस्थानों की वैधता भी कम** हो सकती है।
- **भ्रष्टाचार और सत्ता का दुरुपयोग:** इसके चलते **रिश्वतखोरी, पक्षपात और भाई-भतीजावाद जैसी भ्रष्ट प्रथाओं को बढ़ावा मिल सकता है**। उदाहरण के लिए- **आदर्श हाउसिंग सोसायटी घोटाला।**

© Vision IAS

- **तटस्थता और निष्पक्षता:** हितों के टकराव की स्थिति में लोक प्राधिकारियों द्वारा पक्षपातपूर्ण और गलत निर्णय लिया जा सकता है।
- **ब्रांड पहचान पर प्रतिकूल प्रभाव:** संभावित घोटालों, नकारात्मक मीडिया कवरेज आदि के कारण व्यवसायों की ब्रांड इमेज और प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

भारत में हितों के टकराव को रोकने के लिए कानूनी फ्रेमवर्क

लोक सेवकों के लिए

- **केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियमावली, 1964:**
    - इसके अनुसार, **सिविल सेवकों को अपने सार्वजनिक कर्तव्यों से संबंधित किसी भी निजी हित की घोषणा करनी चाहिए** और सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए किसी भी संघर्ष को हल करने के लिए कदम उठाने चाहिए;
    - सिविल सेवक को **अपने पद का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए** और अपने **परिवार या अपने मित्रों को वित्तीय या भौतिक लाभ प्रदान करने के लिए निर्णय नहीं** लेना चाहिए।
- **केंद्रीय सतर्कता आयोग** ने हितों के टकराव को रेखांकित करने वाली विभिन्न खरीदों, बोली और अन्य प्रक्रियाओं के लिए **दिशा-निर्देश जारी** किए हैं।
- **बोर्ड के सदस्यों के लिए हितों के टकराव पर सेबी की संहिता:** एक सदस्य को सभी आवश्यक कदम उठाने होंगे ताकि यह सुनिश्चित हो किया जा सके कि उसके अधीन किसी भी हित के टकराव से बोर्ड के किसी भी निर्णय पर प्रभाव नहीं पड़ेगा।

व्यवसायों के लिए

- **कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 166:** किसी कंपनी का निदेशक ऐसी स्थिति में शामिल नहीं होगा जिसमें उसका कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हित हो जो कंपनी के हित से टकराता हो, या संभवतः टकरा सकता हो।
- **सेबी** ने स्टॉक एक्सचेंज्स, मध्यवर्तियों जैसी विभिन्न संस्थाओं के हितों के टकराव से निपटने के लिए **दिशा-निर्देश** जारी किए हैं।

हितों के टकराव का प्रभावी समाधान सुनिश्चित करने के लिए आगे की राह

- **प्रासंगिक हितों के टकराव की पहचान:** हितों के टकराव की स्थितियों की पहचान, प्रबंधन और समाधान करने के लिए प्रक्रियाएं स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके लिए प्रभावी, पूर्ण और शीघ्र प्रकटीकरण की प्रक्रिया को अपनाया जा सकता है।
- **हितों के टकराव की नीति का व्यापक प्रकाशन और समझ सुनिश्चित करना:** उदाहरण के लिए- हितों के टकराव की नीति का प्रकाशन किया जाना चाहिए तथा इस बारे में नियमित रूप से रिमाइंडर जारी किया जाना चाहिए।
- **हितों के संभावित टकराव की स्थितियों के लिए 'जोखिम वाले' क्षेत्रों की समय-समय पर समीक्षा करना:** उदाहरण के लिए- आंतरिक जानकारी, उपहार और अन्य प्रकार के लाभ, बाहरी नियुक्तियां, सरकारी नौकरी छोड़ने के बाद की गतिविधि, आदि।
- **लोक सेवकों को रिवॉल्विंग डोर से रोकने के लिए कूलिंग ऑफ अवधि की शुरुआत:** कूलिंग ऑफ अवधि वह न्यूनतम समय अवधि है, जिसमें सेवानिवृत लोक अधिकारी को निजी क्षेत्रक में रोजगार स्वीकार करने से प्रतिबंधित किया जाता है।
    - रिवॉल्विंग डोर व्यक्तियों के सरकारी से निजी क्षेत्रक और निजी क्षेत्रक से सरकार की ओर स्थानांतरण को दर्शाता है।
- **स्वतंत्र निगरानी निकायों का गठन: उदाहरण के लिए-** अमेरिका के कई राज्यों में लोक प्राधिकारियों के आचरण के मानकों के संरक्षक के रूप में नैतिकता आयोग का गठन किया गया है।

निष्कर्ष

हितों के टकराव की समस्या का समाधान करना केवल कानूनी अनुपालन का मामला नहीं है, बल्कि नैतिक शासन का एक बुनियादी पहलू भी है। लोक प्राधिकारी विश्वास के पद पर आसीन होते हैं। इस विश्वास को बनाए रखने के लिए हितों के टकराव को रोकने, उसकी पहचान करने और उसे प्रबंधित करने हेतु मजबूत तंत्र की जरूरत है। पारदर्शिता, जवाबदेही और अखंडता की संस्कृति को बढ़ावा देकर, सरकारें यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि निर्णय नागरिकों के सर्वोत्तम हित में लिए जाएं, ताकि सार्वजनिक संस्थानों की वैधता बनी रहे और लोकतांत्रिक सिद्धांतों को मजबूत किया जा सके।

"मानव के हितों के टकराव के चलते ही न्याय की आवश्यकता उत्पन्न होती है। इसका मतलब है कि, यदि मानव के बीच हितों का टकराव न होता, तो हमें कभी न्याय शब्दावली का आविष्कार नहीं करना पड़ता, न ही उस विचार की कल्पना करनी पड़ती जिस पर यह आधारित है।"

-थॉमस निक्सन कार्वर

3.2. व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता (Ethics of Whistleblowing)

प्रस्तावना

हाल ही में, जूलियन असांजे को विकीलीक्स जासूसी मामले में अमेरिकी न्यायालय ने बरी कर दिया है। विकीलीक्स इंटरनेट पर **व्हिसलब्लोअर प्लेटफ़ॉर्म** के रूप में कार्य करता है। एडवर्ड स्नोडेन से लेकर सत्येंद्र दुबे तक, कई व्हिसलब्लोअर्स ने अपने विवेक के अनुसार काम किया, लेकिन क्या उनके कार्य हमेशा नैतिक रहे हैं?

व्हिसलब्लोइंग क्या है?

- **परिभाषा:** किसी कंपनी या सरकार में व्याप्त धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार आदि के रूप में किसी भी गलत कृत्य की **जानकारी को जनता या किसी उच्च अधिकारी के समक्ष प्रकट करना व्हिसलब्लोइंग कहलाता** है।
    - व्हिसलब्लोअर वह व्यक्ति होता है जो ऐसे गलत या अनैतिक कार्य की रिपोर्ट/खुलासा करता है। उदाहरण के लिए, स्वर्गीय शणमुगम मंजूनाथ और अन्य।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
व्हिसलब्लोअर	गलत काम या कदाचार को उजागर करना और प्रतिशोध से खुद को बचाना।
नागरिक/ समाज	सरकारी गतिविधियों के बारे में जानकारी तक पहुँच।
सरकार	राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताओं को पारदर्शिता के साथ संतुलित करना।
संगठन	अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करना, यदि संभव हो तो रिपोर्ट की गई समस्याओं का आंतरिक रूप से समाधान करना, आदि।
विनियामक निकाय	कानूनों और विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना।
मीडिया हित	प्रसारण किए जाने योग्य आरोपों पर रिपोर्टिंग करना और स्रोतों की रक्षा करना।
पक्ष लेने वाले समूह/ NGO हित	पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना तथा व्हिसलब्लोअर्स का समर्थन करना।

व्हिसलब्लोइंग में शामिल नैतिक दुविधाएँ

- **व्हिसलब्लोअर की सुरक्षा बनाम राष्ट्रीय सुरक्षा:** गलत कृत्यों को उजागर करने वाले व्यक्तियों की सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष खतरों पर विचार करते हुए सरकार की ज़िम्मेदारी सुनिश्चित करने में एक संतुलन स्थापित करना जरूरी है।
- **मीडिया की ज़िम्मेदारी बनाम नैतिक सूचना प्रबंधन:** मीडिया का नैतिक कर्तव्य है कि **वह लोगों को सरकार की कार्रवाई के बारे में बताए,** जबकि ख़तरनाक या संवेदनशील जानकारी को ज़िम्मेदाराना तरीके से संरक्षित रखे।
- **जनता का सूचना का अधिकार बनाम गोपनीयता बनाए रखने की सरकार की जिम्मेदारी:** सरकार की कार्रवाइयों के बारे में जानने के नागरिकों के अधिकार और कुछ मामलों में गोपनीयता बनाए रखने की सरकार की जिम्मेदारी के बीच संतुलन होना चाहिए।
- **निष्ठा दर्शाने का कर्तव्य बनाम नैतिक दायित्व:** नियोक्ता के प्रति कर्मचारी के कर्तव्य और गलत कृत्यों की रिपोर्ट करने के उनके नैतिक दायित्व के बीच टकराव हो सकता है।
- **सुरक्षा बनाम जवाबदेही:** व्हिसलब्लोअर को प्रतिशोध से बचाने और झूठी या दुर्भावनापूर्ण रिपोर्टिंग के लिए जवाबदेही सुनिश्चित करने में नैतिक रूप से विचार किया जाए।

भारत में व्हिसलब्लोअर्स की सुरक्षा के लिए कानून

- **व्हिसलब्लोअर्स सुरक्षा अधिनियम, 2014:** यह भारत में व्हिसलब्लोअर्स की सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया प्राथमिक कानून है। यह सार्वजनिक हित में सूचनाओं का खुलासे करने वाले व्यक्तियों को उत्पीड़न से बचाता है।

© Vision IAS

- **कंपनी अधिनियम, 2013 (धारा 177):** इसमें सूचीबद्ध कंपनियों को निदेशकों और कर्मचारियों द्वारा वास्तविक चिंताओं की रिपोर्ट करने के लिए सतर्कता तंत्र स्थापित करने का प्रावधान किया गया है।
- **सेबी (भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड) विनियमन, 2015:** सेबी ने सूचीबद्ध कंपनियों को व्हिसलब्लोअर नीतियां तैयार करने का निर्देश दिया है।
- **भारत में बीमा कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट गवर्नेंस हेतु दिशा-निर्देश:** IRDAI द्वारा जारी दिशा-निर्देशों में इसकी विनियमित कंपनियों को **'व्हिसल ब्लोअर पॉलिसी'** स्थापित करने की सलाह दी गई है।
- **निजी क्षेत्रक और विदेशी बैंकों के लिए संरक्षित प्रकटीकरण योजना:** यह RBI की एक योजना है, जिसके तहत बैंकों को व्हिसलब्लोअर नीति/ सतर्कता तंत्र बनाना अनिवार्य होता है।

सरकारी गुप्त सूचनाओं की सुरक्षा के लिए भारतीय कानून/ नियम

- **आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923:** यह जासूसी, राजद्रोह और राष्ट्र की अखंडता के लिए अन्य संभावित खतरों से निपटने हेतु फ्रेमवर्क प्रदान करता है।
- **केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम, 1964 का नियम 11:** यह सरकारी कर्मचारियों द्वारा आधिकारिक सूचना के संचार से संबंधित है।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 8(1):** यह ऐसी सूचना के प्रकटीकरण से छूट देता है जो भारत की संप्रभुता और अखंडता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगी।

आगे की राह

- **मौजूदा कानूनों को मजबूत बनाना और उन्हें लागू करना:** व्हिसलब्लोअर्स सुरक्षा अधिनियम, 2014 को प्रभावी ढंग से मजबूत बनाकर लागू करना चाहिए तथा मजबूत प्रवर्तन तंत्र सुनिश्चित करना चाहिए।
- **निजी क्षेत्रक को संरक्षण प्रदान करना:** सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रकों को कवर करने वाले व्यापक कानून विकसित करना चाहिए और व्हिसलब्लोअर्स की सुरक्षा के लिए **कॉर्पोरेट नीतियों को प्रोत्साहित करना** चाहिए।
- **मीडिया का संरक्षण**: व्हिसलब्लोअर्स के साथ काम करने वाले पत्रकारों की सुरक्षा के लिए कानूनों को मजबूत बनाना चाहिए और व्हिसलब्लोअर्स से संबंधित मामलों पर रिपोर्टिंग में प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करनी चाहिए।
- **सूचना और गोपनीयता तक पहुँच को संतुलित करना:** राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में गोपनीयता बनाए रखते हुए जनता के लिए बाधारहित तरीके से सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए व्हिसलब्लोइंग आवश्यक है, लेकिन गोपनीयता और राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर नैतिक दुविधाएँ भी शामिल हैं। कानूनी सुरक्षा को मज़बूत करना तथा लोक हित और सरकार की गोपनीयता के बीच संतुलन बनाना बहुत जरूरी है। एक मजबूत कानूनी फ्रेमवर्क व्हिसलब्लोअर को सशक्त बनाएगा और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में सहायक होगा।

> "ह्यूमैनिटीज हमें आलोचना और असहमति के महत्व की शिक्षा देती है, जो व्यवसाय के लिए भी महत्वपूर्ण है। जब कोई संगठन केवल साथ देने और सहमत होने की संस्कृति को बढ़ावा देता है तथा व्हिसलब्लोवर्स को हतोत्साहित करता है, तो बुरे परिणाम होते हैं और व्यवसाय तबाह हो सकते हैं।"
>
> **-मार्था सी. नुसबौम**

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
UPSC के लिए करेंट अफेयर्स की समग्र तैयारी हेतु एकमात्र समाधान
Digital Current Affairs 2.0
मुख्य विशेषताएं:
विजन इंटेलिजेंस
डेली प्रैक्टिस
डेली न्यूज समरी
स्टूडेंट डैशबोर्ड
क्विक नोट्स और हाइलाइट्स
संधान तक पहुंच की सुविधा

3.3. सार्वजनिक अवसंरचना और सार्वजनिक सेवा वितरण (Public Infrastructure and Public Service Delivery)

परिचय

हाल ही में, बिहार में **15 से अधिक पुलों के ढहने की घटना** देखी गई। इसके बाद लगभग 15 इंजीनियरों को काम में लापरवाही बरतने और अप्रभावी निगरानी के लिए निलंबित कर दिया गया है। गुजरात में 2022 में **मोरबी पुल का ढहना**; दिल्ली, राजकोट और जबलपुर में **हवाई अड्डे की छत का गिरना** और कंचनजंगा एक्सप्रेस की कंटेनर मालगाड़ी से हुई टक्कर जैसी **सार्वजनिक अवसंरचना की विफलता** की पिछली घटनाओं में जान-माल का काफी नुकसान हुआ है। ये घटनाएं **सार्वजनिक अवसंरचना की खराब गुणवत्ता** और बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण सुनिश्चित करने में सरकार की **विफलता को उजागर** करती हैं।

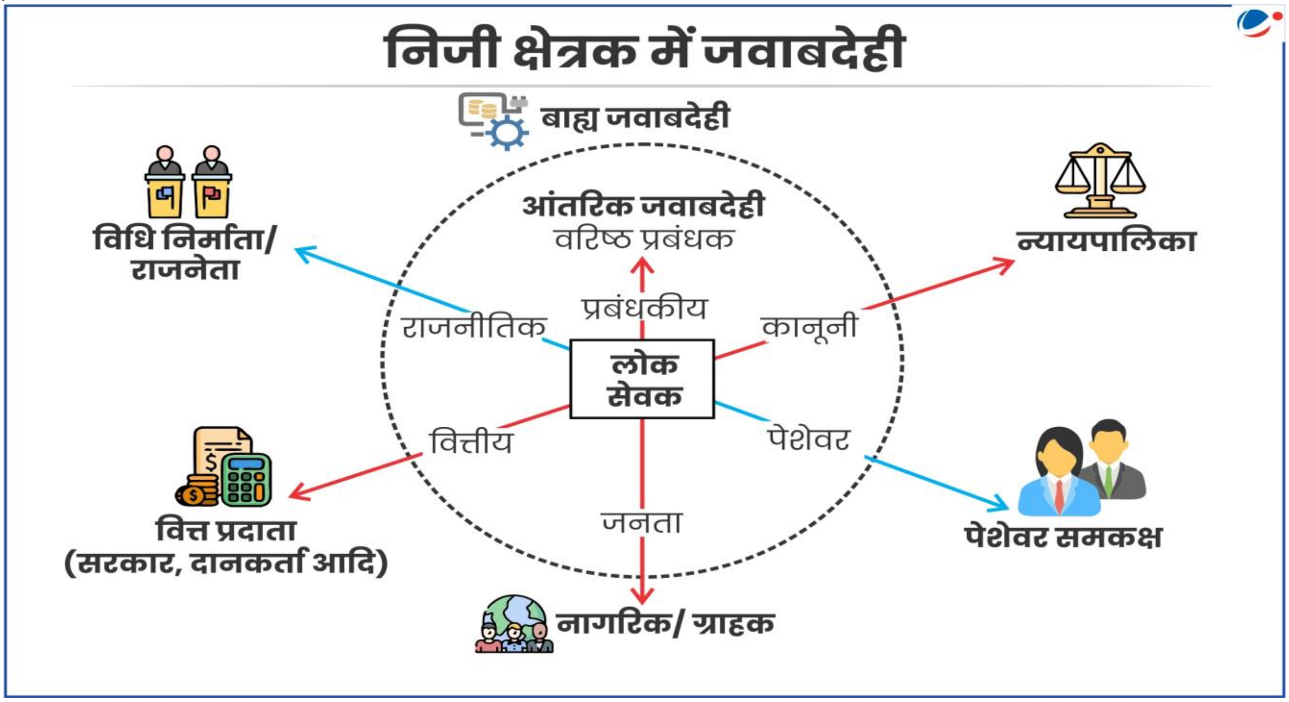

सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के अनुसार, **नागरिकों को विभिन्न सार्वजनिक सेवाएं उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी** सरकार की होती है।

अवसंरचना के विकास के शासन में मौजूद नैतिक मुद्दे

- **अक्षम प्रशासनिक मशीनरी:** यह विकास योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा के रूप में कार्य करता है। उदाहरण के लिए- जिम्मेदारी पूरा करने में लापरवाही बरतना।
- **नीतिगत मुद्दे:** सेवा वितरण की **गुणवत्ता** की उपेक्षा की जाती है। उदाहरण के लिए- **L1 अनुबंध विधि (सबसे कम बोली लगाने वाला जीतता है):** इसके तहत गुणवत्ता और सुरक्षा के बजाए **लागत को कम बनाए रखने को प्राथमिकता** दी जाती है।
- **सत्यनिष्ठा की कमी:** सरकारी कर्मचारी गुणवत्तापूर्ण सेवा वितरण सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी से खुद को अलग कर लेते हैं।
  - उदाहरण के लिए- यमुना बैराज के गेटों के जाम हो जाने के कारण दिल्ली में बाढ़ आई। ऐसा माना जाता है कि यह **कई प्राधिकरणों के शामिल होने** के कारण **रख-रखाव की कमी** और निश्चित **जवाबदेही की कमी** के कारण हुआ।
- **अन्य: उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की प्रेरणा की कमी जैसे मनोवृत्ति से जुड़े मुद्दे।**

सार्वजनिक सेवा वितरण में शामिल नैतिकता संबंधी मुद्दे

- **व्यावसायिक नैतिकता की कमी: सरकारी कर्मचारियों में अक्सर प्रभावी सेवा वितरण सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधकीय कौशल की कमी होती है।**
- **'सार्वजनिक सेवा' के प्रति निष्ठा की कमी:** सरकारी कर्मचारी अपने सार्वजनिक **कर्तव्य** और जिम्मेदारी से ज़्यादा **निजी लाभ को प्राथमिकता** देते हैं।
- **भ्रष्टाचार:** उदाहरण के लिए- PDS वितरण में **लीकेज**, योजनाओं में **समावेशन और बहिष्करण संबंधी त्रुटियां।**

 © Vision IAS

- **जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी:** गंभीर त्रुटियों के प्रति **न्यायोचित और निष्पक्ष कार्यवाही** की कमी **भ्रष्ट आचरण के निवारण** को कमजोर करती है।

नागरिकों को केंद्र में रखने के लिए ARC (द्वितीय प्रशासनिक सुधार समिति) का सात चरणीय मॉडल

- प्रदान की जाने वाली सेवाओं को **परिभाषित करना** और उनके संभावित लाभार्थियों की पहचान करना।
- प्रत्येक सेवा के लिए **मानक** और मानदंड का निर्धारण करना।
- निर्धारित मानकों को पूरा करने की **क्षमता** विकसित करना।
- मानकों का **अनुपालन** सुनिश्चित करने का प्रयास करना।
- निर्धारित मानकों के प्रतिकूल **कार्यों की निगरानी करना।**
- स्वतंत्र निगरानी तंत्र के जरिए **प्रभावों का मूल्यांकन करना।**
- परिणामों की निगरानी और मूल्यांकन के आधार पर **निरंतर सुधार करना।**

सार्वजनिक सेवा वितरण में समस्याएं क्यों बनी हुई हैं?

- विभिन्न सेवा सुधार प्रणालियों के **प्रभावी कार्यान्वयन का अभाव** है, जिसमें सिविल सेवकों के लिए नियम और विनियमन भी शामिल हैं।
- **प्रशासन में कठोरता:** प्रशासन में सुधारों और परिवर्तन के विरुद्ध अवरोध उत्पन्न किया जाता है।
- **राजनीतिक बाधाएं:** सार्वजनिक हित की तुलना में राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देने से न्यायसंगत सार्वजनिक सेवा वितरण में बाधा उत्पन्न होती है।
- **जमीनी स्तर की नौकरशाही में नैतिकता सुनिश्चित करने के लिए सुधारों की उपेक्षा:** सुधार और परिवर्तन संबंधी अधिकांश प्रयासों के तहत प्रायः नौकरशाही के उच्च स्तर पर प्रशासनिक सुधारों पर फोकस किया जाता है।

"**किसी देश के लोक प्रशासन की गुणवत्ता** काफी हद तक वहां के **प्रशासकों की ईमानदारी और सत्यनिष्ठा** पर निर्भर करती है।" - **द स्टैण्डडर्स एंड टेक्नीक्स ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन**, संयुक्त राष्ट्र द्वारा **1951** प्रकाशित

आगे की राह

- **प्रशासनिक सुधार:** इसके तहत **नागरिक चार्टर,** एक **उत्तरदायी शिकायत निवारण तंत्र** की स्थापना और प्रत्येक लोक सेवक की जवाबदेही तय करने जैसे उपाय किए जा सकते हैं।
    - **सेवा का अधिकार आयोग:** महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, पंजाब आदि राज्यों द्वारा गठित।
    - 20 से अधिक राज्यों ने **लोक सेवा अधिकार कानून** पारित किया है, उदाहरणार्थ- हरियाणा सेवा का अधिकार अधिनियम, 2014
- **न्यू पब्लिक मैनेजमेंट (NPM):** इसके तहत **निजी क्षेत्रक** की **कुशल प्रथाओं** को सार्वजनिक क्षेत्रक में लागू किया जाता है।
- **मानव पूंजी का विकास:** सक्षम लोक सेवकों की भर्ती और प्रशिक्षण तथा **सार्वजनिक सेवाओं के लिए नैतिक मूल्यों का विकास करना,** जैसे- **मिशन कर्मयोगी।**
- **ई-गवर्नेंस:** उदाहरण के लिए- उदाहरण के लिए- यूनिफाइड मोबाइल एप्लीकेशन फॉर न्यू-एज गवर्नेंस (उमंगUMANG)
- **परियोजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी:** कई स्तरों पर नियमित ऑडिट करना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए- '**सक्रिय शासन और समयबद्ध कार्यान्वयन**[1]' के लिए ICT-आधारित, बहु-मॉडल प्लेटफ़ॉर्म।

[1] Pro-Active Governance and Timely Implementation: PRAGATI

नवीन सार्वजनिक प्रबंधन (New Public Management: NPM) की प्रमुख विशेषताएं

- परिचालन संबंधी प्रबंधन से रणनीतिक नीतियों को **अलग रखना।**
- कार्यविधियों और प्रक्रियाओं पर ध्यान देने के साथ-साथ **परिणाम-उन्मुखता** को अपनाना।
- संगठनों या नौकरशाहों के हितों पर ध्यान देने की बजाय **नागरिक-केंद्रित उन्मुखता पर फोकस करना।**
- सेवा वितरण और रणनीतिक निर्णय लेने में **निजी एवं स्वैच्छिक क्षेत्रकों** की भागीदारी में वृद्धि करना, उदाहरण के लिए- **कांट्रेक्टिंग-आउट और PPP.**
- **उद्यमी प्रबंधन संस्कृति को अपनाना,** उदाहरण के लिए- सकल गुणवत्ता प्रबंधन (TQM), IS 15700:2005.

निष्कर्ष

तेजी से बदलती दुनिया में, विशेष रूप से सेवा वितरण के मामले में **सरकार की भूमिका बढ़ गई है।** शासन की संरचना को **एकीकृत नौकरशाही पदानुक्रम** के स्थान पर एक ऐसी **बहु-स्तरीय संस्था** के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है, जो नागरिक समाज के रूप में व्याप्त हो और **सरकार तथा नागरिकों के बीच के अंतराल को कम-से-कम कर सके।**

3.4. सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी (Frauds in Civil Services Examination)

प्रस्तावना

हाल ही में, कुछ सिविल सेवकों पर प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं में प्रवेश करने के लिए जाली प्रमाण-पत्र बनाने के आरोप लगे हैं। साथ ही, ऐसे मामले भी सामने आए हैं जहाँ सिविल सेवा में शामिल होने के इच्छुक अभ्यर्थियों ने परीक्षा में धोखाधड़ी करने के लिए ChatGPT का उपयोग किया है। ऐसे मुद्दे सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी और बेईमानी के बढ़ते मामलों की ओर संकेत करते हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	भूमिका/ हित
भर्ती एजेंसियां (जैसे- UPSC)	निष्पक्ष और खुली प्रतिस्पर्धा, जनता के बीच विश्वास की कमी, संवैधानिक दायित्व।
आम जनता	चयन प्रक्रिया की विश्वसनीयता और पारदर्शिता, योग्यता पर विश्वास आदि।
सरकार	लगातार बढ़ती बेईमानी के कारण सार्वजनिक सेवाओं में जनता का भरोसा कम हो गया है। यह राष्ट्र और समाज के व्यापक विकास के लिए हानिकारक है।
सिविल सेवक बनने के इच्छुक अभ्यर्थी	• सिविल सेवक बनने के इच्छुक अभ्यर्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे परीक्षा प्रक्रिया में शामिल होने के दौरान सिविल सेवा के मानकों को बनाए रखेंगे। • इन मूल्यों को अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम, 1968 और **पी.सी. होता समिति** द्वारा संहिताबद्ध किया गया है।

इसमें शामिल नैतिक मुद्दे

- **सामाजिक न्याय के लिए हानिकारक:** जाली प्रमाणपत्रों के उपयोग से सकारात्मक कार्यों की वैधता और निष्पक्षता पर सवाल उठ सकते हैं। इससे सामाजिक न्याय के उद्देश्य को ठेस पहुँच सकती है।
- **प्रशासनिक निहितार्थ:** सिविल सेवाओं में अनैतिक अभ्यर्थियों के प्रवेश से भ्रष्टाचार और बेईमानी, अकुशल नौकरशाही, सत्ता का दुरुपयोग और आचरण संबंधी नियमों का पालन न करने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है।

 © Vision IAS

* **उपयोगितावाद (Utilitarianism) का उल्लंघन: धोखाधड़ी/ सत्ता का दुरुपयोग** बड़े पैमाने पर समाज के लिए हानिकारक है, इसलिए ऐसा करना अनैतिक है।
* **चरित्र के बिना ज्ञान:** धोखाधड़ी और सत्ता का दुरुपयोग **सात सामाजिक पापों** में से एक **(यानी चरित्र के बिना ज्ञान)** है।
* **अन्य: कांट के निरपवाद कर्तव्यादेश (Categorical Imperative) और कर्तव्यशास्त्र के विरुद्ध।**

सिविल सेवक बनने के इच्छुक अभ्यर्थियों को नैतिक आचरण की ओर प्रेरित करने के लिए किए गए उपाय

* **नीति-शास्त्र प्रश्न पत्र की शुरूआत:** नीति-शास्त्र प्रश्न पत्र को 2013 में सिविल सेवा परीक्षा में एक फ़िल्टर के रूप में पेश किया गया था। यह प्रश्न पत्र उम्मीदवारों की नैतिक क्षमता का मूल्यांकन करता है।
* **लोक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024:** इसका उद्देश्य लोक परीक्षाओं में अनुचित साधनों के उपयोग को रोकते हुए UPSC, SSC जैसी लोक परीक्षाओं में अधिक पारदर्शिता, निष्पक्षता और विश्वसनीयता लाना है।
* **धोखाधड़ी को रोकने के लिए UPSC द्वारा डिजिटल तकनीकों का उपयोग:**
    * UPSC **आधार-आधारित फिंगरप्रिंट प्रमाणीकरण, फेशियल रिकॉग्निशन** का उपयोग करने की योजना बना रही है।
    * **गलत पहचान की आशंका वाले मामलों की जाँच** के लिए AI का उपयोग करके CCTV निगरानी की जा सकती है।

आगे की राह

* भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए, शिक्षण की शुरुआत से ही **छात्रों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सत्यवादिता और आत्म-सम्मान जैसे मूल्यों** को विकसित किया जाना चाहिए।
* **परीक्षा की प्रक्रिया में सुधार:**
    * अभ्यर्थियों के चयन के बाद उनके **सत्यापन की प्रक्रियाएँ कठोर** होनी चाहिए।
    * परीक्षा में कदाचार को रोकने, योग्यता और निष्पक्षता को बढ़ावा देने के लिए नैतिकता पर आधारित कठोर उपाय अपनाए जाने चाहिए।
    * होता समिति के अनुसार, सिविल सेवक प्रतिनियुक्ति के दौरान **सत्ता के दुरुपयोग को रोकने** के लिए चयन हेतु **योग्यता और नेतृत्व परीक्षण** शुरू किए जा सकते हैं।
    * **तकनीक आधारित समाधान:** अवैध उद्देश्यों के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग की प्रगति को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने के लिए नई रणनीतियों पर विचार करने और उन्हें नियोजित करने की आवश्यकता है।
* **अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करना:** ऑस्ट्रेलियाई लोक सेवा अधिनियम लोक सेवा मूल्यों का एक सेट निर्धारित करता है। ऑस्ट्रेलिया के लोक सेवा आयुक्त को अधिकृत किया गया है, ताकि वे मूल्यों के समावेश और पालन का मूल्यांकन कर सकें।

निष्कर्ष

सिविल सेवा परीक्षा की सत्यनिष्ठा बनाए रखना एक निष्पक्ष और कुशल नौकरशाही के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। नैतिक शिक्षा को मजबूत करना, सशक्त तकनीकी सुरक्षा उपाय अपनाना, और नियमों को निरंतर अपडेट करना जरूरी है ताकि योग्यता पर आधारित प्रणाली और लोगों के विश्वास को बनाए रखा जा सके।

> मैं धोखे से जीतने की अपेक्षा, सम्मान के साथ हारना पसंद करूंगा।
>
> **-सोफोक्लीज़**

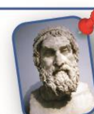

3.5. भ्रष्टाचार (Corruption)

परिचय

हाल ही में, केंद्रीय सतर्कता आयोग ने अपनी 60वीं वार्षिक रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट के अनुसार, 2023 में सभी श्रेणियों के अधिकारियों/ कर्मचारियों के खिलाफ **भ्रष्टाचार की 74,203 शिकायतें** प्राप्त हुईं। इनमें से 66,373 का निपटारा कर दिया गया, जबकि 7,830 मामले अभी लंबित हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
लोक प्राधिकारी	• सरकारी अधिकारी व्यवस्था को भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए प्रयास करते हैं, हालांकि, कुछ अधिकारी निजी लाभ के लिए शक्ति का दुरुपयोग करते हैं।
नागरिक	• सार्वजनिक सेवाओं तक निर्बाध पहुंच।
नागरिक समाज	• भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना। • सुशासन और पारदर्शिता की मांग करना।
न्यायपालिका	• कानून को कायम रखना और न्याय सुनिश्चित करना। • न्यायिक सत्यनिष्ठा को बनाए रखना।
मीडिया	• भ्रष्टाचार को उजागर करना और सत्ता को जवाबदेह बनाना।

भ्रष्टाचार

- **परिभाषा:** भ्रष्टाचार को आमतौर पर **"व्यक्तिगत लाभ के लिए सार्वजनिक पद के दुरुपयोग"** के रूप में परिभाषित किया जाता है।
  - इसकी विस्तृत परिभाषा में किसी व्यक्ति द्वारा राजनीतिक पद, निगम में प्रभावशाली भूमिका, निजी संपत्ति या महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुंच, या उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण प्राप्त शक्ति और प्रभाव का दुरुपयोग करना भी शामिल है।
- **भ्रष्टाचार से प्राप्त लाभ:** भ्रष्टाचार से प्राप्त लाभ में वित्तीय (रिश्वत) और गैर-वित्तीय (संरक्षण, भाई-भतीजावाद, गबन, शक्ति में वृद्धि आदि) दोनों शामिल हैं।

नैतिक प्रणाली और भ्रष्टाचार

नैतिक प्रणाली	भ्रष्टाचार पर दृष्टिकोण
डीओन्टोलॉजी या कर्तव्य शास्त्र	▸ यह नैतिक प्रणाली कांट के नैतिक दर्शन पर आधारित है। इसके तहत भ्रष्टाचार को अनैतिक अथवा नैतिक रूप से बुरा कार्य माना जाता है।
उपयोगितावाद	▸ भ्रष्टाचार का समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह सामूहिक भलाई को खतरे में डालता है और बहुत बड़ी संख्या में लोगों को पीड़ा पहुंचाता है।
कॉन्ट्रैक्टेरियनिज्म या अनुबंधवाद	▸ भ्रष्टाचार किसी भी तरह से सामाजिक सामंजस्य या लोगों को एक साथ लाने वाले सामाजिक अनुबंध को बढ़ावा नहीं देता है।

भ्रष्टाचार के नैतिक निहितार्थ

- **असमानता:** यह उन लोगों को विशेष लाभ पहुंचाता है जो रिश्वत देने या एहसान करने में सक्षम होते हैं। इससे न्याय के नैतिक सिद्धांत का उल्लंघन होता है, जो सभी के साथ समान और निष्पक्ष व्यवहार की अपेक्षा करता है।
- **विश्वास का उल्लंघन:** लोक पदधारियों का यह नैतिक कर्तव्य है कि वे **नागरिकों के हित में कार्य करें**। इससे **सार्वजनिक संस्थानों में लोगों के विश्वास को बढ़ावा** मिलता है।
- **हितों का टकराव:** भ्रष्टाचार के जरिए, महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति अपने कर्तव्यों को नजरअंदाज कर अपने व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देते हैं।

- **सामाजिक न्याय को क्षति:** विकास संबंधी परियोजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं या शिक्षा के लिए निर्धारित धन का गबन कर लिया जाता है। इससे नागरिक आवश्यक सेवाओं से वंचित रह जाते हैं।
- **सत्यनिष्ठा का क्षरण:** जब भ्रष्टाचार आम बात हो जाती है, तो यह एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देता है, जहां बेईमानी, रिश्वतखोरी और हेरफेर को सिस्टम के हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।
- **नैतिक पतन:** नैतिक सापेक्षवाद (Moral relativism) का रवैया समाज के नैतिक ताने-बाने को कमज़ोर करता है, क्योंकि व्यक्ति पूर्ण नैतिक मानकों का पालन करने के बजाय परिस्थितियों के आधार पर भ्रष्ट कार्यों को तर्कसंगत बनाने लगते हैं।
- **विधि के शासन को कमज़ोर करना:** जब लोक अधिकारी भ्रष्ट होने लगते हैं, तो कानून का प्रवर्तन चयनात्मक या मनमाना हो जाता है।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें

- **मिलीभगत वाली रिश्वतखोरी:** भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम में संशोधन किया जाना चाहिए ताकि मिलिभगत वाली रिश्वतखोरी को एक विशेष अपराध बनाया जा सके।
- **अभियोजन के लिए मंजूरी:** रंगे हाथों पकड़े गए या आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति रखने के मामले में पकड़े गए लोक सेवक पर मुकदमा चलाने के लिए पूर्व मंजूरी की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।
- **भ्रष्ट लोक सेवकों का हर्जाना देने का दायित्व:** कानून में यह प्रावधान होना चाहिए कि जो लोक सेवक अपने भ्रष्ट कृत्यों से राज्य या नागरिकों को नुकसान पहुंचाते हैं, उन्हें नुकसान की भरपाई करने के लिए उत्तरदायी बनाया जाएगा। इसके अलावा, उन्हें हर्जाने के लिए भी उत्तरदायी बनाया जाना चाहिए।
- **मुकदमों में तेजी लाना:** मुकदमों के विभिन्न चरणों के लिए समय सीमा तय करने वाला एक कानूनी प्रावधान शामिल किया जाना चाहिए।
- **अन्य:** व्हिसलब्लोअर्स (Whistleblowers) को संरक्षण।

निष्कर्ष

भ्रष्टाचार एक बड़ी चुनौती बना हुआ है, जो शासन, सामाजिक न्याय और जनता के विश्वास को कमजोर कर रहा है। भ्रष्टाचार को कम करने और सुशासन को बढ़ावा देने के लिए पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और सार्वजनिक भागीदारी की संस्कृति को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

> भ्रष्टाचार एक कैंसर की तरह है, एक ऐसा कैंसर जो लोकतंत्र में नागरिकों के विश्वास को खत्म करता है, और नवाचार व रचनात्मकता की भावना को कमजोर करता है।
>
> **-जो बाइडेन**

3.6. सोशल मीडिया और सिविल सेवक (Social Media and Civil Servants)

परिचय

माननीय प्रधान मंत्री ने नए IPS पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि "सिंघम बनने का प्रयास मत कीजिए। पुलिस की वर्दी अधिकारों के अनुचित प्रयोग या धौंस जमाने के लिए नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य प्रेरणा देना है।" प्रधान मंत्री ने यह बात सिविल सेवकों की इंस्टाग्राम सेलिब्रिटी बनने की बढ़ती प्रवृत्ति को देखते हुए कही थी। इसी दौरान, IAS अधिकारी और कलेक्टर प्रशांत नायर ने अपने सोशल मीडिया इन्फ्लुएंस का उपयोग करके केरल में एक झील की सफाई के लिए स्वयंसेवकों को इकट्ठा किया था।

सिविल सेवक आमतौर पर सोशल मीडिया का उपयोग निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए कर सकते हैं:

- **नागरिकों से जुड़ने के लिए:** इससे जनभागीदारी बढ़ सकती है, विश्वास उत्पन्न हो सकता है और संबंधित सिविल सेवक की लोकप्रियता भी बढ़ सकती है।
- **जानकारी साझा करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए:** सिविल सेवकों सहित विभिन्न लोक प्राधिकारी सोशल मीडिया के माध्यम से सरकारी योजनाओं के विवरण, अपडेटेड नीतिगत जानकारी, नियमों आदि को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए- दिल्ली यातायात पुलिस मीम्स (Memes) के जरिए यातायात नियमों एवं कानूनों के बारे में जागरूकता पैदा कर रही है।

- **जनता के दृष्टिकोण को समझने के लिए:** कई बार सिविल सेवक नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में लोगों का फीडबैक जानने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया पर होने वाली चर्चाओं में जातिवाद, सांप्रदायिकता और लिंग के आधार पर व्याप्त भेदभाव (Sexism) जैसे विभिन्न मुद्दे उभर कर सामने आते हैं।
- सिविल सेवक **व्यक्तिगत स्तर पर इसका इस्तेमाल अपने निजी विचार रखने** और अन्य कंटेंट साझा करने के लिए भी करते हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
सिविल सेवक	**सरकार के वास्तविक प्रतिनिधि** और एक नागरिक के रूप में उन्हें **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार भी होता है।**
सरकार	सिविल सेवकों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित **नीतियां, दिशा-निर्देश और मानक निर्धारित** करना।
नागरिक/ आम जन	सिविल सेवकों द्वारा साझा की गई **सूचना के बारे में आम जनता कमेंट करके,** सवाल पूछकर या सोशल मीडिया चैनलों के जरिए **सहायता मांग कर** सक्रिय रूप से हिस्सा ले सकती है।
मीडिया	सिविल सेवकों की सोशल मीडिया से जुड़ी **गतिविधियों की निगरानी और उनकी रिपोर्टिंग करना।** साथ ही, उनकी पहुंच और प्रभाव में बढ़ोतरी करना।
सहकर्मी	विचारों का आदान-प्रदान करने, सर्वोत्तम कार्य-प्रणालियों को साझा करने या प्रयासों में समन्वय लाने के लिए अपने सहकर्मियों से जुड़ना एवं सोशल मीडिया पर उनको फॉलो करना।
विनियामक निकाय	**सोशल मीडिया** के उपयोग से संबंधित **दिशा-निर्देशों या नीतियों की निगरानी और अनुपालन सुनिश्चित करना।**

सिविल सेवकों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग से संबंधित नैतिक मुद्दे

- **तटस्थता और अनामिता (Anonymity) का सिद्धांत:** सिविल सेवा मूल्यों के अनुसार, अधिकारियों को राजनीतिक रूप से तटस्थ होना चाहिए। उन्हें अपनी सार्वजनिक छवि बनाने या किसी कृत्य के लिए लोगों की प्रशंसा बटोरने से बचना चाहिए।
- **सरकार के संसदीय स्वरूप के साथ असंगत:** सरकार के संसदीय स्वरूप में, सरकार एवं मंत्री चुने हुए प्रतिनिधियों के रूप में जनता के प्रति उत्तरदायी होते हैं, वहीं नौकरशाह केवल अपने वरिष्ठ अधिकारी के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
- **निजता का उल्लंघन और राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा:** सूचना लीक होने का खतरा रहता है, ऑनलाइन साझा किए गए व्यक्तिगत डेटा का उपयोग खुफिया जानकारी जुटाने के लिए किया जा सकता है।
- **यह व्यक्ति की पेशेवर और निजी पहचान के बीच के अंतर को अस्पष्ट कर सकता है:** ऑनलाइन गतिविधियों को सहकर्मी, नियोक्ता और आम लोग आसानी से देख सकते हैं।
- **अनुचित आत्म-प्रचार:** कई बार सिविल सेवक प्रसिद्धि का उपयोग खुद की पब्लिसिटी के लिए करते हैं। कई सिविल सेवक अपने काम के बारे में ऑनलाइन पोस्ट करते हैं। इसके बाद उनके प्रशंसक और फॉलोवर्स इन पोस्ट्स का प्रचार करते हैं जिससे उन सिविल सेवकों के प्रदर्शन के संबंध में एक पब्लिक नैरेटिव तैयार होता है।

अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियमावली, 1968 में क्या प्रावधान हैं?

इसमें कहा गया है कि **किसी भी सेवारत सिविल सेवक को सार्वजनिक मीडिया पर ऐसे बयान नहीं देने चाहिए जो-**

- **केंद्र सरकार या राज्य सरकार की किसी वर्तमान या हालिया नीति या कार्रवाई की नकारात्मक आलोचना** करता हो।
- **केंद्र सरकार और किसी राज्य सरकार के संबंधों में कठिनाइयां पैदा करता हो।**
- **केंद्र सरकार और किसी विदेशी सरकार के बीच संबंधों में कठिनाइयां पैदा करता हो।**

आगे की राह

सोशल मीडिया पर सिविल सेवकों की उपस्थिति एवं उनकी भागीदारी के संबंध में **इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग** द्वारा कुछ **बुनियादी मूल्य** प्रस्तुत किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं:

- **पहचान (Identity):** हमेशा यह ध्यान में रखें कि **आप कौन हैं, विभाग में आपकी क्या भूमिका है** और हमेशा मैं/ मेरा जैसे सर्वनामों का प्रयोग करते हुए पोस्ट करें।

© Vision IAS

- **प्राधिकार (Authority): जब तक आपको अधिकार न दिया जाए तब तक कोई टिप्पणी और प्रतिक्रिया न दें,** विशेष रूप से उन मामलों में जो न्यायालय में विचाराधीन (Sub-judice) हैं, या जो अभी ड्राफ्ट रूप में हैं या अन्य व्यक्तियों से संबंधित हैं।
- **प्रासंगिकता (Relevance): अपने क्षेत्र से संबंधित मुद्दों** पर ही टिप्पणी करें तथा **प्रासंगिक एवं उचित टिप्पणी** करें।
- **पेशेवर व्यवहार (Professionalism):** सोशल मीडिया पर पोस्ट करते समय **विनम्र रहें, विवेकशील बनें और सभी का सम्मान करें**। किसी भी व्यक्ति या एजेंसी के पक्ष में या उसके खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी न करें।
- **अनुपालन (Compliance): प्रासंगिक नियमों और विनियमों का अनुपालन करें।** बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) एवं दूसरों के कॉपीराइट का अतिक्रमण या अवहेलना न करें।
- **निजता (Privacy): अन्य व्यक्तियों की व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें** और न ही अपनी निजी एवं व्यक्तिगत जानकारी साझा करें।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया सिविल सेवकों की लोक सहभागिता को और अधिक बढ़ा सकता है, लेकिन तटस्थता, गोपनीयता और पेशेवर क्षमता को बनाए रखने के लिए इसका उपयोग सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। लोक सेवा में जनता का विश्वास और निष्ठा बनाए रखने के लिए संतुलित और जिम्मेदार दृष्टिकोण रखना जरुरी है।

> यदि आप चाहते हैं कि आपको पसंद किया जाए, तो आप किसी भी समय किसी भी चीज़ से समझौता करने के लिए तैयार हो जाएं।
>
> **-मार्गरेट थैचर**

3.7. सुशासन की भारतीय अवधारणा (Indic Idea of Good Governance)

परिचय

हाल ही में, भारत में **P2G2**[2] या **जनहितकारी सुशासन** के सिद्धांत पर बल देने के लिए कदम उठाया गया। साथ ही, अमेरिका में **गवर्नमेंट एफिशिएंसी विभाग** की स्थापना की गई। दोनों ही देशों द्वारा उठाए गए ये कदम बेहतर और जनोन्मुखी प्रशासन की बढ़ती आवश्यकता को दर्शाते हैं। इस संदर्भ में, भारत की प्राचीन परंपराओं को पुनः समझना आवश्यक हो गया है, जिनमें न्याय, निष्पक्षता और जनकल्याण पर आधारित **"राजधर्म"** की अवधारणा निहित थी।

सुशासन (Good Governance) एक व्यापक फ्रेमवर्क प्रदान करता है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि **समाज के सबसे कमजोर वर्ग की आवाज सुनी जाए** तथा **वर्तमान एवं भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्णय लिए जाएं।**

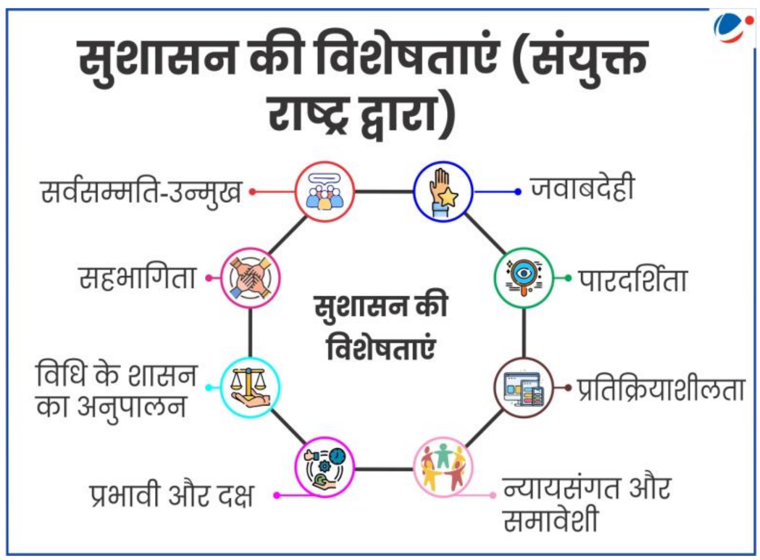

सुशासन की भारतीय अवधारणा

- **बृहदारण्यक उपनिषद:** इसमें राजा के लिए इस कर्तव्य पर बल दिया गया है कि वह **धर्म** की रक्षा करे और लोक-कल्याण सुनिश्चित करे, ताकि कमजोर वर्गों का शोषण न हो।
- **मुण्डक उपनिषद:** सुप्रसिद्ध **"सत्यमेव जयते"** वाक्यांश इसी ग्रंथ से लिया गया है, जिसका अर्थ है **"सत्य की विजय होती है"**।
- **रामायण:** इसमें **"रामराज्य"** की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, जो आदर्श शासन का प्रतीक है। साथ ही, इसमें नेतृत्व के महत्वपूर्ण कौशल का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। रामराज्य की अवधारणा के तहत, राजा का यह कर्तव्य होता है कि वह केवल अपने लिए धन-संपत्ति एकत्र करने में व्यस्त रहने के स्थान पर, प्रत्येक नागरिक की आवश्यकताओं का ध्यान रखे।
- **भगवद गीता:** इसमें **"अधिष्ठान"** की अवधारणा प्रस्तुत की गई है, जो किसी भी शासन प्रणाली की नींव होती है।

[2] Pro-People Good Governance

- ○ अधिष्ठान (वह स्थान जहाँ से निर्णय लिए जाते हैं) का अर्थ है **जिम्मेदारी और स्थिरता के साथ निर्णय लेना**, ताकि पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और प्रभावी प्रशासन सुनिश्चित किया जा सके।
- **तिरुक्कुरल:** यह ग्रंथ समाज के **सुव्यवस्थित विकास** पर बल देता है। इसमें **प्राकृतिक संसाधनों की खोज तथा उनके दोहन और संरक्षण के मध्य संतुलन** बनाए रखने की आवश्यकता से संबंधित नियम शामिल हैं।
- **कौटिल्य का अर्थशास्त्र:** इसमें **योगक्षेम** अर्थात् नागरिकों के कल्याण की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। इसमें **राजधर्म** का वर्णन किया गया।
- **अंत्योदय:** यह महात्मा गांधी के विचारों पर आधारित है। इसमें समाज के **सबसे दुर्बल वर्ग** के कल्याण के जरिए **सर्वोदय (सभी का विकास)** का लक्ष्य रखा गया है।

क्या आप जानते हैं?

> छत्रपति शिवाजी महाराज ने राजत्व के प्रति **"उपभोगशून्य स्वामी"** का दृष्टिकोण अपनाया था, जो बिना किसी व्यक्तिगत लाभ के प्रजा पर पूर्ण स्वामित्व पर आधारित है।

सुशासन की भारतीय अवधारणा की वर्तमान प्रासंगिकता

- **वैश्वीकरण के अनुरूप ढलना:** वैश्वीकरण ने राष्ट्रीय सरकारों के अधिकार क्षेत्र को सीमित किया है। इससे **बहुराष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों** का प्रभाव बढ़ा है।
  - ○ उदाहरण के लिए, **वसुधैव कुटुंबकम** (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की अवधारणा वैश्विक एकता और समावेशिता को बढ़ावा देती है।
- **लोकतंत्र की रक्षा:** सरकार और नागरिक समाज/ नागरिकों के बीच सहयोग सुनिश्चित करके यह प्राप्त किया जा सकता है।
- **सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय (Welfare for All): अंत्योदय** का विचार, **समावेशी विकास (Inclusive Development) की आधुनिक अवधारणा** के अनुरूप ही है।
  - ○ उदाहरण के लिए, **MGNREGA, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), आयुष्मान भारत** जैसी योजनाएं हाशिए पर मौजूद समुदायों का स्तर ऊपर उठाने में सहायक हैं।
- **संघर्ष समाधान (Conflict Resolution):** न्यायशास्त्र की न्यायिक प्रणाली में**, न्याय, निष्पक्षता और मध्यस्थता** पर बल दिया जाता है। यह प्रतिकूल कानूनी प्रणालियों के लिए एक विकल्प प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

वर्तमान में सुशासन की अवधारणा की मूलभूत विशेषताएं, प्राचीन भारतीय ग्रंथों में उल्लिखित प्रशासनिक संरचना और दर्शन से मेल खाती हैं। किसी भी प्रशासन का प्राथमिक उद्देश्य **जनता की खुशहाली** होती है। इसलिए, **प्राचीन शास्त्रों की गहराइयों से ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक** है, ताकि **SMART[3] प्रशासन** का निर्माण किया जा सके।

> मजबूत सरकार का मतलब केवल सैन्य शक्ति या प्रभावशाली खुफिया तंत्र नहीं होता। इसका असली अर्थ है – प्रभावी और न्यायपूर्ण प्रशासन, यानी 'सुशासन'।
>
> **-रघुराम राजन**

3.8. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
हितों का टकराव	भाई-भतीजावाद	व्हिसलब्लोइंग	सत्यनिष्ठा
जवाबदेही	उपयोगितावाद	निरपवाद कर्तव्यादेश (Categorical Imperative)	कर्तव्यशास्त्र
वसुधैव कुटुंबकम	तटस्थता	अनामिता (Anonymity)	

[3] सरल, नैतिक, जवाबदेह, उत्तरदायी और पारदर्शी / Simple, Moral, Accountable, Responsive and Transparent

3.9. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

व्हिसलब्लोइंग नैतिक साहस का एक कार्य है, लेकिन यह शासन में नैतिक दुविधाओं को भी जन्म देता है। चर्चा कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
किसी संगठन के भीतर होने वाली गलत गतिविधियों को जनहित में उजागर करने वाले व्हिसलब्लोइंग को परिभाषित कीजिए।	उदाहरण सहित संक्षेप में बताइए कि व्हिसलब्लोइंग कैसे एक नैतिक साहसपूर्ण कार्य है। फिर, इससे जुड़ी नैतिक दुविधाओं, जैसे जनहित बनाम गोपनीयता, आदि पर चर्चा कीजिए।	कानूनी सुरक्षा, संस्थागत समर्थन आदि को मजबूत करने जैसे सुझाव दीजिए।

4. नैतिकता और समाज (Ethics and Society)

4.1. गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार (Right to Die with Dignity)

परिचय

हाल ही में, जैन समुदाय की एक 3 वर्षीय बच्ची की संथारा (मृत्यु तक उपवास) की प्रथा के जरिए मृत्यु हो गई। वह बच्ची टर्मिनल ब्रेन ट्यूमर की समस्या से जूझ रही थी। इस घटना को लेकर चिंता व्यक्त की गई है कि क्या वह बच्ची अपने विवेक से निर्णय (Informed decision) लेने में सक्षम थी।

इसके अतिरिक्त, **फ्रांस ने एक विधेयक पारित किया है**, जो असहनीय और लाइलाज बीमारियों से पीड़ित **वयस्कों को चिकित्सकीय सहायता से मृत्यु (Assisted dying)** चुनने की अनुमति देता है। उपर्युक्त घटनाक्रम **गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार** के सिद्धांतों को उजागर करते हैं।

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के बारे में

- **अर्थ:** गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार का तात्पर्य यह है कि **लाइलाज या गंभीर बीमारी से पीड़ित व्यक्ति को यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपने जीवन के अंतिम क्षणों के बारे में स्वयं निर्णय ले सके।** इस अधिकार के तहत व्यक्ति यह तय कर सकता है कि वह कितनी पीड़ा और दर्द सहन करना चाहता है।
  - **इच्छामृत्यु** या यूथेनेशिया (अर्थात, **"सम्मानजनक मृत्यु"**) गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति को यह अधिकार प्रदान करने का एक अनिवार्य साधन है। यह दो प्रकार की होती है:
    - **सक्रिय यूथेनेशिया (Active):** इसके तहत सक्रिय साधनों का उपयोग करके रोगी की इच्छामृत्यु में सहायता की जाती है, उदाहरण के लिए- जानलेवा दवा देना। **सक्रिय यूथेनेशिया भारत में गैर-कानूनी है।**
    - **निष्क्रिय यूथेनेशिया (Passive):** रोगी को जीवन रक्षक प्रणाली (जैसे- वेंटिलेटर, फ़ीडिंग ट्यूब) से हटाकर स्वाभाविक मृत्यु प्राप्त करने में सहायता करना।
- **भारत में स्थिति:**
  - 2011 में, **अरुणा शानबाग बनाम भारत संघ वाद** में सुप्रीम कोर्ट ने **पहली बार निष्क्रिय इच्छामृत्यु** की अनुमति दी थी।
  - **कॉमन कॉज बनाम भारत सरकार (2018) वाद** में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि संविधान के **अनुच्छेद 21** के तहत जीवन के अधिकार में **गरिमा के साथ मृत्यु का अधिकार** भी शामिल है। इस प्रकार कोर्ट ने निष्क्रिय इच्छामृत्यु की वैधता को बरकरार रखा और भारत में लिविंग विल के लिए प्रक्रिया निर्धारित की।

प्रमुख हितधारक और संबंधित नैतिक मुद्दे

गंभीर रोग से ग्रसित मरीज और उनका परिवार	• इस तरह के मरीज अक्सर **असहनीय शारीरिक पीड़ा** का सामना करते हैं। साथ ही, वे अपने परिवारों को भावनात्मक व आर्थिक रूप से जूझता हुआ देखकर और भी दुखी होते हैं। • **परिवार भावनात्मक द्वंद्व में फंसे रहते हैं।** जहां एक ओर दर्द से मुक्ति की चाह होती है, वहीं दूसरी ओर जीवन की हानि का दुःख होता है।
स्वास्थ्य सेवा प्रदाता (डॉक्टर, नर्स, प्रशामक देखभाल पेशेवर)	• हालांकि चिकित्सा पेशेवर रोगी की पीड़ा को कम करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, लेकिन साथ ही वे **हिप्पोक्रेटिक शपथ ("कोई नुकसान न पहुंचाना")** से भी बंधे होते हैं। • उन्हें रोगी की स्वायत्तता का सम्मान करने और जीवन को बनाए रखने के बीच **नैतिक दुविधाओं का सामना** करना पड़ता है।
विधि और नीति निर्माता	• मरीजों और उनके परिवारों के अधिकारों और स्वायत्तता की रक्षा करना, जिसमें **सम्मान के साथ मृत्यु का अधिकार** भी शामिल है। साथ ही, संभावित दुरुपयोग को रोकना।
समाज	• समाज **जीवन की पवित्रता** और अपने **सबसे कमजोर सदस्यों की रक्षा के सामूहिक दायित्व** को महत्व देता है। • हालांकि, **व्यक्तिगत स्वायत्तता और गरिमा** पर विकसित विचार पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देते हैं।

© Vision IAS

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार में शामिल नैतिक दुविधाएं

- **जीवन की गुणवत्ता बनाम जीवन की पवित्रता:** यदि असहनीय पीड़ा या गरिमा की हानि जीवन पर हावी हो जाए, तो क्या केवल जीवित रहना अर्थपूर्ण है?
- **संवैधानिक नैतिकता बनाम स्वायत्तता का सम्मान:** क्या किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा कानूनी और नैतिक सीमाओं से ऊपर होनी चाहिए?
- **उपशामक देखभाल (Palliative Care) बनाम न्याय:** क्या हमें केवल जीवन रक्षक प्रणाली पर निर्भर रहना चाहिए या जब देखभाल प्रणाली विफल हो जाती है, तब गरिमापूर्ण इच्छामृत्यु की अनुमति दी जानी चाहिए?
- **गैर-हानिकारक सिद्धांत बनाम दोहरे प्रभाव का सिद्धांत:** क्या डॉक्टरों द्वारा दर्द से राहत प्रदान की जानी चाहिए, भले ही इससे जीवन काल छोटा हो जाए?

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के पक्ष में तर्क

- **जीवन की गुणवत्ता:** जीवन की गुणवत्ता केवल एक साधारण जीवन जीने से कहीं बढ़कर है। इसमें मनोवैज्ञानिक कल्याण, संज्ञानात्मक क्षमता शामिल है।
- **स्वायत्तता का सम्मान:** स्वायत्तता मानव नैतिक मूल्यों की आधारशिला है। सक्षम व्यक्तियों को मृत्यु का चुनाव करने का अधिकार होना चाहिए।
  - भीष्म पितामह ने इच्छा मृत्यु का विकल्प चुना और सुकरात ने निर्वासन के बजाय मृत्यु को चुना।
- **डबल इफेक्ट सिद्धांत:** यदि डॉक्टर का उद्देश्य दर्द से राहत देना है, तो इसके लिए ऐसी दवा देना नैतिक रूप से स्वीकार्य है, जो रोगी को दर्द से राहत पहुंचाती हो, भले ही उस प्रक्रिया में रोगी का जीवन काल छोटा क्यों ना हो जाए।
- **न्याय:** जब उपचारात्मक दवा विफल हो जाती है और पैलिएटिव देखभाल पर्याप्त रूप से पीड़ा को कम नहीं कर पाती है, तो उपचार जारी रखने से व्यक्ति को अधिक पीड़ा हो सकती है।

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के विरुद्ध तर्क

- **जीवन की पवित्रता:** उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म **अहिंसा और नुकसान न पहुंचाने की अवधारणा** के माध्यम से जीवन की पवित्रता का प्रचार करता है।
- **संवैधानिक नैतिकता:** उदाहरण के लिए, **अनुच्छेद 25(1)** के तहत धर्म की स्वतंत्रता पर लोक व्यवस्था, सदाचार (नैतिकता) और स्वास्थ्य के हित में उचित प्रतिबंध लगाए गए हैं।
- **पैलिएटिव देखभाल:** इच्छामृत्यु के बिना भी अच्छी देखभाल करना रोगी की पीड़ा को कम कर सकती है।
  - साथ ही, **चिकित्सा विज्ञान हर रोज एक नई प्रगति कर रहा है।** वर्तमान में जो बीमारी लाइलाज है, वह कल इलाज योग्य हो सकती है।
- **हानि न पहुंचाने का सिद्धांत (कोई नुकसान न पहुंचाना)** रोगी को नुकसान न पहुंचाने के महत्व को रेखांकित करता है। यह सिद्धांत चिकित्सा पेशेवरों की **हिप्पोक्रेटिक शपथ** के भी अनुरूप है, जिसमें "कोई हानि नहीं पहुंचाने" का संकल्प होता है।
- **कांट के दर्शन के विपरीत:** इमैनुएल कांट के अनुसार, जीवन की रक्षा करना एक सार्वभौमिक नैतिक कर्तव्य है।
- **दुरुपयोग की संभावना:** नाबालिग (युवा और संवेदनशील व्यक्ति) और **गंभीर रूप से बीमार रोगियों** (तार्किक सोच की कमी) के मामले में, स्वायत्तता के सिद्धांत का दुरुपयोग किया जा सकता है।

गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए आगे की राह

- **विस्तृत संवाद स्थापित करना:** रोगी के जीवन, स्वास्थ्य और बीमारी के प्रति दृष्टिकोण को समझने के लिए नियमित संवाद आवश्यक है।
- **प्रभावी विनियमन:** इच्छामृत्यु की प्रक्रिया को **प्रभावी ढंग से विनियमित** किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह केवल **अस्पताल सेटिंग्स में कम-से-कम 2 चिकित्सकों के प्रमाणन** के बाद ही किया जा सके।
- **दुरुपयोग को रोकना:** इच्छामृत्यु की अनुमति देने से पहले, एक **पूर्ण मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, परामर्श, प्रतीक्षा अवधि** होनी चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि रोगी किसी दबाव या अस्थायी मानसिक स्थिति में निर्णय नहीं ले रहा है।
- **देखभाल एक नैतिक दृष्टिकोण:** विशेष रूप से **नाबालिगों** और **मानसिक रूप से कमजोर रोगियों** के मामलों में सहानुभूति और करुणा पर आधारित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष

चिकित्सकीय प्रगति लोगों के जीवन को लंबा बना सकती है, लेकिन यह पीड़ा को हमेशा समाप्त नहीं कर सकती है। जब दर्द असहनीय हो जाता है, तो **गरिमा के साथ मृत्यु का अधिकार** विचारणीय हो जाता है। हालांकि, इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए मजबूत नैतिक दिशा-निर्देशों और सख्त नियमों का पालन करना चाहिए।

जैसा कि भौतिक विज्ञानी **स्टीफन हॉकिंग** ने कहा था: "मेरा मानना है कि जो लोग एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित हैं और अत्यधिक पीड़ा झेल रहे हैं, उन्हें अपना जीवन समाप्त करने का अधिकार होना चाहिए, और जो लोग उनकी सहायता करते हैं उन्हें सजा से मुक्त होना चाहिए।"

यह हमारे समय के सबसे गहन नैतिक प्रश्नों में से एक अर्थात् गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार के प्रति एक करुणामय, मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है।

> "जीवन और मृत्यु के बीच की लंबी बीमारी **कभी-कभी मृत्यु को राहत** बना देती है – सिर्फ उस व्यक्ति के लिए नहीं जो जा रहा है, बल्कि उनके लिए भी जो पीछे रह जाते हैं।"
>
> **-जीन डे ला ब्रूयेरे**
> **(फ्रांसीसी दार्शनिक)**

4.2. तुरंत न्याय (Instant Justice)

प्रस्तावना

हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट ने **निजी संपत्तियों के डेमोलिशन या विध्वंस** के संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर दिशा-निर्देश जारी किए हैं। कोर्ट ने माना कि **प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों** और **विधि की सम्यक् प्रक्रिया** का पालन किए बिना निजी इमारतों को गिराना या ध्वस्त करना अराजकता की स्थिति के समान है। यह शक्ति या ताकत के बल पर किया गया अत्याचार है। न्यायालय ने यह भी कहा कि तुरंत न्याय के उदाहरण **अक्सर कार्यपालिका द्वारा मनमाने ढंग से किए जाने वाले दुस्साहस पूर्ण कृत्य** को प्रकट करते हैं। साथ ही, ये कृत्य **संवैधानिक लोकाचार और मूल्यों का भी उल्लंघन करते** हैं।

न्यायालय द्वारा जारी प्रमुख दिशा-निर्देश

- **पूर्व सूचना:** संपत्ति के मालिक को **कारण बताओ नोटिस** दिए बिना विध्वंस की कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए।
- **सुनवाई का अवसर:** संबंधित व्यक्ति को उचित प्राधिकारी के समक्ष व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर दिया जाना चाहिए।
- **विध्वंस की प्रक्रिया: कार्रवाई की वीडियोग्राफी** अनिवार्य है तथा वीडियोग्राफी रिकॉर्डिंग को उचित तरीके से सुरक्षित रखना आवश्यक है।
- **दिशा-निर्देशों के उल्लंघन पर कार्रवाई:** निर्देशों का उल्लंघन करने पर संबंधित अधिकारियों के खिलाफ **मुकदमा चलाने** के साथ-साथ **अवमानना की कार्यवाही** शुरू की जा सकती है।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
पीड़ित और उनके परिवार	• न्याय तक पहुंच, निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार, मानव अधिकारों का संरक्षण, सम्मान, अपराधी द्वारा सुधार की प्रक्रिया।
कानून प्रवर्तन एजेंसियां और न्यायपालिका	• विधि का शासन, आपराधिक न्याय प्रणाली, अपराध के अनुपात में सजा, उचित और निष्पक्ष तरीके से दंड देना।
बड़े पैमाने पर समाज	• त्वरित न्याय, न्याय व्यवस्था में विश्वास, कानून और व्यवस्था, सार्वजनिक सुरक्षा।
अपराधी (आरोपी या दोषी)	• त्वरित न्याय, कमजोर लोगों की सुरक्षा, अपराध पर लोकप्रिय सार्वजनिक विमर्श।
सरकार	• निष्पक्ष आपराधिक न्याय प्रणाली, सामूहिक सुरक्षा के साथ व्यक्तिगत अधिकारों का संतुलन, जन भावनाएं और आक्रोश।

न्याय की अवधारणा

- न्याय एक नैतिक व दार्शनिक विचार है, जिसमें यह माना जाता है कि **कानून द्वारा सभी के साथ निष्पक्ष और समान व्यवहार किया जाना** चाहिए। **न्याय एक स्थिर अवधारणा नहीं है,** बल्कि एक ऐसी अवधारणा है, जो लगातार विकसित हो रही है।
- **रॉल्स का न्याय का सिद्धांत:** उन्होंने **न्याय के दो सिद्धांत** प्रस्तावित किए, अर्थात् समान बुनियादी स्वतंत्रता का सिद्धांत और विभेद सिद्धांत[4]।
  - पहला सिद्धांत समाज में **सभी के लिए समान अधिकार और स्वतंत्रता की मांग करता** है। वहीं, दूसरा सिद्धांत समाज में **असमानताओं को तब तक अनुमति देता** है जब **तक ये समाज के सबसे कम सुविधा प्राप्त सदस्यों को लाभ पहुंचाती** हैं।

न्याय के प्रकार

न्याय	अवधारणा
वितरणात्मक न्याय (Distributive justice)	▸इसे **आर्थिक न्याय** के रूप में भी जाना जाता है। यह समाज के सभी सदस्यों को उपलब्ध लाभों और संसाधनों का **"उचित हिस्सा"** देने से संबंधित है।
प्रक्रियात्मक न्याय (Procedural justice)	▸निष्पक्ष तरीके से निर्णय लेने के लिए **नियमों का निष्पक्षता से पालन किया जाना चाहिए** एवं उन्हें लगातार लागू किया जाना चाहिए।
प्रतिशोधात्मक न्याय (Retributive justice)	▸इस विचार के अनुसार, **लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसा वे दूसरों के साथ करते हैं।** ▸यह एक **पूर्वव्यापी दृष्टिकोण** है जो अतीत में हुए अन्याय या गलत कार्य हेतु प्रतिक्रिया के रूप में दंड को उचित ठहराता है।
पुनर्स्थापनात्मक न्याय (Restorative Justice)	▸यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पीड़ित और अभियुक्त को आमने-सामने लाकर संवाद के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं को समझा जाता है। इसका उद्देश्य केवल नुकसान की भरपाई करना नहीं, बल्कि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकना भी होता है।
रिहेब्लिटेटिव या पुनर्वास न्याय (Rehabilitative Justice)	▸इसका उद्देश्य अपराधी के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाकर भविष्य में अपराध की पुनरावृत्ति को रोकना होता है। ▸इसके तहत शिक्षा, परामर्श, कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अपराधी के सामाजिक पुनर्वास पर बल दिया जाता है।

तुरंत न्याय के बढ़ते मामलों के पीछे कारण

- **न्याय वितरण प्रणाली में घटता विश्वास:** विधि आयोग ने **अपनी 239वीं रिपोर्ट** में इस बात पर प्रकाश डाला कि न्याय मिलने में अत्यधिक देरी ने लोगों में कानून के प्रति भय और विश्वास को खत्म कर दिया है। इसके चलते लोगों की यह भावना मजबूत हुई है कि **"न्याय में देरी न्याय से वंचित करने के समान है"।**

[4] Principle of equal basic liberties and the difference principle

- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी:** बलात्कार, हत्या या बाल उत्पीड़न से जुड़े मामलों में लोगों की भावनाएं बहुत तीव्र हो जाती हैं, जिसके कारण अक्सर समुदाय में बदले की भावना उत्पन्न हो जाती है।
- **भ्रामक सूचना का प्रसार:** सोशल मीडिया पर भ्रामक सूचना अक्सर लोगों को तथ्यों की सही जानकारी के बिना भीड़ के रूप में इकट्ठा कर सकती है। इससे भीड़ सतर्कता न्याय (Vigilante Justice) करने की दिशा में अग्रसर होती है।
- **नैतिक पत्रकारिता से समझौता:** अपराध की कहानियों को सनसनीखेज बनाने में मीडिया की भूमिका अक्सर जनता में आक्रोश पैदा करती है। इसके परिणामस्वरूप भीड़ द्वारा बिना सोचे-समझे कार्रवाई की जाती है।
- **लोक धारणा:** विशेष रूप से यौन उत्पीड़न के मामलों में पुलिस द्वारा किए जाने वाले एनकाउंटर की घटनाओं को लोगों द्वारा सकारात्मक माना जाता है। लोगों का मानना होता है कि इस प्रकार की कार्रवाई भविष्य के लिए मजबूत निवारक के रूप में काम करती है।

तुरंत न्याय में शामिल नैतिक मुद्दे

विधि का शासन बनाम विधि द्वारा शासन:

- तुरंत न्याय **विधि के शासन के विचार को चोट पहुंचाता है और मनमाने या पक्षपातपूर्ण निर्णयों को बढ़ावा देता है।**

विधि की सम्यक् प्रक्रिया बनाम त्वरित न्याय:

- तुरंत न्याय के मामले में व्यक्ति को प्राप्त कानूनी सुरक्षा से जुड़े उपायों को शामिल नहीं किया जाता है। इससे अभियुक्त को **संविधान के अनुच्छेद 21** के अंतर्गत प्राप्त निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार का उल्लंघन होता है।
  - इस प्रकार, यह '**दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष माने जाने** के सिद्धांत के खिलाफ है।

प्रतिशोधात्मक बनाम सुधारात्मक न्याय:

- **तुरंत न्याय** अक्सर प्रतिशोधात्मक न्याय के सबसे खराब पहलुओं में से एक है।

साधन बनाम साध्य की बहस:

- यह सवाल उठता है कि क्या वांछनीय या न्यायसंगत परिणाम (जैसे- आपराधिक मामलों में त्वरित न्याय) प्राप्त करने के लिए हम उन तरीकों का उपयोग कर सकते हैं जो मूल नैतिक सिद्धांतों या कानूनी प्रक्रियाओं का उल्लंघन करते हैं।

आगे की राह

- **प्रतिशोधात्मक न्याय को पुनर्स्थापनात्मक न्याय के साथ संतुलित करना:** इससे यह सुनिश्चित करने में सहायता मिलती है कि **'न्याय न केवल होना चाहिए बल्कि यह दिखना भी चाहिए कि न्याय हुआ है।'** इसका तात्पर्य यह है कि "ऐसा कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए जिससे यह संदेह भी उत्पन्न हो कि न्याय की प्रक्रिया में अनुचित हस्तक्षेप हुआ है।"
- **न्यायिक सुधार:** तुरंत न्याय के बढ़ते मामलों से निपटने के लिए न्यायिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। इससे कानूनी प्रणाली के भीतर **पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही को बढ़ावा** मिलेगा। साथ ही, इससे न्याय प्रणाली में जनता का विश्वास बनाए रखने में भी मदद मिलेगी।
  - इसके अतिरिक्त, **डी.के. बसु बनाम पश्चिम बंगाल राज्य (1996)** तथा **PUCL बनाम महाराष्ट्र राज्य (2014)** आदि मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने तुरंत न्याय की समस्या के समाधान हेतु जारी महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देशों को सही से लागू किया जाना चाहिए।
- **संस्थाओं की जवाबदेहिता को बढ़ावा देना:** पुलिस को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि न्यायालय में अपनी बेगुनाही साबित करने का अभियुक्त का संवैधानिक अधिकार सुरक्षित रहे।

निष्कर्ष

त्वरित, निष्पक्ष और किफायती न्याय का अधिकार एक सार्वभौमिक मौलिक अधिकार है। भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 21 ने जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता** दी है तथा राज्य पर **प्रत्येक नागरिक के जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा** करने का दायित्व सौंपा है। कानून द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के बिना इस बहुमूल्य अधिकार से **वंचित करना या उसका उल्लंघन करना स्वीकार्य** नहीं है। एक सुव्यवस्थित समाज का संपूर्ण अस्तित्व आपराधिक न्याय प्रणाली के सुदृढ़ और कुशल कामकाज पर निर्भर करता है।

> भले ही सौ दोषियों को बरी कर दिया जाए, लेकिन एक भी निर्दोष को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए
>
> **-ब्रिटिश न्यायविद सर विलियम ब्लैकस्टोन**

4.3. बॉडी शेमिंग के नैतिक आयाम (Ethical Dimensions of Body Shaming)

परिचय

बॉडी शेमिंग का अर्थ है किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट, आकार, रूप या उसकी हाव-भाव के आधार पर उसकी आलोचना या उपहास करना। यह किसी के साथ भी हो सकता है, और कोई भी इसका शिकार बन सकता है।

जैसे-जैसे आरोग्यता और सुंदरता का तेजी से व्यवसायीकरण हो रहा है, वैसे-वैसे मार्केटिंग में अक्सर बॉडी इमेज को गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाने लगा है। उदाहरण के लिए, एक थाई कैफे ने पतले ग्राहकों को छूट दी, जिससे शरीर के आकार को पुरस्कृत करने से जुड़े नैतिक मुद्दे सामने आए। इस तरह की रणनीति हानिरहित लग सकती है, लेकिन यह गरिमा, समानता और मानसिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर चिंताएं उत्पन्न करती है - खासकर भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
समाज	समानुभूति दिखाना, समावेशिता, और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना।
मीडिया और इन्फ़्ल्युएन्सर्स	नैतिक जिम्मेदारी, अस्वास्थ्यकर सौंदर्य मानकों को बढ़ावा देने से बचना, समावेशी संदेशों को अपनाना।
व्यवसाय/ मार्केटिंग	नैतिकतापरक विज्ञापन, ग्राहक का विश्वास बनाए रखना, और अल्पकालिक लाभ की बजाय ब्रांड की दीर्घकालीन छवि पर ध्यान देना।
स्वास्थ्य पेशेवर	बॉडी इमेज से जुड़ी समस्याओं, ईटिंग डिसऑर्डर और मानसिक तनाव की स्थिति में सहयोग देना।
सरकार	हानिकारक कंटेंट को विनियमित करना, मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना, और विज्ञापन के नैतिक मानकों को लागू करना।

बॉडी इमेज शेमिंग को बढ़ावा देने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

- **सुंदरता के अव्यवहारिक मानक:** बॉलीवुड फिल्में और फेयरनेस क्रीम के विज्ञापनों सहित लोकप्रिय संस्कृति, गोरा रंग और पतले शरीर जैसे सुंदरता के संकीर्ण आदर्शों को बढ़ावा देती है।
- **मीडिया और सोशल मीडिया का दबाव:** इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म अक्सर फिल्टर और एडिटेड इमेज के माध्यम से अव्यवहारिक सुंदरता को बढ़ावा देते हैं, जिससे लोगों को लगता है कि उन्हें भी एकदम परफेक्ट दिखना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए, वजन घटाने की ऑनलाइन सलाह से प्रभावित होकर केरल की एक 18 वर्षीय लड़की उपवास गतिविधियों में शामिल हो गई। वह वाटर फास्टिंग कर रही थी, जिसके कारण उसकी मौत हो गई।
- **सांस्कृतिक और पारिवारिक पूर्वाग्रह:** महिलाओं को अक्सर उनके रंग-रूप के आधार पर महत्व दिया जाता है, जबकि पुरुषों की मस्कुलर या लंबे कद वाला होने के आधार पर प्रशंसा की जाती है।
  - कई भारतीय घरों में, लड़कियों को शादी के अच्छे रिश्ते के लिए वजन कम करने या गोरा होने का सुझाव दिया जाता है।
- **साथियों और सामाजिक स्थिति का दबाव:** कई बार स्कूल में बच्चों के बीच मस्ती और कॉलेज में चुटकुले किसी के शारीरिक रूप पर भी आधारित होते हैं। यह बचपन से ही यह सोच को सामान्य बना देता है कि किसी के रूप-रंग या आकार के आधार पर उसे आंका जाए।

नैतिक फ्रेमवर्क और उल्लंघन

कांट का नैतिक सिद्धांत

अगर हम किसी व्यक्ति को सिर्फ उसके शरीर या रूप के आधार पर आंकते हैं और उसे एक उत्पाद या मुनाफे का साधन मानते हैं, तो यह उसकी **मानवीय गरिमा** एवं आत्म-मूल्य का अपमान है। यह उसे एक इंसान नहीं, बल्कि एक 'उपयोग की वस्तु' बना देता है – जो कि नैतिक रूप से गलत है।

उपयोगितावाद

ऐसे प्रचार या व्यवहार से भले ही **थोड़े समय के लिए व्यापार को फायदा** हो, लेकिन यह मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, रुढ़ियों और भेदभाव के माध्यम से दीर्घकालिक नुकसान पहुंचाता है।

सद्गुण आधारित नैतिकता

एक अच्छे समाज में **करुणा और समावेशिता** जैसे गुण होने चाहिए।

निष्पक्षता के रूप में न्याय (रॉल्स)

कोई भी व्यक्ति ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेगा जो शारीरिक बनावट के आधार पर **भेदभाव** करती हो।

आगे की राह

- **मजबूत विनियम:** ऐसे विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानूनों को लागू करना जो शरीर आधारित भेदभाव को बढ़ावा देते हैं।
- **मीडिया जागरूकता:** उदाहरण: डव (Dove) के "कैंपेन फॉर रियल ब्यूटी" ने सभी उम्र, रंग और शारीरिक आकार की महिलाओं को प्रदर्शित करके रूढ़ियों को तोड़ा है, जिसने सुंदरता के अर्थ में फिर से नया आयाम शामिल किया है।
- **नैतिक मार्केटिंग:** कंपनियों को समावेशिता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और ऐसे कंटेंट से बचना चाहिए जो शारीरिक बनावट को शर्मसार करते हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य और संवाद:** बॉडी शेमिंग से प्रभावित लोगों के लिए मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।
- **माता-पिता/ स्कूलों की भूमिका: बॉडी पॉजिटिव सोच** को बढ़ावा दें, बच्चों की **शारीरिक बनावट पर टिप्पणी** करने से बचें, उनके **अंदरूनी गुणों की सराहना** करें।

निष्कर्ष

बॉडी शेमिंग को समाप्त करना एक साझा जिम्मेदारी है। इसलिए मीडिया, संस्थाओं और हर व्यक्ति को मिलकर काम करना होगा ताकि **दिखावट पर ध्यान देने की जगह स्वीकार्यता को बढ़ावा** दिया जा सके। सच्ची प्रगति तभी होगी जब हम लोगों को उनके स्वभाव और अच्छे गुणों से पहचानें, न कि उनके रंग, आकार या शरीर से। हमें ऐसा समाज बनाना चाहिए जहाँ हर किसी को सम्मान और गरिमा के साथ देखा और समझा जाए।

4.4. शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence in Education)

परिचय

परंपरागत रूप से, शिक्षा मुख्यतः **संज्ञानात्मक कौशल (Cognitive skills)** के विकास पर केंद्रित थी और **बुद्धिमत्ता** को शैक्षिक उपलब्धि के **प्राथमिक चालक के रूप में** देखा जाता था। हालांकि, एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि **गैर-संज्ञानात्मक कौशल** और **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)** किसी स्टूडेंट की शैक्षणिक उपलब्धियों को आकार देने में मस्तिष्क की बुद्धिमत्ता जितनी ही महत्वपूर्ण है।

शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्त्व

- **बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन:** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान स्टूडेंट्स **बेहतर फ़ोकस और प्रॉब्लम सॉल्विंग क्षमताओं को प्रदर्शित** करते हैं, जिससे वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक प्रभावी ढंग से शामिल हो सकते हैं।
- **सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य:** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान स्टूडेंट्स में **उच्च आत्म-सम्मान, चिंता और अवसाद का निम्न स्तर प्रदर्शित करने** की अधिक संभावना होती है।
- **परानुभूति और करुणा का विकास:** यह **एक सहायक और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने** में मदद करता है, **जहां स्टूडेंट्स को सम्मान मिलता है और उन्हें समझा जाता है। और विविध दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान विकसित करें। साथ ही,** विविध दृष्टिकोणों के प्रति सम्मान विकसित करना।
    - उदाहरण के लिए- **स्टूडेंट्स को लैंगिक-संवेदनशीलता, अनुभवात्मक शिक्षण के जरिए विचारों को साझा करना आदि सिखाया जाता है।**

- **प्रभावी संप्रेषण के जरिए संबंधों को प्रगाढ़ बनाना:** EI स्टूडेंट्स को अपने विचारों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करता है।
  - **इससे वे सक्रिय रूप से सुनना, परानुभूतिपूर्वक उत्तर देना तथा संघर्षों को रचनात्मक रूप से हल करना** सीखते हैं।
  - उदाहरण के लिए- **अपनी गलतियों को स्वीकार करना सीखना।**
- **दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करना:** नियोक्ता और संगठन EI को अत्यधिक महत्त्व देते हैं क्योंकि यह भावनाओं को प्रबंधित करने, प्रभावी ढंग से सहयोग करने और मजबूत पारस्परिक कौशल प्रदर्शित करने में मदद करता है, जो कार्यस्थल के लिए महत्वपूर्ण होता है।
  - उदाहरण के लिए- **सहकर्मियों के साथ समन्वय, काम के दबाव को संभालना।**
- **अन्य:** प्रभावी नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता, आदि

भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने के तरीके

- **सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा (SEL) कार्यक्रम:** इसे स्टूडेंट्स को **अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने, सकारात्मक लक्ष्य** निर्धारित करने तथा उन्हें प्राप्त करने, **परानुभूति महसूस करने** और उसे **प्रदर्शित करने, सकारात्मक संबंध स्थापित करने** तथा उसे बनाए रखने एवं **जिम्मेदारीपूर्ण निर्णय लेने के लिए आवश्यक कौशल सिखाने** हेतु डिज़ाइन किया गया है।
- **सहयोगात्मक शिक्षण: ग्रुप प्रोजेक्ट्स, सहकर्मी से सीखना** और **टीम आधारित गतिविधियां** स्टूडेंट्स को **टीमवर्क, संप्रेषण और संघर्ष समाधान कौशल को बेहतर बनाने** में सहायता करती हैं।
  - उदाहरण के लिए- **हैप्पीनेस करिकुलम, दिल्ली।**
- **चिंतन और आत्म-जागरूकता अभ्यास:** ध्यान, डायरी लेखन आदि स्टूडेंट्स को आत्म-जागरूकता और आत्म-संयम विकसित करने में मदद करता है।
- **शिक्षकों और कर्मचारियों को सशक्त बनाना:** EI **शिक्षकों को भावनात्मक जरूरतों को पहचानने में मदद करता है।** साथ ही, यह **भावनात्मक रूप से सुरक्षित कक्षाएं सुनिश्चित करने में मदद** करता है और **दंडात्मक उपायों के बजाय सुधारात्मक प्रथाओं को लागू करने में भी मदद** करता है आदि।
- **फीडबैक सिस्टम: छात्र सर्वेक्षण, अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव और सहकर्मी के साथ संबंध, अनुशासन रेफरल जैसे व्यवहार संकेतकों** के माध्यम से उठाए गए कदमों के प्रभाव को मापना।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** में मूलभूत और संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ-साथ **सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक** स्वभाव पर ध्यान केंद्रित करके प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता को विकसित करने पर जोर दिया गया है।
  - **उदाहरण के लिए-** विषयों को चुनने की स्वतंत्रता के साथ **बहु-विषयक शिक्षा,** पेशेवर अकादमिक और कैरियर परामर्श आदि।

निष्कर्ष

भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह बेहतर लर्निंग, मानसिक सेहतमंदी और सामाजिक कौशल विकसित करने हेतु उपयोगी है। शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करने से सहानुभूतिपूर्ण, चुनौती से बेहतर तरीके से निपटने वाले और जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण होता है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP), 2020 के समग्र विकास के लक्ष्य के अनुरूप है।

4.5. प्रसन्नता/ सुख (Happiness)

परिचय

"प्रसन्नता एक चयन है जो कभी-कभी प्रयास की मांग करता है" - ऐस्चिलस। यह उद्धरण हाल ही में जारी **वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट 2025** में भारत की स्थिति को देखते हुए और महत्वपूर्ण हो जाता है। इसमें **147 देशों की सूची में भारत 118वें स्थान** पर है। भारत की स्थिति इसके पड़ोसी देशों, जैसे- नेपाल और पाकिस्तान से भी खराब है।

प्रसन्नता को आम तौर पर **"अपने संपूर्ण रूप से जीवन के व्यक्तिपरक आनंद"** के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह उस स्तर को दर्शाता है जिस स्तर तक कोई व्यक्ति **अपने जीवन को अपने अनुकूल और आनंदमय** मानता है। विद्वान आम तौर पर प्रसन्नता को दो मौलिक प्रकारों में विभाजित करते हैं:-

प्रसन्नता के दो मार्ग

हेडोनिक प्रसन्नता (जेरमी बेंथम)

मुख्य विशेषताएं

- आनंद को अधिकतम करना।
- संवेदी और भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त करना।
- आनंद और दुःख के बीच उपयोगितावादी गणना करना।

यूडेमोनिक प्रसन्नता (अरस्तु)

मुख्य विशेषताएं

- व्यक्ति की ताकत, क्षमताओं और मूल्यों का उपयोग करना।
- इसे मानसिक कुशलक्षेम (Psychological Well-Being) के नाम से भी जाना जाता है।
- व्यक्तिगत विकास, अर्थ और उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना।

प्रसन्नता की खोज: एक दार्शनिक यात्रा, पूर्व और पश्चिमी दृष्टिकोणों के आधार पर

भारतीय परिप्रेक्ष्य	पश्चिमी परिप्रेक्ष्य
चार्वाक नीतिशास्त्र: चार्वाक मानते हैं कि **काम (Enjoyment)** जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है और **अर्थ (Wealth)** उस लक्ष्य को पाने का साधन। **उद्धरण: *"यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्* - जब तक जियो, सुख से जियो"**	**एपिक्यूरियनवाद (मध्यम सुखवाद):** शारीरिक दर्द और मानसिक चिंता से मुक्ति असली प्रसन्नता है। **उदाहरण के लिए, आवश्यक और अनावश्यक सुखों के बीच संतुलन बनाना।**
भगवद् गीता (निष्काम कर्म): तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, उसके फल पर नहीं। **उद्धरण: *"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:"* - अध्याय 2, श्लोक 47**	**कांट (कर्तव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य):** "कर्तव्य के लिए कर्तव्य" का पालन करना, अर्थात्, नैतिक कर्तव्य ही व्यक्ति को वास्तविक प्रसन्नता की ओर ले जाता है।
बौद्ध धर्म (मध्यम मार्ग): सुख कहीं पहुँचने में नहीं, बल्कि जीवन को अनुभव करने में है। सुख का कोई मार्ग नहीं है, सुख ही मार्ग है **- महात्मा बुद्ध**	**लॉक (प्रसन्नता की खोज नैतिकता और सभ्यता की नींव है):** लॉक का कहना है कि यदि प्रसन्नता प्राप्त करने की हमारी कोई इच्छा नहीं होती, तो **हम भोजन करने और सोने जैसे साधारण सुखों से भी संतुष्ट** रहते, लेकिन **प्रसन्नता की इच्छा ही हमें आगे, महान और उच्च सुखों की ओर ले जाती है।**
भक्ति परंपरा (भक्ति और समर्पण के माध्यम से सुख): भौतिक और आध्यात्मिक सुख एक भावना (संवेग) और/या एक प्रसन्न मन की अवस्था है, जो आनंद, उत्साह, संतोष, प्रसन्नता और तीव्र प्रेम से युक्त होती है।	**उपयोगितावाद (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख):** जहां जेरेमी बेंथम सभी सुखों को मात्रात्मक रूप से समान मानते हैं, वहीं **जे.एस. मिल** सुखों के बीच गुणात्मक भेद करते हैं। मिल के अनुसार, उच्च सुख, जैसे- बौद्धिक, नैतिक और सौंदर्य अनुभव; निम्न सुखों, जैसे- इंद्रिय और शारीरिक आनंद; की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान होते हैं।
गुरु नानक (संतोख: संतोष): संतोष शाश्वत सुख है।	**स्टोइकवाद (नियंत्रण योग्य को नियंत्रित करना):** प्रसन्नता का केवल एक ही मार्ग है और वह है उन चीजों के बारे में चिंता करना बंद कर देना जो हमारी इच्छाशक्ति की सीमा से परे हैं। **उद्धरण: "तुम्हारा नियंत्रण केवल तुम्हारे मन पर है - बाहरी घटनाओं पर नहीं" - मार्कस ऑरेलियस।**
लोकोत्तर परिप्रेक्ष्य: उपनिषदिक परंपरा के अनुसार, **"सत्-चित्-आनंद" परम सत्य (ब्रह्म) के तीन गुणों को संदर्भित करता है: सत् (अस्तित्व/ होना), चित् (चेतना/ जागरूकता), और आनंद (परम सुख/ प्रसन्नता)।**	**ईसाई धर्मशास्त्र (सेंट ऑगस्टीन):** वास्तविक प्रसन्नता ईश्वर के साथ अंतिम मिलन में निहित है जिसे विश्वास और दिव्य अनुग्रह के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान जीवन-शैली में प्रसन्नता के समक्ष मौजूद बाधाएं

बाह्य कारक

- **नकारात्मक सामाजिक तुलनाएं:** जैसे- अवास्तविक मानक (जैसे- शरीर, सुंदरता, आदि)।
- **सामाजिक समर्थन प्रणालियों की कमी:** 2023 में हुए एक सर्वे के अनुसार, दुनिया भर में 19% युवाओं ने बताया कि उनके पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिस पर वे सामाजिक सहयोग के लिए विश्वास कर सकें।
- **वित्तीय दबाव और असुरक्षा:** उदाहरण के लिए, गरीबी एक ऐसा बोझ है जो व्यक्तियों की सोचने-समझने की शक्ति को कम कर देती है।
- **हानिकारक पदार्थों के संपर्क में आना:** उदाहरण के लिए, मादक पदार्थों का सेवन मानसिक स्वास्थ्य को बिगाड़ देती है और व्यक्ति को अशांत और दुखी बना देता है।

आंतरिक कारक

- **आत्म-संदेह एवं आत्म-सम्मान में कमी:** उदाहरण के लिए, जब व्यक्ति खुद को नकारात्मक रूप में देखने लगता है तो इससे चिंता, अवसाद और दूसरों के प्रति कृतज्ञता की भावना कम हो जाती है।
- **वर्तमान क्षण में न जीना:** लगातार नकारात्मक सोचना, हर बात को ज़्यादा सोचते रहना और अनसुलझे मानसिक आघात इंसान को अंदर ही अंदर तोड़ देते हैं। वह हर समय यही सोचता रहता है कि "कहीं कुछ गलत न हो जाए।"
- **अत्यधिक स्क्रीन टाइम:** आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, स्क्रीन टाइम में वृद्धि और खुले में खेलने के समय में कमी युवाओं को एक 'चिंतित पीढ़ी' के रूप में तब्दील कर रही है।

सिविल सेवक नागरिकों के बीच प्रसन्नता के स्तर को कैसे बढ़ा सकते हैं

- **जन-केंद्रित गवर्नेंस और कुशल सेवा वितरण को अपनाना:** उदाहरण के लिए, **ग्राम पंचायत विकास योजना।**
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** ई-गवर्नेंस, सूचना का अधिकार, सामाजिक लेखा-परीक्षण आदि के माध्यम से भ्रष्टाचार को कम करना।
- **मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए, टेली-मानस (टोल फ्री मानसिक स्वास्थ्य हेल्पलाइन)
    - लचीले काम के घंटे आदि के प्रावधानों द्वारा **वर्क-लाईफ संतुलन,** आदि।
- **सामाजिक सद्भाव और समुदाय निर्माण को प्रोत्साहन देना:** उदाहरण के लिए, सांप्रदायिक तनाव को कम करने के लिए अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **प्रसन्नता को नीति का एक घटक बनाना:** उदाहरण के लिए, ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस (भूटान), हैप्पीनेस मंत्री, आदि।

निष्कर्ष

प्रसन्नता, जिसे अक्सर एक चमत्कार के रूप में देखा जाता है, वास्तव में सुनियोजित प्रैक्टिस और रणनीतियों के माध्यम से बढ़ाई जा सकती है जो समग्र रूप से व्यक्ति के कल्याण को बेहतर बनाते हैं। अपने जीवन में प्रसन्नता के स्तर को बढ़ाने और उसे बनाए रखने के लिए, व्यक्तियों को ऐसी गतिविधियों में भाग लेने और ऐसी आदतें अपनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जो प्रसन्नता के हेडोनिक और यूडेमोनिक, दोनों आयामों के अनुरूप हों।

> समाज की प्रसन्नता ही सरकार का उद्देश्य है।
>
> **-जॉन एडम्स**

Lakshya
UPSC प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा 2026 के लिए रणनीतिक रिवीजन, प्रैक्टिस और परामर्श हेतु 13.5 माह का कार्यक्रम)
WWW.VISIONIAS.IN
8468022022
लक्ष्य प्रीलिम्स और मेन्स इंटीग्रेटेड मेंटरिंग प्रोग्राम 2026
प्रारंभ: 16 जुलाई

4.6. अच्छा जीवन: कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाने की कला (Good Life: The Art of Balancing Work and Leisure)

परिचय

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेलों के महत्त्व को रेखांकित करते हुए, **बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन** के तहत **11 जून को अंतर्राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाने** की घोषणा की गई। इसमें **"बच्चों के लिए आराम और अवकाश के अधिकार[5]"** को शामिल किया गया है। एंग्लिया रस्किन विश्वविद्यालय के हालिया शोध से पता चलता है कि पेंटिंग करना, बुनाई करना या मिट्टी के बर्तन बनाने जैसी अवकाशकालीन यानी लेज़र गतिविधियां **कार्य की तुलना में हमारे कल्याण में अधिक वृद्धि** करती है।

कार्य और अवकाश के बीच संबंध

कार्य और अवकाश प्रायः एक-दूसरे के पूरक होते हैं, हालांकि कभी-कभी इनके मध्य विपरीत संबंध भी होता है।

पूरक संबंध (Complementary Relationship)

- **विकल्पों के चुनाव की स्वतंत्रता और आंतरिक प्रेरणा:** रॉबर्ट रॉबिन्सन ने एक बार कहा था कि "अवकाश एक ऐसा कार्य है जिसे करने के लिए आप स्वेच्छा से तैयार होते हैं।" इस प्रकार, जब कोई कार्य का चुनाव हम अपनी पसंद के आधार पर करते हैं, तो यह अवकाश जैसा लग सकता है।
  - उदाहरण के लिए- उपन्यास लिखना या समाचार-पत्रों के लिए कॉलम लिखना उन लोगों को अवकाश जैसा लग सकता है जो पढ़ने और लिखने में आनंद का अनुभव करते हैं।

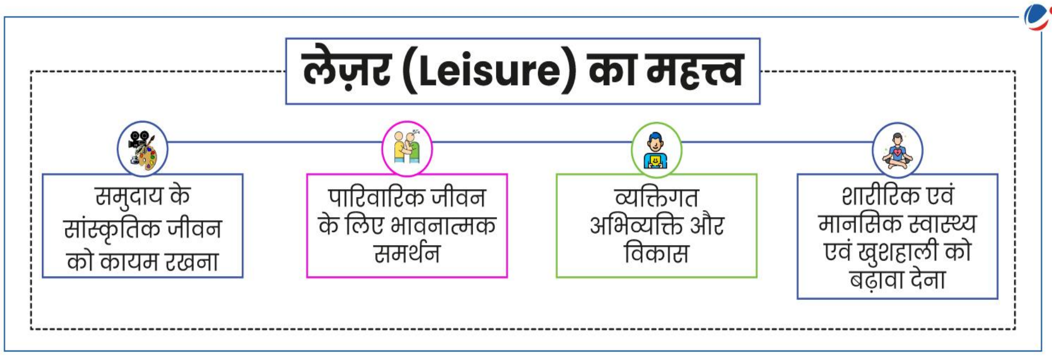

- **कल्याण सुनिश्चित करना:** वोल्टेयर ने काम के लाभकारी पहलुओं पर जोर देते हुए कहा है कि **"काम बोरियत, बुराई और गरीबी को दूर करता है।"** इसलिए, अवकाश की तरह ही, कार्य भी लोगों की भलाई में योगदान दे सकता है।
  - उदाहरण के लिए- **रोजगार लोगों को संबंध बनाने** और भावनाओं को नियंत्रित करने की क्षमता में सुधार करने का अवसर उपलब्ध कराता है। साथ ही, यह मानसिक क्षति से निपटने और समस्या-समाधान संबंधी कौशल में सुधार करने में मदद करता है।

विपरीत संबंध

- **स्वतंत्रता बनाम जिम्मेदारियां: स्वतंत्रता और आनंद से युक्त अवकाश** से **रचनात्मकता, परफॉरमेंस** और **नौकरी से संतुष्टि के स्तर में सुधार** होता है।
- **आत्म-अभिव्यक्ति बनाम व्यक्तिगत विकास:** कार्यस्थल पर एक निश्चित मानक से **खराब प्रदर्शन स्वीकार्य नहीं हो सकता** है। हालांकि, इन मानकों को पूरा करने के लिए अत्यधिक प्रयास करना व्यक्ति की आत्म-अभिव्यक्ति की क्षमता को नुकसान पहुंचा सकता है, जो अवकाश का एक महत्वपूर्ण पहलू होता है।

[5] The right of the child to rest and leisure

© Vision IAS

ऐसे कारक जो कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाए रखना मुश्किल बनाते हैं

कार्यस्थल की संस्कृति: एक पूंजीवादी विचारधारा पर आधारित कार्यस्थल संस्कृति में कर्मचारियों से **जॉब क्रीप** (अपने कार्य के लिए निर्धारित दायरे से बाहर जाकर अतिरिक्त कार्य करना) की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार, कर्मचारियों को **अपनी महत्ता सिद्ध करने** या पदोन्नति पाने हेतु अतिरिक्त घंटों तक कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जाता है

तकनीकी प्रगति: ई-मेल और सेल फोन जैसी तकनीक ने **कार्यस्थल और घर के बीच अंतर को धुंधला कर दिया** है, जिससे इन्हें **डिस्कनेक्ट** करना मुश्किल हो जाता है।

अधिक कमाने की इच्छा: कुछ लोग **भविष्य के बारे में अनिश्चितता** अथवा **धन-संपत्ति की चाहत** के कारण अपनी जरूरतों से अधिक काम करते हैं।

भागदौड़ वाली संस्कृति: समाज प्रायः **व्यस्त रहने को सफलता की निशानी के रूप में महिमामंडित** करता है।

आगे की राह

- **सकारात्मक कार्य संस्कृति:** सहभागिता आधारित, लोकतांत्रिक नेतृत्व कौशल को अपनाकर, खुले तौर पर विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर सकारात्मक कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
    - WEF के अनुसार, श्रमिकों को सप्ताह में एक अतिरिक्त दिन की छुट्टी देने से वास्तव में उत्पादकता (खुश होने की भावना) में वृद्धि ही होती है।
- **सीमित तर्कसंगतता:** परफेक्शनिज्म का पीछा करने के बजाय, सीमित तर्कसंगतता को स्वीकार किया जाना चाहिए और लोगों को कभी-कभी कुछ कार्यों में असफल होने पर भी नकारात्मक परिणामों से छूट देनी चाहिए।
    - **'सीमित तर्कसंगतता'** शब्द निर्णय लेने वाले की **संज्ञानात्मक सीमाओं** को ध्यान में रखते हुए तर्कसंगत निर्णय लेने को संदर्भित करता है।
- **लचीलापन अपनाना:** यद्यपि प्रौद्योगिकी ने कार्यस्थल और घर के बीच के अंतर को धुंधला कर दिया है, परन्तु यह महत्वपूर्ण लचीलापन भी प्रदान करता है।
    - कार्य की समय अवधि में लचीलापन और कार्य की हाइब्रिड पद्धतियों के कारण कार्य तथा निजी जीवन में संतुलन स्थापित होता है। इसकी सहायता से नौकरी में संतुष्टि और उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।
- **सीमाएं निर्धारित करना:** काम के घंटे स्पष्ट रूप से निर्धारित किए जाने चाहिए और उनका पालन करना चाहिए। कार्य और घरेलू जीवन के बीच अंतर बनाए रखने के लिए इन घंटों के बाहर काम-संबंधी ई-मेल देखने या कॉल उठाने से बचना चाहिए।

निष्कर्ष

अरस्तू और रवींद्रनाथ टैगोर दोनों ही एक **परिपूर्ण और संतुष्ट जीवन बिताने के लिए अवकाश के महत्त्व** पर जोर देते हैं। अरस्तू का तर्क है कि सच्चा अवकाश व्यक्तियों को संगीत, कविता और दर्शन जैसे **श्रेष्ठ और रुचिकर गतिविधियों** में शामिल होने का अवसर प्रदान करता है। इसी तरह, टैगोर यह चेतावनी भी देते हैं कि **अवकाश के बिना, हम केवल कर्मचारी** बनकर रह जाते हैं और किसी गहन उद्देश्य के बग़ैर बिना सोचे-समझे काम करते रहते हैं।

> जीवन के आनंद का भरपूर स्वाद लेने के लिए संयमित रहें।
>
> **-एपिकुरस**

SANDHAN
VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
Vision IAS की ओर से पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज

4.7. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
इच्छामृत्यु	हानि न पहुंचाने का सिद्धांत (कोई नुकसान न पहुंचाना)	भ्रामक सूचना	शक्ति का पृथक्करण
सामाजिक स्थिति का दबाव	करुणा	एपिक्यूरियनवाद (मध्यम सुखवाद)	स्टोइकवाद
नैतिकता के रूप में सद्गुण	संवैधानिक नैतिकता	चुनाव की स्वतंत्रता	निष्काम कर्म

4.8. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

तुरंत न्याय का उदय नैतिक शासन और विधिक संस्थाओं में जनता के विश्वास के क्षरण को दर्शाता है। विश्लेषण कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
वर्तमान परिदृश्य में तुरंत न्याय के बढ़ते मामलों और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का संदर्भ प्रस्तुत कीजिए।	ऐसे मुद्दों पर चर्चा कीजिए जो विधिक संस्थाओं में नैतिक शासन और जनता के विश्वास के क्षरण को दर्शाते हैं, जैसे विधि के शासन का उल्लंघन आदि।	यह सुझाव देते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए कि तुरंत न्याय से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों को अक्षरशः लागू किया जाना चाहिए।

© Vision IAS

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़

देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं

- ✓ सामान्य अध्ययन
- ✓ निबंध
- ✓ दर्शनशास्त्र

2025	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

Scan the QR CODE *to* download VISION IAS app

ऑप्शनल सब्जेक्ट टेस्ट सीरीज़

- ✓ भूगोल
- ✓ समाजशास्त्र
- ✓ दर्शनशास्त्र
- ✓ हिंदी साहित्य
- ✓ राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

2025	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 13 JULY	हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

5. नैतिकता और व्यवसाय (Ethics and Business)

5.1. परोपकार: सामाजिक भलाई के लिए एक नैतिक अनिवार्यता (Philanthropy: A Moral Imperative for Social Good)

परिचय

"दूसरों की सेवा करना इस पृथ्वी पर हमारे रहने का किराया है" - मुहम्मद अली। यह विचार भारत में बढ़ती परोपकार की भावना को दर्शाता है। इंडिया फिलैन्थ्रॉपी रिपोर्ट 2025 के अनुसार, भारत में परोपकारी वित्त-पोषण में वृद्धि हो रही है, जिसका मुख्य कारण है- कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के तहत व्यय, अल्ट्रा-हाई-नेट-वर्थ वाले व्यक्तियों (UHNIs) का योगदान, और मध्य वर्ग में परोपकारिता की बढ़ती की संस्कृति। दान का उद्देश्य आमतौर पर जरूरतमंदों को तात्कालिक राहत प्रदान करना होता है, जबकि परोपकार का लक्ष्य **व्यापक स्तर पर और दीर्घकालिक रूप से सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाना** होता है, जिससे पूरे समुदायों का सतत विकास और उत्थान सुनिश्चित किया जा सके।

परोपकारिता का दार्शनिक आधार

भारतीय परिप्रेक्ष्य

- **चाणक्य का अर्थशास्त्र:** लोक कल्याण के लिए राज्य को अपने राजस्व का 1/6 भाग दान करना चाहिए।
- **विवेकानंद का 'दरिद्र नारायण' का विचार:** गरीबों की सेवा करना ईश्वर की पूजा करने के समान है।
- **गांधीजी का न्यासिता का सिद्धांत।**
- **धार्मिक:** उदाहरण- **हिंदू धर्म:** दान और दक्षिणा की अवधारणाएं; **इस्लाम:** ज़कात (निर्धारित दान) और सदकात (स्वैच्छिक दान) आदि

पश्चिमी परिप्रेक्ष्य

- **परिणामवादी दृष्टिकोण (सद्गुण नीतिशास्त्र):** उदारता और करुणा महत्वपूर्ण सदगुण हैं।
- **रॉल्स का सिद्धांत (निष्पक्षता के रूप में न्याय):** सबसे वंचित वर्गों को प्राथमिकता देना।
- **उदारवाद:** इसके समर्थक सरकार द्वारा प्रदान की गई सहायता की तुलना में परोपकारिता की नैतिक श्रेष्ठता पर जोर देते हैं।
- **अन्य:** उपयोगितावाद, कांट का नीतिशास्त्र (नैतिक दायित्व) आदि।

विकास के साधन के रूप में परोपकार का महत्त्व

- **वित्त-पोषण की कमी को समाप्त करना:** परोपकार, सरकारों द्वारा दी गई **बजटीय सहायता के पूरक** के रूप में कार्य करता है।
- **विकास संबंधी खामियों को दूर करना: उदाहरण के लिए, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन** ग्रामीण क्षेत्र में सार्वजनिक शिक्षा को बढ़ावा देता है।
- **नवाचार को बढ़ावा देना: उदाहरण के लिए,** बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन ने स्वच्छ भारत मिशन के अनुरूप स्वच्छता संबंधी नवाचारों को बढ़ावा दिया है।

परोपकारिता से जुड़ी नैतिक चुनौतियां

- **सामाजिक एजेंडे पर अभिजात वर्ग का कब्जा:** विशेषज्ञों का तर्क है कि बड़े दानदाता नीतिगत निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा, कई विद्वान यह मानते हैं परोपकारिता का उपयोग प्रायः कर चोरी और मनी लॉन्ड्रिंग जैसी गतिविधियों के लिए किया जाता है।
- **कॉर्पोरेट दुविधा:** व्यवसायों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। ऐसे में परोपकारी खर्चों को शेयरधारकों की संपत्ति के दुरुपयोग के रूप में देखा जा सकता है।
- **क्षेत्रीय और भौगोलिक असमानता:** परोपकारी दान प्रायः कुछ क्षेत्रों या शहरों तक केंद्रित हो गए हैं। **महाराष्ट्र और कर्नाटक को अधिकतम CSR फंड मिलता है, जबकि बिहार और ओडिशा इस मामले में काफी पीछे हैं।**
- **जवाबदेही और पारदर्शिता की कमी:** विदेशी फंडिंग प्राप्त करने वाले गैर-सरकारी संगठनों में से कुछ ही संगठन आयकर रिटर्न दाखिल करते हैं।

निष्कर्ष

परोपकार की आधारशिला ऐसे नैतिक मूल्यों पर टिकी होनी चाहिए जो समानता और न्याय को बढ़ावा देते हुए एक समानतावादी समाज की दिशा में कार्य करे। इसकी विशिष्टता यह है कि यह समाज के उन अंतिम वर्गों तक पहुंचने की क्षमता रखता है, जहां देश के करोड़ों लोग निवास करते हैं – ऐसे क्षेत्र जहां

न तो राज्य की योजनाएं प्रभावी रूप से पहुंच पाती हैं और न ही बाजार की ताकतें। इसलिए, परोपकारिता का प्रभावी उपयोग समाज के सबसे वंचित और उपेक्षित वर्गों तक सहायता पहुंचाने के लिए किया जाना चाहिए।

> परोपकार का अर्थ धन देना नहीं बल्कि समस्याओं का समाधान करना है।
>
> **-बिल गेट्स**

5.2. सर्विलांस कैपिटलिज्म (Surveillance Capitalism)

परिचय

हालिया वर्षों में डिजिटल सूचना का विस्तार काफी तेजी से हुआ है। 1986 में यह केवल 1% था, जो 2013 तक 98% तक पहुंच गया। इसके चलते व्यक्तिगत डेटा 21वीं सदी में नई सम्पति बनकर उभरा है। इस बदलाव ने **सर्विलांस कैपिटलिज्म** के उदय को बढ़ावा दिया है। यह एक ऐसी प्रणाली है, जहां मानव अनुभवों और व्यवहारों को लाभ के लिए संसाधन के रूप में जुटाया जाता है। **गूगल, मेटा और अमेजन** जैसी दिग्गज तकनीकी कंपनियों के नेतृत्व में इस बदलाव ने निजता, स्वायत्तता और लोकतांत्रिक जवाबदेही के बारे में गहरी **नैतिक, सामाजिक और विनियामकीय चिंताएं** उत्पन्न की हैं।

सर्विलांस कैपिटलिज्म क्या है?

- **परिभाषा:** यह एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जहां निजी कंपनियां (जैसे- अमेज़न, अल्फाबेट, मेटा, आदि) मानव व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने और उसे प्रभावित करने के लिए सुनियोजित रूप से व्यक्तिगत डेटा एकत्र करती हैं, उनका विश्लेषण करती हैं और लाभ कमाती हैं, जैसे- लक्षित विज्ञापन, मूल्य निर्धारण, बीमा संबंधी निर्णय, आदि।
- **कार्यप्रणाली:** यह **यूजर डेटा** निकालकर, AI के माध्यम से **व्यवहार** का विश्लेषण करके, तथा उन्हीं यूजर को टारगेट करने वाले **विज्ञापनों और डिजिटल नजिंग** के माध्यम से **निर्णयों** को प्रभावित करने के लिए अंतर्दृष्टि का उपयोग करता है।

सर्विलांस कैपिटलिज्म की श्रेणियां

कॉर्पोरेट सर्विलांस	राज्य-कॉर्पोरेट गठजोड़
कंपनियां **टार्गेटेड विज्ञापन** के लिए भारी मात्रा में उपयोगकर्ताओं का डेटा एकत्र करती हैं। उदाहरण के लिए- फेसबुक विज्ञापन दिखाने के तरीके को बेहतर बनाने के लिए ब्राउज़िंग आदतों पर नज़र रखता है।	सरकारें **सुरक्षा और खुफिया जानकारी** के बहाने निजी कंपनियों के साथ सहयोग करती हैं। उदाहरण के लिए- चीन की सामाजिक क्रेडिट प्रणाली।

पारंपरिक पूंजीवाद बनाम सर्विलांस कैपिटलिज्म

विशेषताएं	पारंपरिक पूंजीवाद	सर्विलांस कैपिटलिज्म
संसाधन	श्रम और प्राकृतिक संसाधन (जैसे- कोयला, इस्पात, आदि)	यूजर्स का व्यक्तिगत डेटा
मूल्य सृजन	वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन (जैसे- फोर्ड की असेंबली लाइन)	डिजिटल हस्तक्षेप के जरिए व्यवहार को प्रभावित करना
लाभ मॉडल	भौतिक उत्पादों या सेवाओं को बेचना	लक्षित विज्ञापन, AI-संचालित मूल्य निर्धारण के जरिए डेटा का मुद्रीकरण

सर्विलांस कैपिटलिज्म से संबंधित नैतिक निहितार्थ

- **हेरफेर करना:** एल्गोरिदम के कारण यूजर्स के निर्णयों को आकार देने के लिए **संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों** का फायदा उठाया जाता है।
    - उदाहरण के लिए- यूट्यूब की रेकमंडेशन प्रणाली भावनात्मक रूप से उत्तेजित कंटेट को बढ़ावा देकर यूजर्स के जुड़ाव को बढ़ाती है।
- **गोपनीयता का क्षरण:** डेटा अक्सर उचित सहमति के बिना एकत्र किया जाता है, जिसकी मदद से बड़े पैमाने पर निगरानी की जाती है।
    - उदाहरण के लिए- 2021 में फ्रांस में क्लियरव्यू AI को बिना कानूनी अनुमति के लोगों का डेटा इकट्ठा करने के कारण रोक दिया गया था।
- **व्यक्तिगत डेटा का वस्तु के रूप उपयोग:** उदाहरण के लिए- 2018 में, अमेरिका में स्लीप एपनिया मशीनों ने यूजर्स के डेटा को गुप्त रूप से बीमा कंपनियों को भेजा था, जिससे बीमा कवरेज प्रभावित हुआ था।
- **लोकतांत्रिक मूल्यों का उल्लंघन:** राज्य और कंपनियों द्वारा की जाने वाली निगरानी **नागरिक स्वायत्तता** का क्षरण करती है।
    - उदाहरण के लिए- भारत के IT नियम (2021) में राष्ट्रीय सुरक्षा और सरकारी नियंत्रण के बीच स्पष्टता का अभाव है।
- **मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जोखिम:** उदाहरण के लिए- सोशल मीडिया एल्गोरिदम उन कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं जो क्रोध और भय को ट्रिगर करते हैं तथा राजनीतिक ध्रुवीकरण को बढ़ावा देते हैं।

सर्विलांस कैपिटलिज्म को नियंत्रित करने में मौजूद चुनौतियां

- **विनियमन:** वर्तमान नियम डेटा को वस्तु के रूप में खरीदने और बेचने की व्यवस्था को खत्म करने में सक्षम नहीं हैं।
- **प्रौद्योगिकी:** AI और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) के तेजी से विकास के चलते **विनियामकीय फ्रेमवर्क अप्रासंगिक बन जाते** है।
- **कॉर्पोरेट-राज्य की मिलीभगत:** जैसे- खुफिया एजेंसियों के साथ डेटा साझा करना, तो सार्वजनिक निगरानी कम हो जाती है और यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि कौन जिम्मेदार है।

सर्विलांस कैपिटलिज्म को विनियमित करने के प्रयास

वैश्विक प्रयास

- **यूरोपीय संघ का जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन (2018):** यह डेटा एकत्र करने के संबंध में उपभोक्ताओं व यूजर्स की सहमति को लागू करता है और उल्लंघन की स्थिति में जुर्माना लगाता है।
- **कैलिफोर्निया कंज्यूमर प्राइवेसी एक्ट (2020):** यह कैलिफोर्निया के निवासियों को निम्नलिखित अधिकार देता है:
    - लोग जान सकते हैं कि कंपनियां उनके बारे में कौन-सी निजी जानकारी इकट्ठा कर रही हैं।
    - लोग कंपनियों को अपनी जानकारी बेचने से मना कर सकते हैं, आदि।

भारत में किए गए प्रयास

- **के.एस. पुट्टास्वामी मामला (2017):** भारत के सुप्रीम कोर्ट ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत निजता को मौलिक अधिकार घोषित किया।
- **डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण (DPDP) अधिनियम (2023):** यह डेटा प्रसंस्करण के लिए संबंधित व्यक्ति की सहमति को अनिवार्य करता है, व्यक्तियों को अपने डेटा को एक्सेस और डिलीट करने में सक्षम बनाता है।

आगे की राह

- **मजबूत विनियामकीय फ्रेमवर्क:** उदाहरण के लिए- रियायत को सीमित करके और न्यायिक निरीक्षण सुनिश्चित करके भारत को **DPDP अधिनियम को मजबूत करना चाहिए।**
- **एंटीट्रस्ट उपयोग:** बड़ी टेक कंपनियों के तकनीकी एकाधिकार को समाप्त करके उनकी अनियंत्रित शक्ति को कम करना चाहिए।
- **वैश्विक सहयोग:** इस संबंध में अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए, ताकि कम-विनियमित देशों में डेटा के दुरुपयोग को रोका जा सके।
- **प्रौद्योगिकी में नैतिक मूल्यों का समावेशन:** टेक कंपनियों को **निजता-आधारित डिजाइन** अपनाने हेतु प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि निगरानी (Surveillance) को शुरुआती स्तर पर ही कम किया जा सके।

निष्कर्ष

सर्विलांस कैपिटलिज्म, किसी व्यक्ति की सहमति के बिना उसके व्यक्तिगत डेटा का मौद्रिक लाभ उठा करके उसकी निजता और स्वायत्तता को कम करता है। इस समस्या से निपटने के लिए सख्त नियम बनाने होंगे, नैतिकता आधारित तकनीकी डिजाइन को बढ़ावा देना होगा और यूजर्स के अधिकारों तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु वैश्विक सहयोग बढ़ाना होगा।

> जो जनभावना को आकार देता है, वह कानून बनाने या निर्णय सुनाने वाले से भी अधिक प्रभावशाली होता है।
>
> **-अब्राहम लिंकन**

5.3. व्यावसायिक छंटनी की नैतिकता (Ethics of Business Downsizing)

परिचय

हाल ही में, माइक्रोसॉफ्ट ने अपने वैश्विक कर्मचारियों के **3% की छंटनी** की घोषणा की है, जिससे लगभग 6,000 कर्मचारी विभिन्न स्तरों, टीमों और क्षेत्रों में प्रभावित हुए हैं। ऐसे कदम मुख्यतः **ऑटोमेशन, विलय और अधिग्रहण, नौकरी आउटसोर्सिंग** जैसे कारकों की वजह से उठाए गए हैं। हालांकि, यह छंटनी **उत्पादकता, लाभ और प्रतिस्पर्धात्मकता** बढ़ाने के लिए की जा रही है, लेकिन इसे **व्यावसायिक नैतिकता (Business Ethics)** के सिद्धांत के विरुद्ध भी माना जा रहा है।

व्यावसायिक नैतिकता के बारे में

- **अर्थ:** यह **आधुनिक कॉर्पोरेट संस्कृति** का एक महत्वपूर्ण आयाम है जो **व्यक्तियों, कंपनियों** और **व्यावसायिक उद्यमों** का मार्गदर्शन करता है।
- **विशेषताएं:** यह सिद्धांतों और मूल्यों का एक समूह है, जैसे- विश्वास निर्माण, न्यायसंगत प्रतिस्पर्धा, सत्यनिष्ठा, वैधता, कॉर्पोरेट प्रशासन और व्यक्तिगत नैतिक विकास, आदि।
    - यह **सद्गुण नीतिशास्त्र (Virtue Ethics)** के तत्वों द्वारा निर्देशित होती है।
    - उदाहरण के लिए, **इन्फोसिस** जैसी कंपनियों ने निर्णय लेने में नैतिक मार्गदर्शन हेतु **आचार संहिता और नैतिकता को** लागू किया है, ताकि व्यवसाय में सही निर्णय लिए जा सके।

विभिन्न हितधारकों के प्रति व्यवसायों की जिम्मेदारी

कर्मचारी	कर्मचारियों और श्रमिकों के भीतर मजबूत नैतिकता विकसित करता है, जिससे न केवल संगठनों को लाभ होता है, बल्कि व्यक्तियों को एक **मजबूत नैतिक दिशा** विकसित करने में भी मदद मिलती है। ➢ एक वैश्विक आतिथ्य कंपनी **हिल्टन** अपनी नैतिक प्रबंधन पद्धतियों के कारण **ग्रेट प्लेस टू वर्क (2024)** रैंकिंग में शीर्ष पर रही।
उपभोक्ता	यह एक निवारक तंत्र के रूप में कार्य करता है, व्यवसायों को **अनुचित** या **भ्रामक प्रथाओं** में शामिल होने से रोकता है। ➢ एप्पल अपनी iCloud सेवाओं में **उन्नत डेटा सुरक्षा (ADP)** सुविधा प्रदान करता है, जिससे एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन का लाभ मिलता है।
समाज	**व्यवसाय न्यायसंगत** और **ईमानदार प्रतिस्पर्धा** को बढ़ावा देने हेतु आधार बनते हैं। ➢ जैसा कि **रतन टाटा** ने एक बार टिप्पणी की थी- "व्यवसायों को केवल अपनी कंपनियों के हितों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उन समुदायों की सेवा भी करनी चाहिए जिनसे वे जुड़े हैं।"

व्यावसायिक छंटनी में शामिल नैतिक दुविधाएं

- **उपयोगितावाद बनाम कांटियन पूंजीवाद[6]:** उपयोगितावादी दृष्टिकोण के अनुसार, छंटनी को दिवालियापन से बचने के लिए सबसे कम हानिकारक विकल्प माना जाता है (अधिकतम लोगों का अधिकतम लाभ)।
    - हालांकि, इमैनुअल कांट की नैतिक विचारधारा के अनुसार, किसी लक्ष्य (जैसे- मुनाफा या हितधारकों के लाभ) को प्राप्त करने हेतु किसी कर्मचारी को केवल एक साधन (छंटनी के माध्यम से) के रूप में प्रयोग करना नैतिक नहीं है।

---

[6] Utilitarianism Vs Kantian Capitalism

© Vision IAS

- **व्यक्तिवाद बनाम कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR): व्यक्तिवाद** व्यवसाय के मालिकों या शीर्ष प्रबंधन को लाभप्रदता और स्वहित के आधार पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता और अधिकार पर बल देता है, तथा अधिकतम लाभ के लिए कर्मचारियों की छंटनी को उचित ठहराता है।
  - वहीं, **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)** किसी कंपनी की अपने कर्मचारियों, समुदायों और अन्य हितधारकों के कल्याण के प्रति नैतिक जिम्मेदारी को दर्शाता है, जो छंटनी की प्रवृत्ति का विरोध करता है।
- **कर्तव्यनिष्ठ बनाम परिणामवादी दृष्टिकोण[7]: कर्तव्यनिष्ठ दृष्टिकोण** छंटनी को उचित नहीं ठहराता, क्योंकि छंटनी से निष्पक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन होता है और इसमें कर्मचारियों को केवल लक्ष्य प्राप्ति का एक साधन माना जाता है, भले ही इससे कंपनी को अधिक लाभ क्यों न हो।
  - वहीं, **परिणामवादी या टेलीऑजिकल दृष्टिकोण** परिणामों पर केंद्रित होता है और यदि छंटनी से शेष नौकरियां बचती हैं, कार्यकुशलता बढ़ती है और कंपनी टूटने से बचती है, तो वह इसे उचित ठहराता है।
- **नैतिक सापेक्षवाद बनाम न्याय का सार्वभौमीकरण:** नैतिक सापेक्षवाद यह मानता है कि कोई एक सही सिद्धांत सभी पर लागू नहीं हो सकता। जबकि, न्याय का सार्वभौमिक सिद्धांत यह कहता है कि सभी के साथ बिना किसी भेदभाव के निष्पक्ष व्यवहार होना चाहिए, चाहे वह किसी भी संदर्भ में हो।

आगे की राह

- **अंतिम उपाय के रूप में छंटनी:** व्यावसायिक प्रबंधन को पहले अन्य विकल्पों की तलाश करनी चाहिए, जैसे- **मार्केटिंग खर्च में कटौती, यात्रा व्यय को कम करना, नई भर्तियों पर रोक आदि।**
- **स्वैच्छिक छंटनी (Voluntary Layoffs):** यह एक ऐसी रणनीति है, जिसमें कर्मचारियों को आकर्षक सेवा निवृत्ति पैकेज या नई करियर स्किल्स में ट्रांसफर का विकल्प देकर स्वैच्छिक रूप से छंटनी स्वीकार करने का अवसर दिया जा सकता है।
- **त्वरित प्रतिभा रणनीति (Agile Talent Strategy):** कंपनियां कर्मचारियों के दीर्घकालिक करियर को मजबूत करने के लिए लगातार करियर विकास और निरंतर सीखने की संस्कृति में निवेश कर रही है।
  - उदाहरण के लिए, अमेज़ॅन जैसी कंपनियां अपने कर्मचारियों को **'एजुकेशन ऐज़ ए बेनिफिट प्रोग्राम'** प्रदान करती हैं, जिससे उन्हें करियर में वृद्धि मिलती है।
- **छंटनी से प्रभावित कर्मचारियों की सहायता करना:** सामुदायिक कॉलेजों, पूर्व छात्र नेटवर्क आदि का लाभ उठाकर छंटनी किए गए कर्मचारियों को नया सार्थक रोजगार खोजने में सक्रिय रूप से मदद करना।
  - **नोकिया के ब्रिज कार्यक्रम** ने 2014 में छंटनी किए गए अपने 60% कर्मचारियों की मदद की।

निष्कर्ष

किसी बड़े पैमाने पर छंटनी करने से पहले, प्रबंधन को अन्य सभी **संभावित विकल्पों** पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, कर्मचारियों को भविष्य की तकनीकों के अनुसार कुशल बनाना न केवल कंपनी की दीर्घकालिक वृद्धि में सहायक होगा, बल्कि छंटनी की आवश्यकता को भी कम करेगा।

"किसी **व्यवसाय की एकमात्र सामाजिक जिम्मेदारी** यह है कि वह अपने संसाधनों का उपयोग लाभ बढ़ाने वाली गतिविधियों में करे।"

-मिल्टन फ्रीडमैन

एथिक्स केस स्टडीज मॉड्यूल
प्रवेश प्रारंभ
Available in English & हिन्दी

[7] Deontological vs Teleological

5.4. जिम्मेदार पूंजीवाद (Responsible Capitalism)

परिचय

भारत की वित्त मंत्री ने **मेक्सिको में टेक लीडर्स राउंडटेबल** को संबोधित करते हुए '**जिम्मेदार पूंजीवाद**' की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के लिए केवल **आर्थिक संवृद्धि प्राप्त करने की ही चुनौती नहीं** है, बल्कि **असमानता को कम करने और सभी के लिए अवसर पैदा करने की** भी चुनौती है।

जिम्मेदार पूंजीवाद (Responsible Capitalism) से क्या आशय है?

- यह वास्तव में एक प्रकार की **आर्थिक अप्रोच है, जो नैतिक मूल्यों को व्यावसायिक गतिविधियों में एकीकृत** करती है।
- **इसमें निम्नलिखित तत्व शामिल हैं-**
  - **व्यावसायिक लाभ को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ संतुलित** करने पर जोर देना,
  - व्यवसायियों द्वारा केवल शेयरधारकों के रिटर्न पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय **सामाजिक कल्याण, निष्पक्षता और पर्यावरणीय संधारणीयता में योगदान** देना।

जिम्मेदार पूंजीवाद की जरूरत क्यों है?

- **वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में सहायक:** यह कंपनियों और सरकारों को **असंधारणीयता, असमानता एवं अभाव जैसी चुनौतियों से निपटने में मदद** कर सकता है।
- **लंबे समय तक व्यवसाय को जारी रखने में सहायक:** केवल **लाभ कमाने वाला व्यवसाय मॉडल लंबे समय तक उपयोगी नहीं** रहता है। जिम्मेदार पूंजीवाद **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) जैसे तकनीकी परिवर्तनों को बेहतर तरीके से अपनाने में भी मदद** कर सकता है।
- **नैतिक शासन और हितधारक पूंजीवाद को प्रोत्साहन:** जिम्मेदार पूंजीवाद **निर्णय लेने में निष्पक्षता** को बढ़ावा देता है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी हितधारकों के साथ **न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाए और व्यवसाय के संचालन में कानूनी एवं नैतिक मानकों का पालन** किया जाए।

भारत में 'जिम्मेदार पूंजीवाद' को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR): कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135** के तहत CSR व्यय अनिवार्य किया गया है।
- **पर्यावरण कानून:** इनमें शामिल हैं- **प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, भारत स्टेज (BS)-VI के तहत वाहनों के लिए सख्त उत्सर्जन मानदंड,** आदि।
- **श्रम कानूनों में सुधार:** पहले के सभी श्रम कानूनों का **चार श्रम संहिताओं में विलय** कर दिया गया है। ये संहिताएं हैं- **वेतन संहिता; औद्योगिक संबंध संहिता; सामाजिक सुरक्षा संहिता; तथा उपजीविकाजन्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्यदशा संहिता।**
- **वित्तीय क्षेत्रक की पहलें:** इनमें शामिल हैं- भारतीय रिजर्व बैंक के **प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रकों को ऋण मानदंड,** भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) के **ग्रीन बॉन्ड दिशा-निर्देश,** आदि।

निष्कर्ष

जिम्मेदार पूंजीवाद एक ऐसा मार्ग प्रस्तुत करता है जिसमें आर्थिक संवृद्धि को सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ संतुलित किया जाता है। व्यावसायिक गतिविधियों में नैतिक मूल्यों को समाहित करके, भारत समावेशी और सतत विकास को सुनिश्चित कर सकता है, जिससे समाज के सभी वर्गों को लाभ मिले और आने वाली पीढ़ियों के हित भी सुरक्षित रहें।

 © Vision IAS

5.5. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
सर्विलांस कैपिटलिज्म	नजिंग	व्यवसायिक नैतिकता	कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)
नैतिक सापेक्षवाद	गोपनीयता का क्षरण	ट्रस्टीशिप सिद्धांत	जिम्मेदार पूंजीवाद

5.6. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

निगरानी पूंजीवाद डिजिटल युग में व्यक्तिगत स्वायत्तता और नैतिक शासन को कमजोर करता है।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
टेक कंपनियों द्वारा व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने और उसे प्रभावित करने के लिए व्यक्तिगत डेटा के मुद्रीकरण को निगरानी पूंजीवाद के रूप में परिभाषित करें। गोपनीयता, हेरफेर और सहमति से जुड़ी बढ़ती चिंताओं का उल्लेख करें।	नैतिक चिंताओं, जैसे- स्वायत्तता का उल्लंघन, गोपनीयता का क्षरण (एल्गोरिदम व्यवहार को ट्रैक करते हैं) आदि पर उदाहरणों सहित चर्चा करें।	प्राइवेसी बाई डिफ़ॉल्ट और ज़िम्मेदार नवाचार पर आधारित नैतिक तकनीकी डिजाइन का सुझाव देकर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

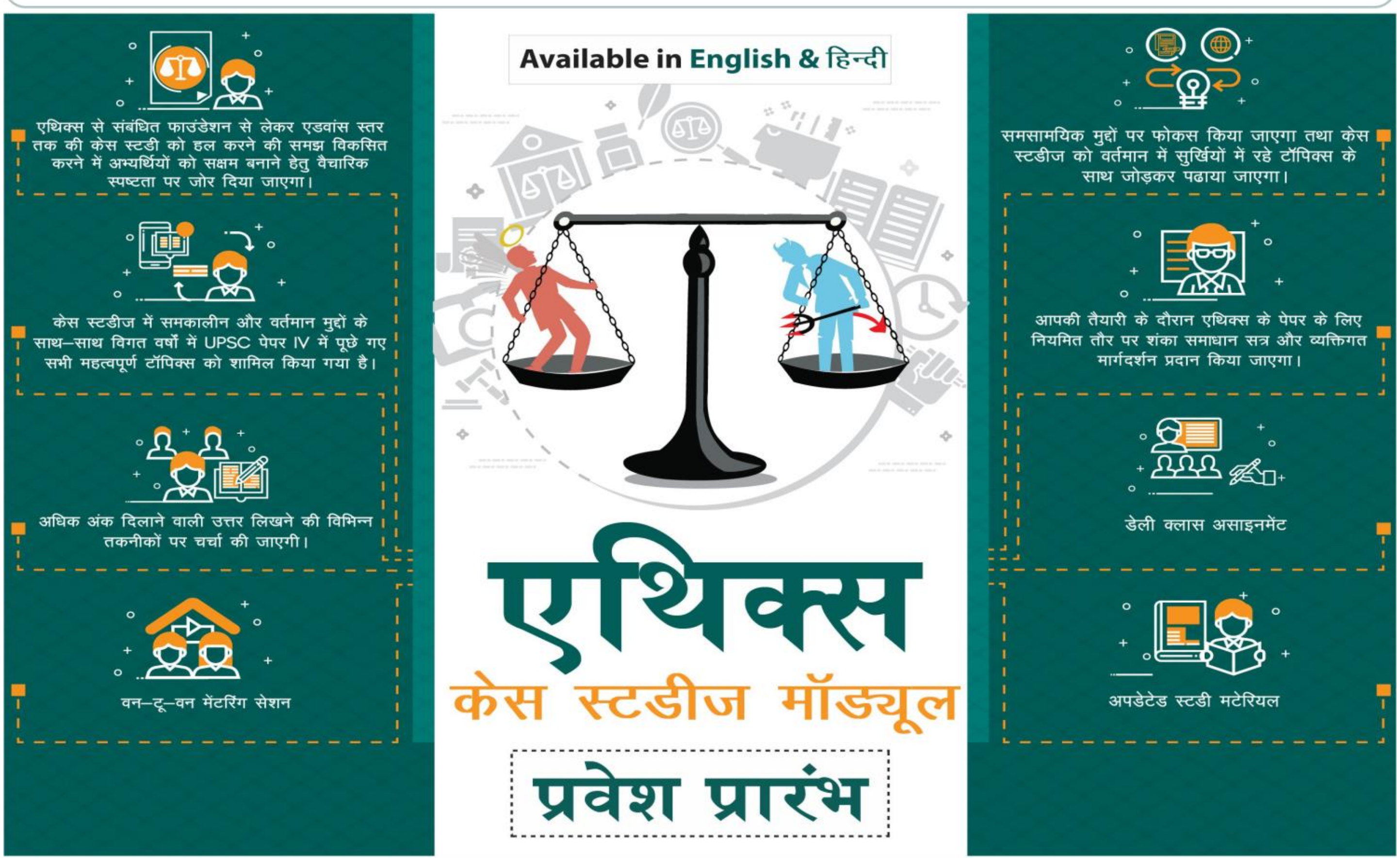

6. नैतिकता और मीडिया (Ethics and Media)

6.1. मीडिया एथिक्स और स्व-नियमन (Media Ethics and Self-Regulation)

परिचय

हाल ही में, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सरकार ने सभी मीडिया चैनलों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और व्यक्तियों से रक्षा अभियानों एवं सुरक्षा बलों की गतिविधियों की लाइव कवरेज या रियल-टाइम रिपोर्टिंग से परहेज करने को कहा। यह कदम संवेदनशील जानकारी के सार्वजनिक होने से रोकने के लिए उठाया गया, ताकि सैन्य अभियान की प्रभावशीलता पर असर न पड़े और जवानों की जान खतरे में न पड़े। यह स्थिति मीडिया एथिक्स के महत्वपूर्ण पहलू को उजागर करती है।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

प्रमुख हितधारक	हित
मीडिया अभिकर्ता	• मीडिया एथिक्स के माध्यम से प्रत्येक पत्रकारों द्वारा **सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता, गोपनीयता और निष्पक्षता** के सिद्धांतों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। • **स्व-विनियमन तंत्र के माध्यम से मीडिया की स्वायत्तता सुनिश्चित करना।**
सरकार	• मीडिया एथिक्स जीवन के **सार्वभौमिक सम्मान और विधि के शासन तथा वैधानिकता** इत्यादि जैसे मूल्यों को बढ़ावा देती है और उनका अनुरक्षण करती है।
सामान्य जन	• ऐसी जानकारी प्रदान करके जनता की सेवा करना, जो **निष्पक्ष** हो और जो ज्ञान और तर्क को बढ़ावा देती हो।
पुलिस	• मीडिया को **पुलिस के साथ सहयोगात्मक रूप से कार्य** करना चाहिए और उन्हें सहायता प्रदान करनी चाहिए। साथ ही, जब अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाता है तो मीडिया को इसकी सराहना करनी चाहिए। ○ प्रेस को भी **जनता की आंख और कान के रूप में कार्य करते हुए पुलिस को जवाबदेह बनाने की दिशा में काम करना** चाहिए।

क्यों भारत में प्रभावी मीडिया एथिक्स की आवश्यकता सर्वोपरि होती जा रही है?

- **गोपनीयता और सत्यनिष्ठा:** इसको लेकर गंभीर नैतिक चिंताएं व्यक्त की गई हैं, क्योंकि कई बार पत्रकारों ने **निजी जीवन में किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत आचरण** से संबंधित तथ्यों पर आधारित विशेष कहानियों को कवर किया है।
- **पूर्वाग्रह और व्यक्तिपरकता:** खबरों को अक्सर **एक विशेष शैली और पूर्वाग्रह में रिपोर्ट किया जाता है,** जिससे न्यूज़ मीडिया के इरादों और उद्देश्यों पर संदेह उत्पन्न होने लगता है।
- **उभरती दुविधाएं: बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों द्वारा क्रॉस-मीडिया स्वामित्व धारण** की प्रक्रिया के चलते जोखिमपूर्ण स्थितियों की उत्पत्ति में बढ़ोतरी हुई है।
- **स्व-नियामक तंत्र की अप्रभाविता:** इसके पीछे निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं:
  - **मीडिया और बाज़ार का दबाव:** राजस्व बढ़ाने की **व्यावसायिक अनिवार्यताओं** ने **पत्रकारिता की उत्कृष्टता** पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और यह अभी भी नकारात्मक प्रभाव पैदा कर रहा है।
  - **अपर्याप्त जुर्माना:** मौजूदा 1 लाख रुपये की जुर्माना राशि अप्रभावी साबित हुई है क्योंकि यह जुर्माना दोषी चैनल द्वारा संबंधित शो से अर्जित किये जाने वाले लाभ के अनुपात में बहुत कम है।

मीडिया एथिक्स के स्तंभ

- सत्य की खोज और उसकी रिपोर्टिंग
- नुकसान को कम करना
- स्वतंत्र रूप से काम करना
- जवाबदेह व पारदर्शी बने रहना

© Vision IAS

आगे की राह

- मीडिया की **स्व-नियमन प्रणाली** को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।
    - **हचिन्स आयोग की रिपोर्ट** में **प्रेस की स्वतंत्रता** का समर्थन किया गया और **स्व-नियमन** को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। साथ ही, इसमें कहा गया है कि **सरकारी हस्तक्षेप का उपयोग अंतिम उपाय के रूप में** किया जाना चाहिए।
    - **जुर्माने का निर्धारण** गलती करने वाले चैनल द्वारा **अर्जित लाभ के अनुपात में किया जाना** चाहिए।
- एक **सार्वभौमिक आचार संहिता** को लागू किया जाना चाहिए जो पत्रकारों के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देशों को निर्धारित करती हो:
    - दृश्य जानकारी सहित **कभी भी जानबूझकर तथ्यों या संदर्भ को विकृत न करना।**
    - **सार्वजनिक मामलों और सरकार पर निगरानी** बनाए रखने वाले के रूप में सेवा संबंधी अपने विशेष दायित्व की पहचान करना।
    - सत्य की खोज में पूर्वाग्रह को दूर करने के लिए **वस्तुनिष्ठता** को एक आवश्यक तकनीक के रूप में अपनाना।

निष्कर्ष

व्यापक भ्रामक सूचना और मीडिया ध्रुवीकरण के इस युग में जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए एक मजबूत और जवाबदेह नैतिक फ्रेमवर्क का होना आवश्यक है। मीडिया की विश्वसनीयता और लोकतंत्र में इसकी भूमिका की रक्षा के लिए इसके स्व-विनियमन को मजबूत करना, आनुपातिक दंड सुनिश्चित करना तथा निष्पक्षता, सटीकता और सत्यनिष्ठा जैसे पत्रकारिता मूल्यों को संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है।

> मीडिया को बाहर से विनियमित नहीं किया जा सकता, उसे अंदर से ही विनियमित किया जाना चाहिए।
>
> **-टॉम क्लैंसी**

6.2. सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स के समय में सामाजिक प्रभाव और अनुनय (Social Influence and Persuasion in times of Social Media and Influencers)

परिचय

वर्तमान डिजिटल दुनिया में "सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स" के प्रभाव में तेज वृद्धि देखने को मिल रही है। इन्फ्लुएंसर्स, सोशल मीडिया पर अपनी डिजिटल कंटेंट के जरिए प्रसिद्धि पाते हैं। ये इन्फ्लुएंसर्स हमारी राय, उपभोक्ता की रुचियों और खरीदारी के निर्णयों को आकार देने और फैशन, स्वास्थ्य तथा संगीत की हमारी धारणा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
नागरिक	आभासी सामाजिक संपर्क, गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सेवाएं, मनोरंजन, आत्म-अभिव्यक्ति, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता, नौकरी के अवसर (जैसे- कंटेंट निर्माण)।
समाज	सामाजिक सामंजस्य, लोकतांत्रिक सार्वजनिक चर्चा, गलत सूचना और दुष्प्रचार का समाधान आदि।
बाजार	निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा, डिजिटल अर्थव्यवस्था द्वारा आर्थिक विकास, डेटा-संचालित व्यावसायिक अंतर्दृष्टि।
सरकार	रचनात्मकता और व्यवसाय में बाधा डाले बिना उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा, समान अवसर, राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखना, गलत सूचना और दुष्प्रचार का समाधान करना।
सोशल मीडिया	गुणवत्तापूर्ण सेवा वितरण, ग्राहक आधार में वृद्धि, उपयोगकर्ता जुड़ाव और उन्हें बरकरार रखना।
इन्फ्लुएंसर्स	रचनात्मक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत ब्रांड का मुद्रीकरण, सार्वजनिक छवि और प्रतिष्ठा का प्रबंधन, विज्ञापनदाताओं और ब्रांडों के साथ साझेदारी का लाभ उठाना।

सोशल मीडिया और इन्फ्लुएंसर्स किस तरह प्रगतिशील सामाजिक प्रभाव और अनुनय की शुरुआत कर रहे हैं?

- **प्रगतिशील सामाजिक मानदंड:** सोशल मीडिया के जरिए इन्फ्लुएंसर्स सोशल मीडिया पर ऐसी पोस्ट डालते रहते हैं जिनसे व्यक्ति की हिम्मत बढ़ती है और वह खुद को सशक्त महसूस करता है। साथ ही, ये हाशिए पर पड़े समुदायों की आवाज़ को भी बढ़ावा देते हैं।
  - उदाहरण के लिए- ब्लैक लाइव्स मैटर, मी-टू अभियान।
- **एक नए मार्केटिंग चैनल के रूप में इन्फ्लुएंसर्स:** ये ब्रांड की विश्वसनीयता बढ़ाते हैं, सहयोग और क्रॉस-प्रमोशन के जरिए खरीद के इरादे में मदद करते हैं।
- **समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देना:** इन्फ्लुएंसर्स अक्सर विविध समुदायों का प्रतिनिधित्व करके और रूढ़ियों को चुनौती देकर समावेशिता को बढ़ावा देते हैं।
- **सूचना का लोकतंत्रीकरण:** उदाहरण के लिए- क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार, सरकारी अधिकारियों और नेताओं द्वारा ट्विटर पर अपडेट देना।
  - **कर्नाटक डिजिटल विज्ञापन दिशा-निर्देश, 2024** और **उत्तर प्रदेश डिजिटल मीडिया नीति, 2024** सरकारी नीतियों और योजनाओं की जानकारी प्रसारित करने के लिए सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स को विज्ञापन देने की अनुमति देती है।

डिजिटल इन्फ्लुएंसर्स द्वारा उपयोग किए जाने वाले मनोवैज्ञानिक उपाय

पारस्परिक संबंध और पारस्परिकता पूर्वाग्रह:
लोग इन्फ्लुएंसर्स को उनकी सेवाओं के बदले लाइक, फॉलो, शेयर देकर समर्थन देते हैं।

मेल-जोल आधारित प्रभाव और पुनरावृत्ति पूर्वाग्रह:
यह प्रभाव बताता है कि जब कोई चीज़ बार-बार प्रस्तुत की जाती है, तो लोग उसे अधिक पसंद करने लगते हैं। परिचित जानकारी को लोग नवीन जानकारी की तुलना में ज्यादा प्राथमिकता देते हैं।

सामाजिक प्रमाण:
लोग अक्सर दूसरों के व्यवहार की नकल करते हैं, यह सोचकर कि अगर हर कोई किसी उत्पाद का उपयोग कर रहा है, तो उसमें अवश्य गुण होंगे।

हेलो प्रभाव:
एक अनुकूल विशेषता वाला व्यक्ति समग्र रूप से मूल्यवान माना जाता है।

उपभोक्ता के व्यवहार को प्रभावित करने में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर द्वारा निभाई गई सकारात्मक भूमिका

- **सामाजिक बदलाव को बढ़ावा देना:** इन्फ्लुएंसर मानसिक स्वास्थ्य, बॉडी पॉजिटिविटी और महिलाओं के अधिकारों पर जागरूकता को बढ़ाते हैं।
- **सचेत उपभोक्तावाद:** कुछ उपभोक्ता अब इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग का विरोध कर रहे हैं, इसे "डि-इन्फ्लुएंसिंग" कहा जाता है। इस ट्रेंड में इन्फ्लुएंसर सोच समझ कर खर्च करने को बढ़ावा देते हैं और अनावश्यक खरीदारी से बचने की सलाह देते हैं।
- **समावेशिता और विविधता:** कई इन्फ्लुएंसर लैंगिक रूढ़ीवाद को चुनौती देते हैं और हाशिए पर मौजूद समुदायों की आवाज़ों को उठाते हैं। इससे स्वीकृति और जागरूकता को बढ़ावा मिलता है।
- **सूचनाओं की उपलब्धता:** अधिकारी सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स का उपयोग अपडेटस, करियर टिप्स और सार्वजनिक योजनाओं को साझा करने के लिए कर सकते हैं। इससे शासन और नागरिकों के बीच की खाई को पाटा जा सकता है।

इन्फ्लुएंसर संस्कृति से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **विवेकहीन उपभोग:** इन्फ्लुएंसर अक्सर उत्पादों को आवश्यकता के लिए नहीं, बल्कि स्टेटस सिंबल के रूप में बढ़ावा देते हैं। इससे भौतिकवाद को बढ़ावा मिलता है। यह गांधीवादी नैतिकता के **आत्म-संयम** के विपरीत है।
- **मनोवैज्ञानिक हेरफेर:** 'फियर ऑफ़ मिसिंग आउट' (FOMO) और सामाजिक स्तर पर तुलना को ट्रिगर करता है।
- **जवाबदेही की कमी:** कई इन्फ्लुएंसर्स अनौपचारिक राय बनाने वाले नेतृत्वकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। हालांकि उन पर कोई नियंत्रण नहीं होता है।
- **बेईमानी:** कंटेंट की चोरी करना या क्रियेटर्स को श्रेय देने में विफल रहना बौद्धिक संपदा का अनादर और फॉलोवर्स के साथ धोखा है। यह नैतिक एवं कानूनी मानदंडों का उल्लंघन करता है।
- **गोपनीयता का उल्लंघन:** बड़े इन्फ्लुएंसर्स अक्सर उपयोगकर्ता के डेटा को उचित सुरक्षा उपायों के बिना एकत्र और हैंडल करते हैं।

© Vision IAS

- **मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान:** ऑनलाइन आदर्श जीवन-शैली व्याकुलता, आत्म-सम्मान में कमी और असंतोष को बढ़ावा देती है। उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखें तो यह सामूहिक कल्याण को कम करता है।
- **कट्टरपंथ:** चरमपंथी अक्सर कमजोर व्यक्तियों के बीच कट्टरपंथी विचारधाराओं का प्रचार करने के लिए **बड़े पैमाने पर** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपयोग **अनुनय के साधन** के रूप में करते हैं।
    - **उदाहरण के लिए-** इस्लामिक स्टेट द्वारा ऑनलाइन कट्टरपंथ।

इन्फ्लुएंसर जवाबदेही के लिए भारत में मौजूदा विनियामक फ्रेमवर्क

- **केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA):** यह उपभोक्ताओं के अधिकारों के उल्लंघन, अनुचित व्यापार प्रथाओं एवं झूठे या भ्रामक विज्ञापनों से संबंधित मामलों को विनियमित करता है।
- **भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI):** इसने निवेशकों की सुरक्षा के लिए विनियमित वित्तीय संस्थाओं और अपंजीकृत फिनफ्लुएंसर्स के बीच साझेदारी पर प्रतिबंध लगा दिया है।
- **भारतीय विज्ञापन मानक परिषद (ASCI):** इसने कुछ दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिसके तहत इन्फ्लुएंसर्स के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सशुल्क प्रचार को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना अनिवार्य बनाया गया है।
- **उपभोक्ता मामले का विभाग:** इसके द्वारा इन्फ्लुएंसर्स और मशहूर हस्तियों को नैतिक और पारदर्शी प्रचार प्रथाओं का पालन करने में मदद करने हेतु 'एंडोर्समेंट नो-हाउज़' प्रकाशित किया गया है।
- **इंडिया इन्फ्लुएंसर गवर्निंग काउंसिल (IIGC):** यह इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग के लिए एक स्व-विनियामक निकाय है।
    - इसने हाल ही में **आचार संहिता और साप्ताहिक इन्फ्लुएंसर रेटिंग** (इन्फोग्राफिक देखें) शुरू की है।

इन्फ्लुएंसर्स के लिए मानकों की संहिता

- **पेड पार्टनरशिप्स:** इन्फ्लुएंसर्स को किसी भी ब्रांड के साथ अपनी साझेदारी को स्पष्ट रूप से प्रकट करना होगा।
- **AI इन्फ्लुएंसर्स:** यदि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित इन्फ्लुएंसर्स हैं, तो उन्हें यह स्पष्ट रूप से बताना होगा कि वे मानव नहीं हैं।
- **ब्रांड रिलेशन:** इन्फ्लुएंसर्स केवल उन्हीं उत्पादों का समर्थन कर सकते हैं जिनसे वे वास्तव में सहमत हैं। वे एक साथ प्रतिस्पर्धी ब्रांड्स का भी प्रचार नहीं कर सकते हैं।
- **डिफ्लुएंस:** इन्फ्लुएंसर्स को ब्रांड की ईमानदारी से आलोचना करने की अनुमति है, लेकिन यह सच्चाई और जिम्मेदारी के साथ करनी होगी।
- **बच्चों के लिए सुरक्षित कंटेंट:** कंटेंट का बच्चों के लिए सुरक्षित, सकारात्मक और उपयुक्त होना अनिवार्य है।
- **शिकायत हेतु फोरम:** IIGC के तहत उपभोक्ता शिकायत फोरम की स्थापना करनी होगी।

आगे की राह

- **दिशा-निर्देशों को लागू करना:** इन्फ्लुएंसर्स को "एंडोर्समेंट नो-हाउज़" जैसे दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए। सोशल मीडिया पर सेलेब्रिटीज़, इन्फ्लुएंसर्स और वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स को इन दिशा-निर्देशों का पालन करना करना चाहिए।
- **जागरूकता और शिक्षा में वृद्धि:** यह सवाल एक आलोचनात्मक सोच प्रक्रिया के माध्यम से उठाया जाना चाहिए कि **"क्या इन्फ्लुएंसर वास्तव में विशेषज्ञ हैं?"**

- **कट्टरपंथ विरोधी चर्चाएँ:** चरमपंथी चर्चाओं को चुनौती देने की रणनीतियों में काउंटर-कंटेंट तैयार करना, चरमपंथी सामग्री को ब्लॉक या सेंसर करना।
- **बच्चों और किशोरों के लिए सीमित स्क्रीन टाइम:** उदाहरण के लिए- स्वीडिश स्वास्थ्य अधिकारियों ने बच्चों और किशोरों के लिए स्क्रीन समय को प्रतिबंधित करने के लिए नई सिफारिशें जारी की हैं।

निष्कर्ष

इन्फ्लुएंसर सकारात्मक परिवर्तन के वाहक होते हैं, लेकिन साथ में नैतिकता से जुड़ी चिंताओं को भी जन्म देते हैं। विनियमन, जागरूकता और नैतिक आचार संहिता के माध्यम से क्रिएटिविटी को जवाबदेही के साथ संतुलित करना जिम्मेदार डिजिटल इन्फ्लुएंस सुनिश्चित करने की कुंजी है।

6.3. अनुनय और भ्रामक सूचना (Persuasion and Disinformation)

परिचय

सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों के विकास के साथ-साथ स्मार्टफोन्स की पहुंच में भी बढ़ोतरी होने के कारण समाज का एक बड़ा हिस्सा भ्रामक सूचनाओं की चपेट में आ गया है। ऐसे समय में अनुनय एक सामाजिक साधन के रूप में लोगों के विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करके भ्रामक सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है।

भ्रामक सूचना के विरुद्ध अनुनय कैसे काम कर सकता है?

- **विश्वास बनाना और विरोध को कम करना: उदाहरण के लिए,** कोविड वैक्सीन को लेकर लोगों की हिचकिचाहट को दूर करने में, स्थानीय डॉक्टरों या धार्मिक नेताओं द्वारा टीकों के महत्त्व के बारे में जानकारी देना अधिक कारगर साबित हुआ।
- **व्याप्त धारणाओं के विरुद्ध नई धारणाओं का सहारा लेना:** केवल आंकड़ों पर निर्भर रहने के बजाय, अनुनयकारी संचार में कहानियों, दृश्यों और भावनात्मक अपील का प्रयोग किया जाता है। यह चीज लोगों से उसी स्तर पर जुड़ने में मदद करती है जिस स्तर पर भ्रामक सूचना काम करती है। उदाहरण के लिए, कोविड के दौरान लोगों को हाथ धोने के लिए प्रेरित करना।
- **टकराव के बिना आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना: उदाहरण के लिए,** कट्टरता से बाहर निकालने से जुड़े कार्यक्रमों में **खुले संवाद** द्वारा व्यक्ति की विचारधारा संबंधी कमजोरियों पर सवाल किए जाते हैं। इससे व्यक्ति स्वयं अपने विश्वासों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित होता है।
- **समय के साथ निरंतर जुड़ाव:** यदि कोई व्यक्ति किसी **भ्रामक सूचना या विश्वास** को मानता है, तो वह **सिर्फ एक बार समझाने से नहीं समझेगा।** इसके लिए अनुनयकारी को बार-बार सम्मानजनक तरीके से उससे बात करनी होगी। इस प्रकार के निरंतर जुड़ाव से उसकी सोच को धीरे-धीरे बदला जा सकता है।
    - यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि एक बार का फैक्ट-चेक कभी पर्याप्त नहीं होता, क्योंकि **गलत जानकारी भावनात्मक रूप से गहराई से जुड़ी** होती है।

© Vision IAS

निष्कर्ष

ऐसे युग में जहां भ्रामक सूचनाएं तेजी से फैलती हैं, अनुनय वास्तव में विश्वास, समानुभूति और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देकर एक मानवीय और रणनीतिक कदम के रूप में कार्य करती है। निरंतर, कथा-आधारित और सम्मानजनक संवाद के माध्यम से, यह व्यक्तियों को असत्य या भ्रामक सूचना पर सवाल उठाने तथा अपने ही विवेक और तर्क के आधार पर सच्चाई जानने में मदद करती है।

> "लोग आमतौर पर उन कारणों से अधिक प्रभावित होते हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं खोजा होता है, न कि उन कारणों से जो दूसरों के मन में उत्पन्न हुए हों।"
>
> **-ब्लेज़ पास्कल**

6.4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता (Obscenity on Digital Platforms)

परिचय

सुप्रीम कोर्ट ने **"इंडियाज गॉट लैटेंट"** नामक यूट्यूब शो में अश्लील टिप्पणियों से जुड़े मामले की सुनवाई करते हुए **सॉलिसिटर जनरल** से अनुरोध किया कि वे **ऑनलाइन दिखाए जाने वाले भद्दे कंटेंट पर नियंत्रण के लिए एक संतुलित नियामक उपाय प्रस्तुत करें**, जिससे **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Free Speech) पर संतुलन बना रहे।**

प्रमुख हितधारक और उनके हित

प्रमुख हितधारक	हित
कंटेंट क्रिएटर्स और कलाकार	• **रचनात्मक स्वतंत्रता** और कलात्मक अभिव्यक्ति बनाए रखना, आय अर्जित करना और दर्शकों की संख्या बढ़ाना।
डिजिटल प्लेटफॉर्म	• यह सुनिश्चित करना कि उनका **राजस्व मॉडल देश के कानूनों का पालन करता हो** और अत्यधिक सेंसरशिप के बिना उपयोगकर्ताओं को हानिकारक कंटेंट से बचाता हो। • **राजस्व हानि से बचने के लिए विज्ञापनदाताओं का विश्वास बनाए रखना,** क्योंकि यदि प्लेटफॉर्म संदिग्ध कंटेंट से जुड़ा हुआ है तो ब्रांड पीछे हट सकते हैं।
सरकार एवं नियामक निकाय	• **कानूनों को परिभाषित और लागू करना,** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सार्वजनिक नैतिकता के साथ संतुलित करना।
समाज	• **न्यूनतम प्रतिबंध के साथ वांछित कंटेंट तक पहुंच,** विशेष रूप से बच्चों को अनुचित या अश्लील कंटेंट से बचाना।

अश्लील डिजिटल कंटेंट को विनियमित करने में नैतिक मुद्दे

- **सेंसरशिप बनाम उचित प्रतिबंध:** हालांकि, कानून नैतिकता की रक्षा करते हैं, लेकिन अत्यधिक विनियमन रचनात्मकता को प्रभावित कर सकता है। चूंकि अश्लीलता व्यक्तिपरक और निरंतर परिवर्तनीय है, इसलिए अत्यधिक प्रतिबंध मीडिया में विविध दृष्टिकोणों को सीमित कर सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए-** 2024 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने "अश्लील और अभद्र" कंटेंट करार देते हुए 18 OTT प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाया गया था।
- **बदलते सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** अश्लीलता एक सांस्कृतिक अवधारणा है जो समय के साथ बदलती रहती है।
  - **खजुराहो** और कोणार्क के प्राचीन मंदिरों में कामुक मूर्तियां उत्कीर्णित हैं, लेकिन अगर वर्तमान में इस तरह की मूर्तियां लगाने/ उकेरने का प्रयास किया जाए तो सेंसरशिप का सामना करना पड़ सकता है।
- **सत्ता की गतिशीलता:** प्रश्न उठता है कि यह तय करने का अधिकार किसे होगा कि कौन सा कंटेंट स्वीकार्य है?
- **एजेंसी और संरक्षकवाद (Paternalism):** कंटेंट के उपयोगकर्ताओं को हानिकारक कंटेंट से बचाने और अपना कंटेंट चुनने की उनकी स्वायत्तता का सम्मान करने के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है।

- अत्यधिक विनियमन से यह धारणा बन सकती है कि उपयोगकर्ता स्वयं कंटेंट के संबंध में अपनी पसंद के बारे में सही निर्णय नहीं ले सकते हैं।

- **अश्लीलता का विनियमन बनाम कलात्मक स्वतंत्रता:** सार्वजनिक नैतिकता की रक्षा के लिए सेंसरशिप और कलाकारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के बीच संघर्ष बना रहता है।
  - **उदाहरण के लिए- मकबूल फिदा हुसैन बनाम राज कुमार पांडे मामले** में, न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि केवल नग्नता (Nudity) मात्र से कोई कंटेंट अश्लील नहीं हो जाता।

निष्कर्ष

अश्लीलता अत्यधिक व्यक्तिपरक है, जो **संस्कृतियों और समय के अनुसार बदलती रहती है।** इसलिए, एक जिम्मेदार डिजिटल मीडिया स्पेस बनाने के लिए **कानूनी स्पष्टता, स्व-नियमन, लोक जागरूकता और वैश्विक सहयोग** की आवश्यकता होती है। **न्याय, गरिमा, पारदर्शिता और जवाबदेही** जैसे नैतिक मूल्यों को कायम रखते हुए, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स **रचनात्मक स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी** के बीच संतुलन बना सकते हैं।

> सेंसरशिप किसी समाज की स्वयं पर विश्वास की कमी को दर्शाती है। यह एक सत्तावादी शासन की पहचान है।
>
> **-पॉटर स्टीवर्ट, यू.एस. सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश**

6.5. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
गोपनीयता	स्व-नियमन	सेंसरशिप	भ्रामक सूचना
मीडिया एथिक्स	पारदर्शिता	सामाजिक प्रमाण	कलात्मक स्वतंत्रता

6.6. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक नैतिकता के बीच संतुलन बनाने में नैतिक चुनौतियां उत्पन्न करती है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
इंडियाज़ गॉट लेटेंट शो के हालिया विवाद का संदर्भ देते हुए परिचय दीजिए।	नैतिक चुनौतियों, जैसे- स्वतंत्रता बनाम उत्तरदायित्व, युवाओं और समाज पर प्रभाव (अनफ़िल्टर्ड पहुँच नाबालिगों को प्रभावित करती है, वस्तुकरण को सामान्य बनाती है), आदि को शामिल कीजिए।	सुझाव दीजिए कि डिजिटल उत्तरदायित्व की नैतिकता और प्रौद्योगिकी एक साथ विकसित होनी चाहिए, आदि।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
UPSC के लिए करेंट अफेयर्स
की समग्र तैयारी हेतु एकमात्र समाधान
Digital Current Affairs 2.0
मुख्य विशेषताएं:
विजन इंटेलिजेंस
डेली प्रैक्टिस
डेली न्यूज समरी
स्टूडेंट डैशबोर्ड
क्विक नोट्स और हाइलाइट्स
संधान तक पहुंच की सुविधा

© Vision IAS

7. नैतिकता और प्रौद्योगिकी (Ethics and Technology)

7.1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी नैतिकता {Ethics of Artificial Intelligence (AI)}

परिचय

स्वास्थ्य देखभाल, पुलिसिंग, शिक्षा और गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का तेजी से बढ़ता उपयोग जहां एक ओर तकनीकी विकास को गति दे रहा है, वहीं दूसरी ओर इससे जुड़ी अनेक जटिल नैतिक दुविधाएं भी सामने आई हैं।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
उपयोगकर्ता	अपने डेटा की **निजता,** सिस्टम आधारित पूर्वानुमान की **सटीकता** और सिस्टम द्वारा **पक्षपातपूर्ण परिणाम प्रदर्शित करने की संभावना** से जुड़े मुद्दे।
कंपनियां/ डेवलपर्स	AI **सिस्टम को विकसित करने और संचालित करने की लागत तथा सिस्टम की सुरक्षा** से जुड़ी चिंताएं।
निवेशक	AI सिस्टम के विकास के लिए **वित्तीय सहायता** प्रदान करना।
राज्य और विनियामक	AI सिस्टम के विकास और उपयोग को विनियमित करने वाले **कानून व नियम** निर्धारित करना।
नागरिक समाज संगठन (CSOs)	**AI सिस्टम के दायित्वपूर्ण विकास और उपयोग** पर जोर देना।

AI से जुड़ी नैतिक समस्याएं क्या हैं?

- **निजता और निगरानी:** AI के आने से, पहले से विद्यमान समस्याओं को अधिक बढ़ावा मिला है। इसमें डेटा की निगरानी, चोरी, प्रोफाइलिंग आदि शामिल हैं।
    - उदाहरण के लिए- AI आधारित इमेज प्रोसेसिंग का उपयोग करके फ़ोटो और वीडियो में चेहरा पहचानने की तकनीक व्यक्तियों की प्रोफाइलिंग करने और उन्हें खोजने में मदद करेगी।
- **हेरफेर और डीपफेक:** डीपफेक वीडियो या ऑडियो प्रतिरूपण (Impersonation), जिनका गलत सूचना फैलाने जैसे दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
    - उदाहरण के लिए, वर्ष 2019 में ब्रिटेन स्थित एक ऊर्जा कंपनी से एक धोखेबाज़ ने AI द्वारा तैयार की गई **डीपफेक ऑडियो के ज़रिए कंपनी के CEO की नकली आवाज़ में कॉल कर $2,43,000 की रकम ठग ली।**
- **AI प्रणाली का अपारदर्शी होना:** AI प्रणाली द्वारा लिए गए निर्णय **पारदर्शी नहीं होते हैं (ब्लैक बॉक्स समस्या)**। इस अस्पष्टता के कारण सिस्टम को जवाबदेह और ईमानदार बनाए रखने की संभावना समाप्त हो जाती है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यह लोगों के बीच अविश्वास पैदा करती है।
    - उदाहरण के तौर पर, यू.के. सरकार ने कोरोना महामारी के कारण परीक्षा न दे पाने वाले छात्रों के लिए A-लेवल परीक्षा परिणाम तय करने हेतु एक AI एल्गोरिदम का उपयोग किया। लेकिन यह मॉडल निजी स्कूलों और समृद्ध क्षेत्रों के छात्रों को प्राथमिकता देने लगा, जिससे कई मेधावी लेकिन साधन से वंचित छात्रों को अनुचित नुकसान हुआ।
- **पक्षपात/ पूर्वाग्रह:** यदि प्रशिक्षण डेटा में नस्ल, लिंग आदि से संबंधित पूर्वाग्रह शामिल हैं, तो ऐसे में AI प्रणाली में भी इनके बने रहने और आगे प्रसारित होने की संभावना है। इसके परिणामस्वरूप, अनुचित व्यवहार और भेदभाव को बढ़ावा मिल सकता है।
    - उदाहरण के लिए- प्रिडिक्टिव पुलिसिंग द्वारा विकसित किए गए ट्रायल एप्लीकेशंस में कुछ समुदायों के लोगों को संभावित खतरे के रूप में दर्शाने की प्रवृत्ति रहती है (यानी, **नस्लवादी या जातिवादी रोबोट**)।

- **AI भ्रम (AI Hallucinations):** जब कोई AI मॉडल ऐसी जानकारी या पैटर्न बना देता है जो वास्तव में मौजूद नहीं होते या जिनका कोई ठोस आधार नहीं होता, तो उसे AI भ्रम कहा जाता है। इस स्थिति में AI प्रणाली गलत, भ्रामक या काल्पनिक उत्तर उत्पन्न करती है, जो मानवीय पर्यवेक्षक की दृष्टि में असत्य या अवास्तविक होते हैं।

आगे की राह (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक उपयोग हेतु यूनेस्को के सिद्धांत)

- **आनुपातिकता आधारित और हानि रहित:** AI प्रणाली का उपयोग करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि इसके कारण मानव अधिकारों का उल्लंघन न हो।
- AI डेवलपर्स को सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना चाहिए। साथ ही उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानून का अनुपालन करते हुए हर प्रकार की न्यायसंगतता तथा भेदभाव-रहित व्यवहार का संरक्षण करना चाहिए।
- AI प्रौद्योगिकियों के **मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का निरंतर मूल्यांकन** किया जाना चाहिए।
- **निजता का अधिकार और डेटा संरक्षण:** इसमें AI के उपयोग के सामाजिक और नैतिक मुद्दों पर विचार करना भी शामिल है।
- **मानव निरीक्षण और अवधारणा:** यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मौजूदा कानूनी संस्थाओं को नैतिक और कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- **बहु-हितधारक और अनुकूल कार्यप्रणाली एवं सहयोग:** इससे इसके लाभों को सभी के साथ साझा किया जा सकेगा और इसके संधारणीय विकास में योगदान दिया जा सकेगा।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे AI हमारे जीवन में गहराई से समाहित होता जा रहा है, मानवाधिकारों, निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे मूल्यों की रक्षा के लिए इसकी नैतिक चुनौतियों का समाधान करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए बहुपक्षीय और अधिकार-आधारित दृष्टिकोण अपनाना ज़रूरी है, जो पारदर्शिता, निजता की सुरक्षा और समावेशी गवर्नेंस पर आधारित हो। यही तरीका AI तकनीकों के जिम्मेदार और समान उपयोग को सुनिश्चित कर सकता है।

> मानवीय मूल्यों और भावनाओं के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में नैतिक नजरिया शामिल करना भावी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को मूलभूत आधार प्रदान करेगा।
>
> **-अमित रे**

7.1.1. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और क्रिएटिविटी (AI and Creativity)

परिचय

हाल ही में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर घिबली-शैली (Ghibli-style) आर्ट से प्रेरित तस्वीरों की बाढ़ आ गई, जो AI टूल्स का उपयोग करके बनाई गई थीं। जहां इन कलाकृतियों ने दुनिया भर के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और सराहना भी पाई, वहीं दूसरी ओर इसने कला जगत में नई बहस भी छेड़ दी है।

© Vision IAS

रचनात्मक क्षेत्र में AI से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **कलात्मक पवित्रता के लिए सम्मान:** जब मानव-निर्मित और AI-जनित कृतियों के बीच अंतर करना मुश्किल हो, तब AI-जनित कृतियां कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता और पवित्रता को संरक्षित करने के बारे में चिंताएं बढ़ा सकती हैं।
- **सहमति और स्वामित्व:** AI-संचालित परियोजनाओं में शामिल कलाकारों, क्रिएटर्स और प्रतिभागियों के अधिकारों के संबंध में प्रश्न उठते हैं। इनमें बौद्धिक संपदा, स्वामित्व और व्यक्तिगत डेटा या क्रिएटिव योगदान का उपयोग करने के लिए सहमति से संबंधित मुद्दे शामिल हैं।
- **संरक्षण बनाम दोहन:** यदि AI मृत हस्तियों की आवाज़ों या कलात्मक शैलियों को पुनर्जीवित कर सकता है, तो इस पर नैतिक प्रश्न उठता है कि क्या ऐसे प्रयासों का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है या व्यावसायिक लाभ के लिए व्यक्तियों की पहचान एवं उनकी विरासत का दोहन करना है।
- **तकनीकी नियतिवाद (निर्धारणवाद) और संज्ञानात्मक न्याय:** क्रिएटिव इंडस्ट्री में AI को व्यापक रूप से अपनाने से ह्यूमन क्रिएटिविटी और नवाचार पर प्रभाव पड़ सकता है। इससे संभावित रूप से होमोजेनाइजेशन, विविधता की हानि, या फॉर्मूला आधारित दृष्टिकोण पर निर्भरता बढ़ सकती है।
- **विनियामकीय निगरानी:** विनियामकीय प्रावधानों की कमी के कारण निजता की सुरक्षा, भेदभाव को रोकने तथा विकसित प्रौद्योगिकियों के मामले में नियमों के पालन, प्रवर्तन और अनुकूलन में चुनौतियां उत्पन्न होती हैं।

आगे की राह

- **AI-संचालित क्रिएटिव प्रॉसेस में पारदर्शिता और प्रकटीकरण सुनिश्चित करना** चाहिए। इसमें **AI-जनित कंटेंट का स्पष्ट श्रेय देना और सभी शामिल पक्षों से सूचित सहमति** प्राप्त करना शामिल है।
- **कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता और अखंडता को बनाए रखना,** क्रिएटर्स के योगदान को स्वीकार करना और अपनी कृतियों के नियंत्रण एवं उचित रूप से श्रेय दिए जाने के उनके अधिकारों का सम्मान करना चाहिए।
- सहमति, स्वामित्व, निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे मुद्दों को संबोधित करते हुए **क्रिएटिव प्रॉसेस में AI के नैतिक उपयोग के लिए नैतिक दिशा-निर्देश और सर्वोत्तम अभ्यास** विकसित किए जाने चाहिए।
- नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करने और AI-संचालित क्रिएटिव परियोजनाओं में शामिल व्यक्तियों के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए **नियामक निगरानी और शासन प्रणाली का सहयोग करना** चाहिए।

निष्कर्ष

चूंकि AI क्रिएटिव क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका है, इसलिए इनोवेशन और नैतिकता के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। स्पष्ट दिशा-निर्देश और पारदर्शिता यह सुनिश्चित कर सकती है कि AI इंसान की क्रिएटिविटी और कला जगत की सत्यनिष्ठा का दुरुपयोग करने की बजाय उसका पूरक बने।

> एक मशीन पचास साधारण आदमियों का काम कर सकती है। कोई भी मशीन एक असाधारण आदमी का काम नहीं कर सकती।
>
> **-एल्बर्ट हब्बार्ड**

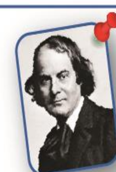

7.2. ऑनलाइन गेमिंग की नैतिकता (Ethics of Online Gaming)

परिचय

हाल ही में, ऑनलाइन गेमिंग मध्यस्थों के लिए स्वैच्छिक आचार संहिता[8] जारी की गई है। इसे ऑल इंडिया गेमिंग फेडरेशन (AIGF), ई-गेमिंग फेडरेशन (EGF) और फेडरेशन ऑफ इंडियन फैंटेसी स्पोर्ट्स (FIFS) के सहयोग से इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (IAMAI) की डिजिटल गेमिंग समिति के सदस्यों के संयुक्त घोषणा-पत्र के रूप में जारी किया गया है।

[8] Voluntary Code of Ethics for Online Gaming Intermediaries

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	भूमिका/ हित
गेमर्स	निष्पक्ष और नैतिक गेमिंग प्रथाओं, आदि की अपेक्षा करते हैं।
गेम डेवलपर्स	गेमिंग अनुभव को बेहतर बनाना; निष्पक्ष गेमिंग प्रथाओं को बढ़ावा देना; कंटेंट और मैकेनिक्स तथा नैतिक चिंताओं के संभावित लक्ष्यों के लिए जिम्मेदार।
प्लेटफॉर्म प्रदाता	कंटेंट मॉडरेशन; यूजर्स सेफ्टी; नियमों का अनुपालन और बाजार में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए जिम्मेदार।
विनियामक निकाय	उपभोक्ताओं की रक्षा, आय अर्जित करना, अवैध गतिविधियों की रोकथाम, नियमों को लागू करना (जैसे- आपत्तिजनक कंटेंट पर रोक लगाना, आयु संबंधी सीमा तय करना) और जिम्मेदारीपूर्ण गेमिंग को बढ़ावा देना।
नागरिक समाज	हानिकारक कंटेंट और गेमिंग की लत से बच्चों की सुरक्षा; सामाजिक वैमनस्य को रोकना और नैतिक गेमिंग को बढ़ावा देना।

ऑनलाइन गेमिंग से जुड़ी नैतिक चिंताएं

- **गेमिंग बनाम गैम्बलिंग:** गेमिंग में कौशल-आधारित गतिविधियां, रणनीतिक सोच और गहन अनुभव शामिल हैं, जबकि गैम्बलिंग में भाग्य के साथ अनिश्चित परिणामों पर पैसा लगाना शामिल है।
- **गोपनीयता संबंधी चिंताएं:** ऐसे डेटा में व्यक्तिगत संवेदनशील डेटा जैसे नाम, उम्र, बैंकिंग विवरण आदि भी शामिल होते हैं जो व्यक्ति की गोपनीयता, डेटा सहमति और निगरानी सीमाओं के संबंध में चिंताएं पैदा करते हैं।
- **फेयर प्ले:** दुर्भावना रखने वाले कारकों **द्वारा रियल-मनी गेम्स के परिणामों में हेरफेर** किया जा सकता है। इससे प्रतियोगिताओं की शुचिता कम हो सकती है और यूजर्स को वित्तीय नुकसान हो सकता है।
- **जवाबदेही:** ऐसे ऑनलाइन गेम्स के उदाहरण सामने आए हैं जो अनुचित व्यवहार अपना रहे हैं और नशे, सट्टेबाजी को बढ़ावा दे रहे हैं या यूजर्स को नुकसान पहुंचा रहे हैं।
  - गेमिंग कंपनियां भ्रामक विज्ञापन करती हैं, जो यूजर्स के कल्याण के लिए हानिकारक है।

भारत में गेमिंग के लिए विनियामकीय फ्रेमवर्क

- **खेलों में अंतर:** भारतीय कानून के तहत, गेम ऑफ स्किल यानी कौशल के खेल को आम तौर पर कानूनी माना जाता है, जबकि गेम ऑफ चांस को अवैध माना जाता है।
  - रम्मी, हॉर्स रेसिंग, पोकर और फैंटेसी स्पोर्ट्स को अक्सर गेम ऑफ स्किल माना जाता है जबकि कैसीनो गेम, लॉटरी और सट्टेबाजी को अक्सर गेम ऑफ चांस माना जाता है।
- **संवैधानिक प्रावधान:** न्यायालय ने स्किल गेमिंग को संविधान के अनुच्छेद 19(1)(g) के तहत एक संरक्षित गतिविधि के रूप में मान्यता दी है।
  - संविधान की **सातवीं अनुसूची** भारत के प्रत्येक राज्य को "सट्टेबाजी और गैम्बलिंग" से संबंधित कानून बनाने का अधिकार देती है। इसी के परिणामस्वरूप राज्यों ने इस संबंध में अलग-अलग नियम बनाए हैं।
- **ऑनलाइन गेमिंग के नियम:** इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने **सूचना प्रौद्योगिकी, मध्यवर्ती दिशा-निर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता नियम, 2021** में संशोधन के जरिए ऑनलाइन गेमिंग के लिए एक केंद्रीय कानूनी फ्रेमवर्क स्थापित किया है।

- इन नियमों का उद्देश्य खासकर जनता के लिए "ऑनलाइन रियल-मनी गेम्स" तक पहुंच के मामले में गैम्बलिंग, यूजर क्षति और मनी लॉन्ड्रिंग को रोकना है।
- **डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण (DPDP) अधिनियम, 2023:** इसका उद्देश्य व्यक्तिगत गोपनीयता की रक्षा करना और डेटा प्रोसेसिंग को विनियमित करना है।
- **उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019:** यह भारत में ऑनलाइन गेमिंग पर भी लागू होता है। यह उपभोक्ताओं के विभिन्न अधिकारों की रक्षा करता है।

आगे की राह

- **प्राइवेसी एथिक्स और डेटा सुरक्षा:** खिलाड़ी की पहचान और व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए डेटा गुमनामीकरण और एन्क्रिप्शन तकनीक प्रदान की जानी चाहिए।
- **जिम्मेदारीपूर्ण गेमिंग:** उद्योग के हितधारकों, नियामकों और समर्थक समूहों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों पर जोर देते हुए सक्रिय उपाय और शैक्षिक पहलें आवश्यक हैं।
- **स्व-नियमन:** स्व-नियमन के पहलुओं में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:
  - **पहचान और आयु सत्यापन** के साथ-साथ बेहतर नो योर कस्टमर (KYC) प्रोटोकॉल।
  - **नियमित ऑडिट** और खिलाड़ी के व्यवहार की सकारात्मक निगरानी द्वारा जोखिम वाले खिलाड़ियों की पहचान करना।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे ऑनलाइन गेमिंग का तेजी से विस्तार हो रहा है, इसका उपयोग करने वालों की सुरक्षा, डेटा की गोपनीयता और जिम्मेदार गेमिंग सुनिश्चित करने के लिए नैतिक, कानूनी और विनियामक चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक हो गया है। भारत में सुरक्षित और जवाबदेह डिजिटल गेमिंग इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए मजबूत विनियमन, स्व-विनियमन और बहु-हितधारक सहयोग को शामिल करने वाला एक संतुलित तरीका अपनाना आवश्यक है।

> खेलों को नैतिक गुणों के विकास की प्रयोगशाला कहा जाता है, लेकिन वे अकेले इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते। बल्कि उसे सक्षम व्यक्तियों द्वारा उचित रूप से संचालित किया जाना चाहिए।
>
> **–जेम्स नाइस्मिथ**

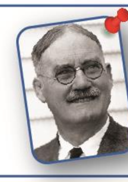

7.3. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
डीपफेक	डेटा की निगरानी	AI भ्रम	अपारदर्शी
सहमति	ब्लैक बॉक्स समस्या	जवाबदेही	प्राइवेसी एथिक्स

निबंध

ENRICHMENT PROGRAMME 2025

12 जून, 5 PM

- किसी विचार को विकसित करने से लेकर उसे निबंध का रूप देने तक के विभिन्न चरणों को सीखना
- निबंध के विभिन्न भागों के बारे में व्यावहारिक और कुशल दृष्टिकोण के बारे में जानिए
- नियमित तौर पर प्रैक्टिस और विचार–मंथन सत्र
- इंटरडिसिप्लिनरी एप्रोच
- लाइव/ऑनलाइन क्लासेज भी उपलब्ध
- हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम में उपलब्ध

7.4. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

कृत्रिम बुद्धिमत्ता रचनात्मकता में क्रांति ला रही है, लेकिन मौलिकता, लेखनाधिकार और निष्पक्षता से जुड़ी नैतिक दुविधाएं भी पैदा कर रही हैं। चर्चा कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
घिबली-शैली की कला समस्या का संदर्भ देते हुए परिचय दीजिए। नवाचार और अनुकरण के बीच नैतिक तनाव का उल्लेख कीजिए।	लेखकत्व और जवाबदेही, मौलिकता बनाम अनुकरण जैसे नैतिक सरोकारों को शामिल कीजिए। उनके साथ उदाहरण भी दीजिए।	यह सुझाव देते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए कि पारदर्शिता, श्रेय और सहमति आदि पर सुरक्षा उपायों के साथ नैतिक AI डिज़ाइन की आवश्यकता है।

8. सुर्ख़ियों में रहे प्रमुख व्यक्तित्व (Key Personalities in News)

8.1. महात्मा गांधी और करुणा (Mahatma Gandhi and Compassion)

परिचय

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान-की-मून ने **करुणा** के संबंध में **महात्मा गांधी** के विचारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने संयुक्त राष्ट्र चार्टर की स्थापना से बहुत पहले ही इसके सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाया और उनका पालन किया था। गांधीजी ने नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे वैश्विक नेताओं को भी प्रेरित किया। निस्संदेह महात्मा गांधी के सभी प्रमुख मूल्य, जैसे- **अहिंसा, सत्य, शांति, न्याय** और **समावेशिता** भी करुणा की ठोस बाह्य अभिव्यक्तियां हैं।

महात्मा गांधी के कौन-से प्रमुख मूल्य करुणा को बढ़ावा देते हैं?

- **सत्याग्रह:** यह दूसरों को चोट पहुँचाए बिना अपने अधिकारों को सुरक्षित करने का तरीका है।
  - उदाहरण के लिए- महात्मा गांधी ने अपना पहला सत्याग्रह साल 1917 में बिहार के चंपारण ज़िले में शुरू किया था।
- **समानता:** गांधीजी ने अस्पृश्यता को एक अभिशाप माना।
  - उन्होंने **महिला सशक्तीकरण** के लिए भी काम किया और महिलाओं को त्याग तथा अहिंसा की प्रतिमूर्ति बताया।
- **दया:** गांधीजी ने **शाकाहार** को अपना **जीवन दर्शन** बनाया था और नैतिक आधार पर जानवरों के वध की निंदा करते थे।
  - उनका कहना था कि "चिकित्सकीय सलाह के बावजूद मैं भूख से मरना पसंद करूंगा, लेकिन जानवरों का मांस नहीं खाऊंगा।"
- **सर्वोदय (सभी का कल्याण):** उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर को देखा और माना कि मानवता की सेवा के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।
- **अहिंसा:** यह परम लक्ष्य यानी सत्य को प्राप्त करने का एक साधन है।
  - अहिंसा का उनका मूल्य एक सकारात्मक अवधारणा थी, जो किसी को चोट न पहुँचाने या हिंसा न करने के विचार के साथ-साथ निःस्वार्थ कार्य के प्रति प्रेम का प्रचार भी करती थी।
- **प्रकृति के प्रति चिंता:** उन्होंने बड़े पैमाने पर **शहरीकरण से होने वाले नुकसान** का जिक्र कर प्रकृति तथा जैव विविधता के संरक्षण का आह्वान किया।
  - उनके अनुसार, "पृथ्वी में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने हेतु पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन हमारे लालच के लिए नहीं।"

- **परोपकारिता या आत्म-बलिदान: गांधीजी का 'जंतर'** उनके निःस्वार्थ सेवाभाव, दूसरों के प्रति करुणा और समाज के हित में कार्य करने की परोपकारी भावना का प्रतीक है अर्थात् यह परोपकारिता या आत्म-बलिदान का एक उदाहरण है।
    - "जब भी आप संदेह में हों, या जब अहंकार बहुत बढ़ जाए, तो उस सबसे गरीब और सबसे कमज़ोर आदमी का चेहरा याद कीजिए जिसे आपने देखा हो और खुद से पूछिए कि आप जो कदम उठाने की सोच रहे हो, क्या उससे उसे कोई फायदा होगा।"
- **साधन और साध्य:** उन्होंने स्पष्ट रूप से इस सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया कि **साध्य, साधनों को उचित ठहराता है**, साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि **नैतिक साधन** अपने आप में एक **साध्य** है, क्योंकि सद्गुण अपने आप में ही पुरस्कार (उपलब्धि) है।
- **ट्रस्टीशिप की अवधारणा:** गांधीजी के अनुसार, जमींदारों व अमीर लोगों को अपनी संपत्ति के ट्रस्टी के रूप में काम करना चाहिए, जैसे उन्होंने अपनी संपत्ति और भौतिक वस्तुओं के अधिकार आम लोगों को समर्पित कर दिए हैं।

करुणा के संबंध में महात्मा गांधी के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

- **जलवायु संकट का समाधान करना:** गांधीजी का दर्शन प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीवन जीने का समर्थन करता है।
- **समकालीन संघर्ष का समाधान:** महात्मा गांधी का दृष्टिकोण "पाप से नफरत करो, पापी से नहीं" - मानव गरिमा को बनाए रखते हुए उन लोगों के साथ जुड़ने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, जिनसे हम असहमत हैं।
- **आर्थिक संकट से निपटना:** उनका ध्यान **आत्मनिर्भरता, उत्पादन केंद्रों के विकेन्द्रीकरण, ट्रस्टीशिप के विचार,** आदि पर केंद्रित था।
- **सामाजिक परिवर्तन की ताकत:** महात्मा गांधी के विचारों को स्वच्छ भारत मिशन जैसी पहलों में उपयोग में लाया जा रहा है।
- **समाज में विखंडन से निपटना:** समावेशी आध्यात्मिकता का उनका दृष्टिकोण सभी धर्मों का सम्मान करता है।

करुणा को आत्मसात करने के लिए आगे की राह

- **सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना:** इसमें सामाजिक क्षेत्रों के समक्ष आने वाली चुनौतियों को समझना और उनके समाधान के लिए पहलें शुरू करना शामिल है।
- **आत्म-करुणा का अभ्यास करना:** दूसरों की पीड़ा और भावनाओं को समझने में सक्षम होने के लिए, सबसे पहले खुद की पीड़ा और भावनाओं पर विचार करना होगा।
- **गलतियों और असफलताओं को स्वीकार करना:** धैर्य रखने और दूसरों तथा खुद की गलतियों के लिए क्षमा करने पर ध्यान केंद्रित करने पर बल देना चाहिए।
- **अन्य:** बचपन से ही करुणा को आत्मसात करना, आदि।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी के मूल्य परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में अत्यधिक प्रभावी बने हुए हैं, जो करुणा, समानता और प्रगति युक्त भविष्य प्राप्त करने के लिए ज्ञान से सुसज्जित और सशक्त नागरिकों की एक पीढ़ी को तैयार करते हैं। उनकी मान्यताएं वर्तमान चुनौतियों से निपटने में भारत के साथ-साथ पूरे विश्व को भी प्रेरित करती हैं।

> "केवल दूसरों के प्रति करुणा और समझ का विकास ही हमें वह शांति व खुशी दे सकता है, जिसकी हम सभी तलाश करते हैं"
>
> **-दलाई लामा**

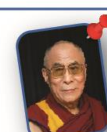

© Vision IAS

8.2. रतन नवल टाटा (Ratan Naval Tata)

परिचय

हाल ही में, टाटा समूह के पूर्व चेयरमैन रतन नवल टाटा का निधन हो गया और इसके साथ ही एक महान युग का भी अंत हो गया। वे एक ऐसे प्रभावशाली व्यावसायिक दिग्गज थे, जिन्हें **करिश्माई और परिवर्तनकारी नेतृत्व कौशल** के लिए जाना जाता था। उनकी असाधारण और विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें पद्म भूषण (2000) और पद्म विभूषण (2008) से सम्मानित किया गया था।

रतन टाटा (1937-2024) के जीवन से जुड़े कुछ प्रमुख मूल्य

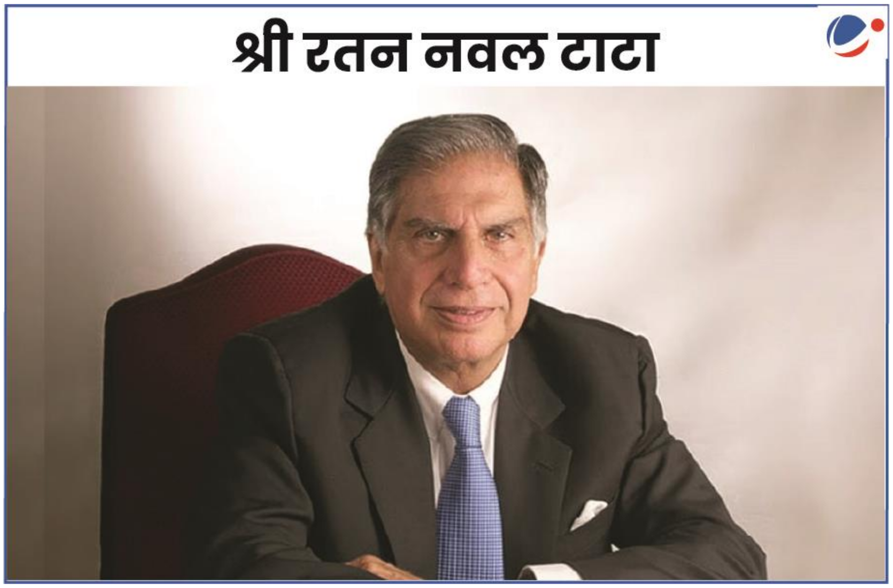

- **सादगी भरा जीवन:** रतन टाटा ने **सादगी भरी जीवन शैली को अपनाया, लाइमलाइट से दूर रहे और अपने काम पर ध्यान केंद्रित** किया।
  - उन्होंने आज के दिखावे से प्रेरित उपभोक्तावादी समाज में भी **सादा जीवन और उच्च विचार** का उदाहरण प्रस्तुत किया।
- **अनुकूलनशीलता और दृढ़-निश्चय:** कई बाधाओं के बावजूद, रतन टाटा ने **2008 में टाटा नैनो परियोजना** शुरू की, जिसके जरिए मध्यम वर्ग के भारतीयों को सस्ती कारें उपलब्ध कराई जा सकीं।
- **नेतृत्व:** उनके नेतृत्व में **विनम्रता** और **व्यावहारिक भागीदारी** जैसे गुण देखने को मिलते हैं।
- **समानुभूति:** उनके नेतृत्व में, टाटा ट्रस्ट ने अपने परोपकारी कार्यों का विस्तार किया। यह समाज के प्रति कॉर्पोरेट की जिम्मेदारी की गहरी भावना को दर्शाता है।
- **सेवा की भावना:** टाटा समूह के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने **आतंकी हमले के बाद ताज होटल के जीर्णोद्धार का नेतृत्व किया** और **प्रभावित कर्मचारियों को व्यक्तिगत स्तर पर सहायता प्रदान** की।

रतन टाटा के जीवन से महत्वपूर्ण सबक

- **करुणापूर्ण पूंजीवाद (Compassionate Capitalism): टाटा संस के लाभांश का 60-65% हिस्सा स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे धर्मार्थ कार्यों के लिए** व्यय किया जाता है।
- **सामाजिक कल्याण में योगदान:** रतन टाटा अपने व्यापारिक प्रयासों से आगे बढ़कर **परोपकारी कार्यों के लिए गहराई से प्रतिबद्ध** थे।
  - उन्होंने भारत के **पहले कैंसर अस्पताल की स्थापना** की।
- **व्यावसायिक नैतिकता:** वे **नैतिक नेतृत्व** में दृढ़ विश्वास रखते थे और **अल्पकालिक लाभ** की तुलना में **मजबूत नैतिक सिद्धांतों, सत्यनिष्ठा और सामाजिक कल्याण को अधिक प्राथमिकता** देते थे।
  - उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि **व्यवसाय का मतलब केवल पैसा कमाना नहीं है, बल्कि ग्राहकों और हितधारकों के लिए नैतिक रूप से सही काम करना भी** है।
- **उद्यमिता को बढ़ावा देना:** उन्होंने कई उभरते स्टार्ट-अप्स में निवेश किया, जैसे- कैशकरो, स्नैपडील, ओला कैब्स, डॉगस्पॉट, टीबॉक्स इत्यादि। इससे देश में **नवाचार की संस्कृति** को प्रोत्साहन मिला।
- **संधारणीयता को बढ़ावा:** टाटा समूह ने 2045 तक नेट जीरो उत्सर्जन हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।
  - **पेटा इंडिया** द्वारा रतन टाटा को उनकी अविन्या कॉन्सेप्ट कार में वीगन (Vegan) इंटीरियर के उपयोग के लिए **काऊ-फ्रेंडली फ्यूचर अवार्ड** से सम्मानित किया गया था।

निष्कर्ष

रतन टाटा का जीवन **नैतिक नेतृत्व** का प्रतीक था, जिससे हमें **करुणा, मजबूत नेतृत्व, विनम्रता और दृढ़ता** जैसे मूल्यवान सबक प्राप्त होते हैं। उन्होंने **LGBTQ को समान अवसर देने** से लेकर **टाटा समूह की कंपनियों** में कई सुधार किए। इसलिए, रतन टाटा का जीवन युवाओं, व्यवसायों और सिविल सेवकों आदि सहित सभी वर्गों के लिए मूल्यवान सबक और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

8.3. श्री तुलसी गौड़ा (Shri Tulsi Gowda)

परिचय

हाल ही में, भारतीय पर्यावरणविद् **तुलसी गौड़ा** का निधन हो गया। उन्हें **"वनों के विश्वकोश (Encyclopedia of the Forest)"** और **"वृक्ष देवी (Tree Goddess)"** के नाम से जाना जाता था, क्योंकि उन्हें वनों का गहरा ज्ञान था। उनकी **विरासत पर्यावरण संरक्षण के लिए एक प्रेरणा** बनी रहेगी और आने वाली पीढ़ियों को हमारी पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रेरित करती रहेगी।

तुलसी गौड़ा (1944-2024) का प्रमुख योगदान

- **पारंपरिक ज्ञान का सम्मान:** वृक्षारोपण का उनका दृष्टिकोण **पारिस्थितिक सिद्धांतों** पर आधारित था। इसमें **स्थानीय जलवायु के अनुकूल देशज प्रजातियों के चयन** पर ज़ोर दिया जाता है।
    - उन्हें **बीज संग्रहण** और **अंकुरण तकनीकों** में विशेषज्ञता प्राप्त थी।
- **वनीकरण प्रयासों के प्रति प्रतिबद्धता:** उन्होंने अपने जीवनकाल में **30,000 से अधिक पेड़ लगाए, जो उनके अद्वितीय पर्यावरणीय योगदान** को दर्शाता है।
- **पर्यावरणीय क्षति की भरपाई:** उनके प्रयासों से कर्नाटक के बंजर क्षेत्रों को पुनर्जीवित कर पर्यावरणीय संतुलन बहाल किया गया।
- **पर्यावरणीय न्याय को बढ़ावा:** उन्होंने **स्थानीय समुदायों को जंगलों और उनके संसाधनों के संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित किया**, जिससे समाज का समग्र कल्याण सुनिश्चित होगा।
- **इकोफेमिनिज्म (Ecofeminism) को बढ़ावा:** उन्होंने **पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका** को उजागर किया और इसे **आर्थिक सशक्तीकरण** से जोड़ा।
- **सामूहिक जिम्मेदारी (Collective Responsibility):** उन्होंने पर्यावरण की रक्षा के लिए समुदाय को शामिल किया। इससे सामूहिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हुई और लोग स्वयं पहल करने के लिए प्रेरित हुए।

निष्कर्ष

तुलसी गौड़ा की विरासत प्रेरणा और सशक्तीकरण को बढ़ावा देने वाली है। उन्होंने **दिखाया कि समुदाय-आधारित पहलें पर्यावरण में बड़ा बदलाव ला सकती हैं।** उनका जीवन हमें प्रकृति के प्रति देखभाल और जुड़ाव की महत्त्वपूर्ण संस्कृति विकसित करने का संदेश देता है।

8.4. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
करुणा	सत्याग्रह	दया	साधन और साध्य
परोपकारिता	गांधीजी का 'जंतर'	दृढ़ता	सेवा की भावना
करुणापूर्ण पूंजीवाद	सर्वोदय (सभी का कल्याण)	पर्यावरणीय न्याय	इकोफेमिनिज्म (Ecofeminism)

8.5. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई करुणा, सहानुभूति से भी आगे बढ़कर परिवर्तनकारी नेतृत्व का एक साधन बन जाती है। वर्तमान परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
करुणा (दूसरों के दुखों के प्रति सक्रिय चिंता और उन्हें दूर करने की इच्छा) को परिभाषित कीजिए।	लोक सेवकों के लिए प्रासंगिकता: जन-केंद्रित शासन, समावेशी प्रशासन: हाशिए पर पड़े लोगों (जैसे, दिव्यांग, आदिवासी) आदि को प्राथमिकता देना।	करुणा विकसित करने के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा और सेवा-उन्मुख मानसिकता आदि का सुझाव देते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

9. विविध (Miscellaneous)

9.1. युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)

प्रस्तावना

रूस-यूक्रेन और इज़राइल-हमास के बीच हालिया संघर्ष और युद्ध के दौरान किए गए क्रूर कृत्यों के बारे में सोशल मीडिया में इमेज और स्टोरीज़ का निरंतर प्रसार अनेक नैतिक प्रश्न खड़े करता है।

युद्ध से उत्पन्न होने वाली नैतिकता से जुड़ी हुई चिंताएं कौन-कौन सी हैं?

- **सही पक्ष बनाम गलत पक्ष का द्वंद्व:** युद्ध और हिंसा को समझने का प्रयास अक्सर इस निर्णय तक सीमित हो जाता है कि एक पक्ष सही है और दूसरा गलत।
    - हालांकि, स्वयं या दूसरों के द्वारा किए गए ऐसे कृत्यों को उचित ठहराने के लिए तर्क प्रस्तुत करना, इसे **नैतिक रूप से सही नहीं बनाता** है।
- **दंड और प्रतिशोध:** युद्ध में, **दंड और प्रतिशोध पर आधारित तर्कों** को अक्सर गलती को सुधारने के नैतिक तरीके के रूप में देखा जाता है।
    - युद्धों के परिणामस्वरूप होने वाली **मौतें और मृत्युदंड जैसी सजाएं देना कई नैतिक प्रश्न खड़े करता है।**
- **इंसानियत का पतन:** वर्तमान समय में कुछ शक्तिशाली देश अपने **उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप** में **युद्ध का सहारा** ले रहे हैं।
- **व्यक्तिगत बनाम सामूहिक पहचान:** इजराइल-फिलिस्तीन युद्ध जैसे हालिया संघर्ष एक ऐसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं जहां लोग व्यक्तियों को मानव के रूप में नहीं देखते हैं, अपितु उन्हें **केवल सामूहिक पहचान के संदर्भ में** देखा जाता है।

जस्ट वॉर थ्योरी

- यह सिद्धांत कई स्थितियों पर विचार करता है, जो यह निर्धारित करती हैं कि किसी युद्ध को न्यायसंगत, नैतिक या वैध माना जा सकता है या नहीं।
- **जस्ट वॉर (न्याय युद्ध) के मानदंड इस प्रकार हैं:**
    - **जूस एड बेलम/Jus ad bellum (युद्ध को न्यायोचित ठहराने वाले कारक):** इसमें युद्ध में शामिल होने का **उचित कारण और नेक उद्देश्य होना** जैसे सिद्धांत शामिल हैं।
    - **जूस इन बेलो/Jus in bello/ (युद्ध में शामिल पक्षों के आचरण या युद्ध के नियम):** इसमें आनुपातिकता (उदाहरण के लिए- अत्यधिक या अनावश्यक क्षति से बचा जाना चाहिए) जैसे सिद्धांत शामिल हैं।
    - **जूस पोस्ट बेलम/Jus post bellum (युद्ध के बाद युद्धरत पक्षों की क्या जिम्मेदारी है?):** इसमें विजेताओं के गलत कार्यों को रोकना, युद्ध के बाद पुनर्निर्माण की सुविधा प्रदान करना और स्थायी शांति बहाल करना शामिल हैं।

क्या इन नैतिक आदर्शों का पालन किया जा रहा है?

कुछ राष्ट्र और सैन्य संगठन स्पष्ट रूप से युद्ध के सिद्धांतों का पालन करने और उन्हें अपने सैन्य नीतियों, युद्ध या संघर्ष के नियमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करने का प्रयास करते हैं।

हालांकि, अधिकांश मामलों में, इन सिद्धांतों का पालन कम ही किया जाता है। इस प्रवृत्ति के प्रमुख कारणों के रूप में निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है:

- **गैर-राज्य अभिकर्ताओं की भागीदारी:** जैसे कि **विद्रोही समूह या आतंकवादी संगठन,** अक्सर राज्य अभिकर्ताओं के समान **कानूनी और नैतिक बाधाओं से बंधे नहीं होते** हैं। उनके कार्य **अक्सर युद्ध सिद्धांतों का उल्लंघन** कर सकते हैं।
- **विभेद के सिद्धांत (Distinction Principle) की अवहेलना:** विभेद के सिद्धांत को लागू करने के लिए लड़ाकू और गैर-लड़ाकू सैनिकों के बीच स्पष्ट अंतर की आवश्यकता होती है, लेकिन वास्तव में, नागरिक अनजाने में सशस्त्र संघर्षों के शिकार बन जाते हैं।
    - उदाहरण के लिए- **सामूहिक विनाश के हथियारों** का उपयोग।

© Vision IAS

- **तकनीकी प्रगति और आनुपातिकता (Proportionality) का सिद्धांत:** एडवांस सैन्य प्रौद्योगिकियों, जैसे कि ड्रोन और प्रेसिजन-गाइडेड हथियारों का उपयोग, **आनुपातिकता और विभेद के सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता** है।
- **सीमित वैश्विक नियंत्रण:** युद्ध सिद्धांतों का न्यायसंगत तरीके से प्रवर्तन अक्सर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, **संधियों और समझौतों पर निर्भर** करता है। इन **तंत्रों की प्रभावशीलता अक्सर संदेहास्पद** होती है।

आगे की राह

- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संस्थानों को मजबूत करना:** युद्ध के दौरान सैनिकों के आचरण को नियंत्रित करने वाले **अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को मजबूत करना और उन्हें लागू करना** चाहिए। उदाहरण के लिए- **जेनेवा कन्वेंशन** में इससे संबंधित प्रावधान शामिल किए गए हैं।
    - व्यक्तियों या राष्ट्रों को जवाबदेह बनाने में **अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाओं की भूमिका को भी बढ़ाने** की आवश्यकता है।
- **कठोर हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण का समर्थन करना:** युद्ध में उन हथियारों के उपयोग को सीमित करना चाहिए, जो **नागरिकों को व्यापक स्तर पर नुकसान** पहुंचा सकते हैं।
- **शांति स्थापना और संघर्ष समाधान:** कूटनीतिक और शांति स्थापना के प्रयासों में निवेश करना चाहिए। इसमें **संघर्षों के मूल कारणों का समाधान करना, बातचीत को बढ़ावा देना** और बातचीत को सुगम बनाना आदि **हिंसा की रोकथाम में महत्वपूर्ण योगदान** दे सकता है।
- **अन्य उपाय:** युद्ध की नैतिकता के संबंध में **आम सहमति के आधार पर एक आचार संहिता (Code of Conduct)** तैयार की जा सकती है, जो **विभिन्न देशों की सेनाओं पर लागू किया जा सके।**

निष्कर्ष

युद्ध नैतिकता की सीमाओं को चुनौती देता है, लेकिन **जस्ट वॉर थ्योरी** जैसे फ्रेमवर्क आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। मानवीय गरिमा को बनाए रखना, नागरिकों की सुरक्षा करना और शांतिपूर्ण समाधान को प्राथमिकता देना वैश्विक कार्रवाई का मूल उद्देश्य होना चाहिए। युद्ध में नैतिकता को अपनाना एक विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता है।

> युद्ध सबसे बड़ी त्रासदी है जो मानवता को व्यथित कर सकती है, यह धर्म का नाश कर देती है, देशों का सर्वनाश कर देती है तथा परिवारों को तबाह कर देती है। कोई भी संकट इससे तो बेहतर है।
>
> **-मार्टिन लूथर**

9.2. शांति के पहलू (Aspects of Peace)

परिचय

हाल ही में, **संयुक्त राष्ट्र सभ्यता गठबंधन के 10वें वैश्विक फोरम**[9] में वैश्विक नेताओं ने **कैस्केस घोषणा-पत्र** को अपनाया है। इसमें उन्होंने मौजूदा अशांत वातावरण में शांति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जताई है। इस घोषणा-पत्र में **अंतर-पीढ़ीगत संवाद** के महत्व पर जोर दिया गया है, ताकि **शांति, सतत विकास और मानवाधिकारों** की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। इससे पहले, **यूनेस्को HK एसोसिएशन की 2012 की शांति परियोजना** ने शांति के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया था। इसमें **शांति को व्यक्तियों और जीवन के सभी पहलुओं में सौहार्द** के रूप में परिभाषित किया गया था।

शांति के कुछ दार्शनिक पहलू

- **गांधीवादी शांति की अवधारणा:** महात्मा गांधी के अनुसार, शांति का मूल आधार **अहिंसा** और **सत्य** है।
- **शांति की उपयोगितावादी अवधारणा:** एक शांतिपूर्ण समाज सामूहिक कल्याण की भावना को बढ़ावा देता है।
- **शांति पर कांट की अवधारणा:** इमैनुअल कांट के अनुसार, शांति केवल एक निष्क्रिय अवस्था नहीं है, बल्कि यह व्यक्तियों और राष्ट्रों का सक्रिय नैतिक कर्तव्य भी है।
    - वे **तर्कसंगतता, सार्वभौमिक नैतिकता** और **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग** के जरिए स्थायी शांति के पक्षधर थे।

---

[9] 10th Global Forum of UN Alliance for Civilizations

शांति के पांच पहलू

पहलू	अवधारणा	चुनौतियां
व्यक्तिगत/ आंतरिक शांति	यह अवधारणा **लोगों को जीवन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने, तनाव को कम करने** और समाज में सकारात्मक योगदान देने में मदद कर सकती है।	कार्य-जीवन असंतुलन, आर्थिक अस्थिरता के कारण मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं। भौतिकवाद और उपभोक्तावाद का बढ़ता प्रभाव।
सामाजिक शांति	समाज में शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण संबंधों के निर्माण को बढ़ावा देती है।	भेदभाव और बहिष्करण से असंतोष और हिंसा बढ़ती है। भ्रामक सूचनाएं, हेट स्पीच और जेंडर व नस्ल से संबंधित **पूर्वाग्रह।** .
पारिस्थितिक शांति	सतत विकास और पर्यावरण के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने पर जोर देती है।	**जलवायु परिवर्तन,** प्राकृतिक आपदाएं, **संसाधनों के लिए संघर्ष** और विस्थापन को बढ़ावा देते हैं। पर्यावरणीय मुद्दों पर अपर्याप्त सहयोग।
सांस्कृतिक शांति	सांस्कृतिक विविधता को समझने, उसे सम्मान देने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है।	**नृजातीय अहंकार:** अपनी संस्कृति को सर्वोपरि मानना, **सांस्कृतिक असहिष्णुता** और हेट स्पीच।
राजनीतिक शांति	सरकार, व्यापार, और समाज के **समूहों, संगठनों और समुदायों के मध्य** व्यापार और समाज के स्तर पर न्यायपूर्ण और अहिंसा पर आधारित संबंधों को बढ़ावा देती है।	**वैश्विक स्तर पर:** क्षेत्रीय विवाद, प्रतिद्वंद्विता, **कमजोर अंतर्राष्ट्रीय शासन**, परमाणु हथियारों का प्रसार। **राष्ट्रीय स्तर पर:** भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, अदि।

शांति की बहाली और उसे बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

- **वैश्विक शांति (Global Peace):** विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसी विभिन्न वैश्विक संस्थाएं संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित कर रही हैं। साथ ही, उनके द्वारा बहुध्रुवीयता को बढ़ावा देकर वैश्विक स्थिरता और शांति सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है।
- **राजनीतिक शांति (Political Peace): अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ)** जैसी वैश्विक संस्थाएं तथा विभिन्न शांति वार्ताएं और संधियां विवादों का शांतिपूर्ण समाधान सुनिश्चित करती हैं।
- **पारिस्थितिक शांति (Ecological Peace):** पर्यावरणीय क्षरण को रोकने और **संसाधन-आधारित संघर्षों को टालने** के लिए **पेरिस समझौते** जैसे प्रयास किए गए हैं।
  - **वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (WWF) के 'अर्थ ऑवर'** जैसे कार्यक्रम **पारिस्थितिकी संधारणीयता** के प्रति जागरूकता को बढ़ाते हैं।
- **आंतरिक शांति (Inner Peace): अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** और **विश्व ध्यान दिवस**[10] जैसे वैश्विक कार्यक्रम मानसिक स्वास्थ्य और शांति को बढ़ावा देते हैं।
- **सांस्कृतिक शांति (Cultural Peace): यूनेस्को (UNESCO)** के **वर्ल्ड कल्चर फोरम** विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच आपसी समझ और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।
  - यूनेस्को का **सांस्कृतिक विरासत कार्यक्रम**[11] संघर्ष के दौरान सांस्कृतिक स्थलों की सुरक्षा करता है, जो एकता और शांति का प्रतीक है।

[10] World Meditation Day

[11] Cultural heritage Programe

© Vision IAS

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
वैश्विक/ राजनीतिक शांति	
सरकारें	सरकारें **नीतियां बनाती हैं, कानून लागू और नियमों को सख्ती से लागू करती हैं,** ताकि अपने देश और वैश्विक स्तर पर **शांति, मानवाधिकार तथा न्याय** को बढ़ावा दिया जा सके।
अंतर्राष्ट्रीय संगठन	**ये संघर्षों के समाधान के लिए मध्यस्थता करते हैं, कूटनीति को बढ़ावा देते हैं** और **वैश्विक शांति** व सतत विकास के लिए प्रयासों का समन्वय करते हैं।
नागरिक समाज संगठन	ये स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर **शांति, मानवाधिकार और सामाजिक बदलाव** की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
सामाजिक और सांस्कृतिक शांति	
सामुदायिक नेता	स्थानीय नेता **संघर्षों को हल करने, न्याय की वकालत करने और अपने समुदायों में सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेता	ये प्रेम, करुणा, क्षमा और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देकर शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। साथ ही, ये विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक समूहों के बीच समझ और सौहार्द को प्रोत्साहित करते हैं।
मुख्यधारा की मीडिया और सोशल मीडिया	मीडिया सही सूचनाओं को बढ़ावा देकर तथा **गलत सूचनाओं और घृणास्पद हेट स्पीच** आदि का मुकाबला करके शांति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
व्यक्तिगत/ आंतरिक शांति	
व्यक्तिगत स्तर पर	प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में **सहिष्णुता, समझ और समानुभूति** जैसे सिद्धांतों का पालन करके, अपने परिवारों और समुदायों के भीतर शांतिपूर्ण वातावरण बनाकर शांति में योगदान देता है।
परिवार के स्तर पर	परिवार **समाज की पहली इकाई** होती है, जहां शांति की स्थापना शुरू होती है। परिवार के लोग अपने बच्चों में **अहिंसा, सम्मान और संघर्ष समाधान जैसे मूल्यों** को स्थापित करते हैं।
शैक्षणिक संस्थान	शिक्षक और पाठ्यक्रम **शांतिपूर्ण मूल्यों, क्रिटिकल थिंकिंग, सामाजिक न्याय, पर्यावरणीय संधारणीयता और संघर्ष समाधान** जैसे गुण सिखाकर भावी पीढ़ियों को आकार देते हैं।

निष्कर्ष

शांति एक व्यापक अवधारणा है। शांति में संघर्ष की ग़ैर-मौजूदगी के साथ-साथ लोगों और राष्ट्रों के बीच **सद्भाव, न्याय, समानता और आपसी समझ** का मौजूद होना भी आवश्यक है। शांति की आंतरिक भावना को बाह्य रूप से व्यक्त करके **वैश्विक समस्याओं, जैसे- मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक समानता के लिए स्थायी समाधानों को प्रोत्साहित** किया जा सकता है।

> शांति केवल वहां रह सकती है जहां मानवाधिकारों का सम्मान किया जाता है, जहां लोगों को भोजन प्रदान किया जाता है, और जहां व्यक्ति तथा राष्ट्र स्वतंत्र होते हैं। स्वयं के साथ और अपनी बाहरी दुनिया के साथ सच्ची शांति केवल मानसिक शांति के विकास के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है।
>
> **-दलाई लामा**

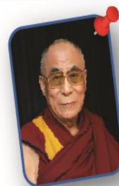

9.3. मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार (Ethical Considerations in Contemporary Foreign Aid)

परिचय

हाल के दिनों में, विदेशी सहायता (Foreign Aid) की अवधारणा गहन समीक्षा के अधीन रही है। विशेष रूप से, संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) द्वारा अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी (USAID) के संचालन को 90 दिनों के लिए निलंबित करने की कार्रवाई के बाद चर्चा और बढ़ गई है। इस कदम ने विदेशी सहायता के नैतिक प्रभावों, इसके पीछे की प्रेरणाओं और वास्तविक दुनिया पर इसके प्रभाव को लेकर एक व्यापक चर्चा को जन्म दिया है।

संयुक्त राज्य अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी (USAID) की स्थापना **विदेशों में लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने, एक स्वतंत्र, शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व को बढ़ावा देने और सॉफ्ट पावर** के माध्यम से अमेरिकी सुरक्षा एवं समृद्धि को बढ़ाने के लिए की थी।

विदेशी सहायता विभिन्न रूपों में हो सकती है, जैसे- **आर्थिक सहायता, सैन्य सहायता और मानवीय सहायता**। हालांकि, यह आमतौर पर **विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों को प्रदान की जाती है**।

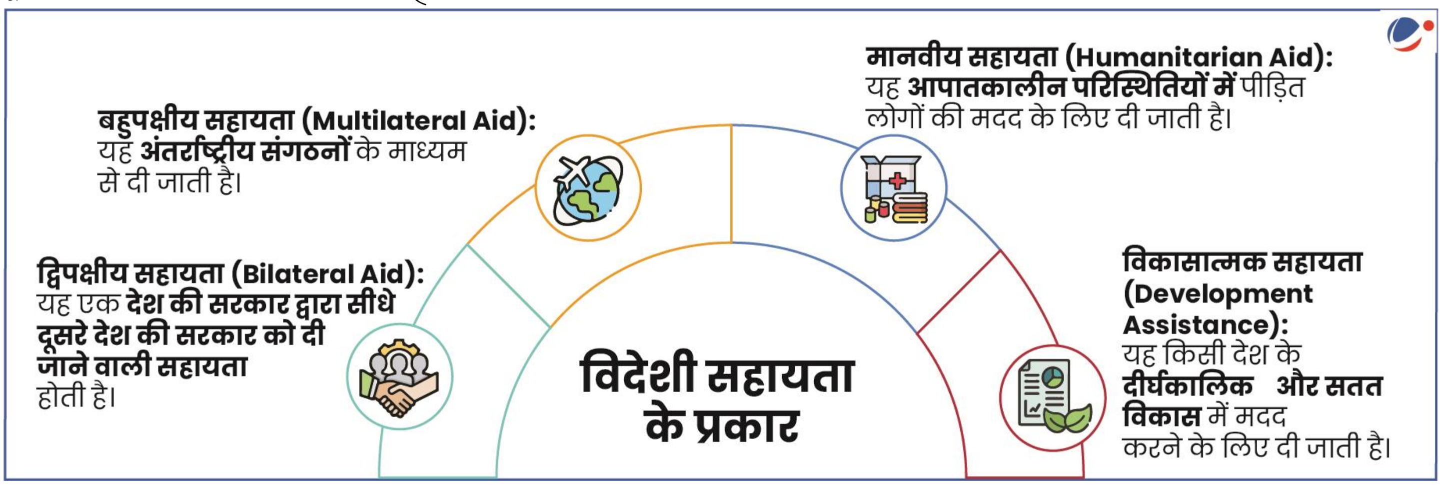

विदेशी सहायता के औचित्य के लिए दार्शनिक और नैतिक तर्क:

- **उपयोगितावाद (अधिकतम भलाई का सिद्धांत):** सहायता वहां दी जाए, जहां यह अधिकतम लोगों के लिए सबसे अधिक लाभकारी हो।
- **अधिकार-आधारित दृष्टिकोण (सार्वभौमिक मानवाधिकार):** दुनिया भर में सभी के अधिकार सुनिश्चित करना।
- **सामुदायिकतावाद (समुदाय और साझा मूल्यों का महत्व): स्थानीय संस्कृति** और **समुदाय का सम्मान तथा समर्थन** करना चाहिए।
- **स्वतंत्रतावाद (व्यक्तिगत स्वतंत्रता और मुक्त बाजार):** सहायता को लेकर संदेह; केवल स्वैच्छिक या आपातकालीन सहायता को प्राथमिकता देना।
- **ग्लोबल सिटीजन (कॉस्मोपॉलिटनिज़्म): वैश्विक स्तर पर समानता** के प्रति व्यापक प्रतिबद्धता के रूप में सहायता देना।

क्या आप जानते हैं?

> **संयुक्त राष्ट्र** विकसित देशों से यह अपेक्षा करता है कि वे **अपनी सकल राष्ट्रीय आय का कम से कम 0.7%** अंतर्राष्ट्रीय सहायता के रूप में **आधिकारिक विकास सहायता (ODA)** पर खर्च करें।

आगे की राह

- **पारदर्शिता बढ़ाना: सार्वजनिक डैशबोर्ड** और **स्वतंत्र ऑडिट** का उपयोग करके यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सहायता सही तरीके से आवंटित और प्रबंधित की जा रही है और इसके प्रभाव का सही मूल्यांकन हो रहा है।
- सहायता परियोजनाओं में **जलवायु लचीलापन, नवीकरणीय ऊर्जा** और **संधारणीय कृषि** जैसी पर्यावरणीय पहलुओं को प्राथमिकता देना।
- **स्थानीय समुदायों को शामिल करना: दी जाने वाली सहायता स्थानीय संस्कृति तथा संदर्भ के अनुसार व्यवस्थित और अनुरूप** होनी चाहिए। साथ ही, **परियोजना की प्लानिंग में स्थानीय NGOs और नेताओं को शामिल** करना चाहिए।

© Vision IAS

- **अन्य**:
    - **प्राप्तकर्ता देशों के राष्ट्रीय लक्ष्यों** के अनुसार सहायता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, बजाय इसके कि दाता देश अपने एजेंडों के अनुसार लक्ष्यों को तय करें।
    - सहायता के वितरण, निगरानी और मूल्यांकन में **प्रौद्योगिकी** का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि प्रक्रिया अधिक प्रभावी और पारदर्शी हो सके।
    - स्थानीय क्षमता निर्माण पर जोर देना चाहिए, ताकि दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता सुनिश्चित हो सके, न कि केवल अल्पकालिक राहत पर निर्भरता बनी रहे।

मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार

निर्भरता:
उदाहरण के लिए, कई अफ्रीकी देश विदेशी सहायता पर निर्भर हो गए हैं, जिससे उनकी आर्थिक नीतियां प्रभावित हुई हैं।

भ्रष्टाचार:
उदाहरण के लिए, श्रीलंका का आर्थिक संकट विदेशी सहायता के दुरुपयोग और भ्रष्टाचार के कारण और गहरा गया।

दूसरे देश की संवेदनशीलता का ख्याल नहीं करना:
उदाहरण के लिए, कुछ अफ्रीकी और एशियाई देशों में **महिलाओं के जनन स्वास्थ्य संबंधी अधिकार अभियानों को** सांस्कृतिक या धार्मिक मान्यताओं के कारण प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोग इन अभियानों को अनैतिकता को बढ़ावा देने वाला मानते हैं।

राजनीतिक मंशा:
उदाहरण के लिए, चीन अपनी **'ऋण-जाल कूटनीति'** के तहत अन्य देशों में निवेश को अपना राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करता है।

पर्यावरण को नुकसान:
कुछ सहायता परियोजनाओं, जैसे बड़े पैमाने पर कृषि संबंधी पहलों के कारण पर्यावरणीय क्षति हुई है।

निष्कर्ष

विदेशी सहायता को केवल चैरेटी तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि नैतिकता, साझेदारी और सततता पर आधारित मॉडल के रूप में विकसित होना चाहिए। वास्तव में इस सहायता को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसे स्थानीय समुदायों को सशक्त करने में योगदान देना चाहिए, स्थानीय संस्कृति का सम्मान करना चाहिए और पारदर्शिता को बनाए रखना चाहिए। तभी विदेशी सहायता वैश्विक समानता, मानव की गरिमा और सतत विकास को बढ़ावा देने के अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है।

9.4. नैतिकता और जलवायु परिवर्तन (Ethics and Climate Change)

परिचय

ग्लेशियोलॉजिस्ट और स्थानीय समुदाय ने नेपाल के याला ग्लेशियर के समाप्त होने पर शोक व्यक्त किया हैं। 1970 के दशक से अब तक यह ग्लेशियर 66% तक सिकुड़ चुका है। इससे यह नेपाल का पहला ग्लेशियर होगा जिसे "मृत" घोषित कर दिया जाएगा। जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज हो गई है।

जलवायु परिवर्तन को हमेशा एक पर्यावरणीय या भौतिक समस्या के रूप में देखा जाता है, लेकिन इस समस्या का समाधान नैतिक मुद्दों में भी निहित है।

जलवायु परिवर्तन से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **विभिन्न क्षेत्रों और आबादी पर असंगत प्रभाव:** विकासशील देश और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अक्सर अपनी सुभेद्यता तथा अनुकूलन के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण जलवायु प्रभावों का व्यापक प्रभाव झेलना पड़ता है।
    - उदाहरण के लिए- लघु द्वीपीय विकासशील देश (SIDS)।

- **जिम्मेदारियों का असमान वितरण:** ऐतिहासिक रूप से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में औद्योगिक देशों ने सबसे अधिक योगदान दिया है। यह जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी मुख्य कारण रहा है तथा इसके नकारात्मक प्रभावों का सामना हर किसी को करना पड़ता है।
- **देशज लोगों के लिए जलवायु न्याय:** जलवायु परिवर्तन देशज लोगों की भूमि से जुड़ी आजीविका, संस्कृति, पहचान और जीवन के तरीकों के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।
- **तकनीकी असमानता:** जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ ऊर्जा समाधानों तक पहुंच सभी देशों तथा समुदायों के लिए एक समान नहीं है।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित
सरकारें	• पर्यावरण की रक्षा करना, नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करना, **भू-राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना, संधारणीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देना** और **पेरिस समझौते** जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।
अंतर-सरकारी संगठन	• **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना, बातचीत और समझौतों को सुगम** बनाना, वैश्विक लक्ष्य एवं उद्देश्य निर्धारित करना और विकासशील देशों के क्षमता निर्माण में सहयोग करना।
व्यवसाय और निगम	• जलवायु से संबंधित जोखिमों का प्रबंधन करना, **संधारणीय कार्य पद्धतियों को अपनाना, स्वच्छ प्रौद्योगिकियों में निवेश करना।**
देशज लोग	• अधिकारों की रक्षा, **पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं का संरक्षण तथा जलवायु निर्णयन प्रक्रियाओं** तक अपनी बात पहुंचाना।
वैज्ञानिक समुदाय	• **अनुसंधान करना, ज्ञान साझा करना, जलवायु मॉडल में सुधार करना** और साक्ष्य-आधारित जलवायु नीतियों का समर्थन करना।

आगे की राह

सदस्य देशों और अन्य हितधारकों को उचित निर्णय लेने और प्रभावी नीतियां लागू करने में मदद करने के लिए **यूनेस्को ने जलवायु परिवर्तन के संबंध में नैतिक सिद्धांतों के एक घोषणा-पत्र (Declaration of Ethical Principles) को अपनाया है:**

- **ह्रास/ क्षति की रोकथाम हेतु:** जलवायु परिवर्तन के परिणामों का बेहतर अनुमान लगाने और जलवायु परिवर्तन का शमन करने तथा उसके अनुकूल और प्रभावी नीतियों को लागू करना।
- **एहतियाती दृष्टिकोण:** निश्चित वैज्ञानिक प्रमाणों के अभाव के आधार पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों की रोकथाम करने या शमन करने के उपायों के अंगीकरण को स्थगित नहीं करना।
- **समानता और न्याय:** जलवायु परिवर्तन का इस तरह से प्रबंधन करना जिससे न्याय और समानता की भावना के अनुरूप सभी को लाभ मिले।
- **एकजुटता:** विशेष रूप से अल्पविकसित देशों (LDCs) और छोटे द्वीपीय विकासशील देशों (SIDS) में जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील लोगों और समूहों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से सहायता करना।
- **अन्य:** निर्णय लेने में बेहतर सहायता के लिए विज्ञान और नीति के बीच अंतर्संबंध को मजबूत करना, सतत विकास को बढ़ावा देना, आदि।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन न केवल एक वैज्ञानिक विषय है, बल्कि नैतिकता का विषय भी है, जो निष्पक्षता, जवाबदेही और समावेशिता की मांग करता है। वास्तविक प्रगति के लिए समानता और न्याय पर आधारित वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है, ताकि सभी के लिए, विशेष रूप से सबसे वंचित वर्ग के लिए संधारणीय और सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित किया जा सके। साथ ही, **सामान्य किंतु विभेदित उत्तरदायित्व (CBDR)**[12] के सिद्धांत को अक्षरशः लागू किया जाना चाहिए।

> जलवायु परिवर्तन संबंधी विचार-विमर्श के मूल में नैतिकता और समानता समाहित होनी चाहिए। हमें इस विचार-विमर्श में जलवायु परिवर्तन के विषय से आगे बढ़ते हुए जलवायु न्याय की ओर जाना होगा।
>
> **-नरेंद्र मोदी**

[12] Common But Differentiated Responsibilities

© Vision IAS

9.5. मृत्युदंड और नैतिक आयाम (Ethics of Capital Punishment)

परिचय

ऐतिहासिक रूप से, लगभग सभी समाजों में जघन्य अपराधों को रोकने के लिए मृत्युदंड या प्राणदंड का उपयोग किया जाता था। **एमनेस्टी इंटरनेशनल की 2024 की एक रिपोर्ट के अनुसार** चीन, ईरान, सऊदी अरब और सिंगापुर जैसे देशों में फांसी की सजा के मामलों में 32% की वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसे में, मृत्युदंड आधुनिक आपराधिक न्याय प्रणाली और नैतिकता के संदर्भ में एक अत्यंत विवादास्पद विषय बन गया है।

प्रमुख हितधारक और उनके हित

हितधारक	हित और चिंताएं
दोषी व्यक्ति	जीवन जीने का अधिकार, निष्पक्ष सुनवाई और उचित प्रक्रिया का अधिकार, भेदभाव, **अपरिवर्तनीय सजा,** मनोवैज्ञानिक तनाव, आदि।
पीड़ितों के परिवार	**न्याय और संतोष, बदला लेने की भावना (सजा)** और सुलह-संवाद आधारित न्याय, लंबी कानूनी प्रक्रिया, आदि।
व्यापक समाज	लोक सुरक्षा, न्याय, सामूहिक अंतरात्मा, और नैतिक मानक।
कानूनी और न्यायिक प्रणालियां	**निष्पक्ष सुनवाई** सुनिश्चित करना, संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखना, डिटेरेन्स को मानवाधिकारों के साथ संतुलित करना, इत्यादि।
मानवाधिकार संगठन	प्रतिशोध के बजाय सुधार को वरीयता देना, मानवीय गरिमा, **जीवन का अधिकार** और न्यायिक त्रुटियों की संभावना।
सरकार और नीति निर्माता	**जनमत का दबाव, अंतर्राष्ट्रीय दायित्व,** निवारक के रूप में मृत्युदंड की **प्रभावशीलता** का पता लगाना।

मृत्युदंड के पक्ष में तर्क

- **निवारक उपाय:** उपयोगितावाद (परिणामवादी नैतिकता) के सिद्धांत के आधार पर, कुछ विद्वानों का तर्क है कि मृत्युदंड गंभीर अपराधों को रोकता है।
- **मानसिक शांति और संतुष्टि:**अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि मृत्युदंड पीड़ितों के परिवारों के लिए मानसिक शांति प्रदान करता है।
- **सार्वजनिक वित्त पर बोझ:** उच्च जोखिम वाले, हिंसक अपराधियों को सुरक्षा के साथ जेलों में रखना सरकार के लिए महंगा साबित होता है।
- **अन्य:** आपराधिक पुनरावृत्ति की रोकथाम, आदि।

मृत्युदंड के विपक्ष में तर्क

- **मानवाधिकारों का उल्लंघन:** कान्ट की कर्त्तव्य-मूलक नैतिकता (Deontological Ethics) के अनुसार, कुछ कृत्य (जैसे- किसी का जीवन लेना) नैतिक रूप से गलत होते हैं, भले ही उनके परिणाम अच्छे क्यों न हों।
- **ठीक न की जा सकने वाली त्रुटि और भेदभाव का जोखिम:** अगर किसी व्यक्ति को फांसी दे दी जाती है, तो इसे पलट नहीं सकते।
- **अपराध निवारण और विकल्पों की कमी:** इस बात का बहुत कम प्रमाण है कि मृत्युदंड अपराध को रोकने में आजीवन कारावास से अधिक प्रभावी है।

भारत में मृत्युदंड

- **कानूनी फ्रेमवर्क:** भारतीय न्याय संहिता आतंकवाद, लोक सेवकों की हत्या, बलात्कार जैसे हिंसक और जघन्य अपराधों के लिए मृत्युदंड का प्रावधान करती है।
- **न्यायिक सिद्धांत:** सुप्रीम कोर्ट ने **बच्चन सिंह बनाम पंजाब राज्य (1980)** मामले में "दुर्लभ से दुर्लभतम" सिद्धांत दिया और कहा कि मृत्युदंड उन अपराधों के लिए होना चाहिए जो इतने जघन्य हों कि वे समाज की सामूहिक अंतरात्मा को झकझोर दें।
  - **मच्छी सिंह बनाम पंजाब राज्य वाद:** इसके तहत न्यायालय द्वारा कुछ मानदंड निर्धारित किए गए थे, ताकि यह आकलन किया जा सके कि वास्तव में दुर्लभ से दुर्लभतम सिद्धांत के अंतर्गत कौन-से अपराध आ सकते हैं।

- **राष्ट्रपति और राज्यपाल की क्षमादान की शक्ति:** एक बार जब अपील की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है और उच्चतर न्यायालयों ने प्रतिवादी (दोषी) के लिए मृत्युदंड की पुष्टि कर दी हो, तो प्रतिवादी राज्य या राष्ट्रीय कार्यपालिका को दया याचिकाएं प्रस्तुत कर सकता है।
- **वर्तमान स्थिति:** भारत में 500 से अधिक लोग मृत्युदंड की सजा का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन फांसी की सजा अब दुर्लभ हो गई है। कोर्ट ने अधिकतर मामलों में मृत्युदंड को आजीवन कारावास की सजा में बदल दिया है, जो सजग दृष्टिकोण को दर्शाता है।
    - आखिरी बार वर्ष 2020 में निर्भया केस के दोषियों को फांसी दी गई थी।

आगे की राह

- **संतुलन की आवश्यकता:** मृत्युदंड पर बहस में आरोपी के अधिकारों, पीड़ितों के हितों और समाज की न्याय और निवारण की आवश्यकता को संतुलित करना जरूरी है।
- **विधि आयोग की सिफारिश:** 262वीं विधि आयोग की रिपोर्ट (2015) ने आतंकवाद और संबंधित अपराधों को छोड़कर सभी अपराधों के लिए मृत्युदंड को समाप्त करने की सिफारिश की थी। आयोग ने कहा कि मृत्युदंड का निवारक प्रभाव सीमित है और न्यायिक गलतियों का खतरा भी है।
- **अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य:** नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञा-पत्र (ICCPR)[13] का अनुच्छेद 6 केवल "सबसे गंभीर अपराधों" के लिए मृत्युदंड की अनुमति देता है और इसे समाप्त करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।
- **मानवाधिकार संगठन:** मानवाधिकार संगठन यह सिफारिश करते हैं कि न्याय व्यवस्था को **पीड़ित-केंद्रित** बनाया जाए और पुनर्स्थापनात्मक न्याय में अपराधी को सुधारने और समाज में फिर से जगह बनाने के लिए काम किया जाता है।

निष्कर्ष

1948 में **मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा-पत्र (UNDHR)**[14] को अपनाने के बाद से, दुनिया भर में मृत्युदंड के खिलाफ एक बड़ा रुझान देखा गया है। इसके बावजूद, कई देशों में मृत्युदंड अभी भी लागू है, और यह अक्सर अन्यायपूर्ण मुकदमों, राजनीतिक दमन या गैर-हिंसक अपराधों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार, न्याय और जीवन के सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए मानवीय और साक्ष्य-आधारित विकल्पों की आवश्यकता होती है।

> "किसी भी स्थिति में बार-बार दंड देना सरकार की कमजोरी या उदासीनता को दर्शाता है। कोई भी व्यक्ति इतना बुरा नहीं होता कि उसमें सुधार न किया जा सके। यदि कोई व्यक्ति के जीवित रहने से समाज को किसी तरह का खतरा नहीं है, तो उसे उदाहरण बनाने के लिए भी मृत्युदंड नहीं दिया जाना चाहिए।"
>
> **-जीन-जैक्स रूसो**

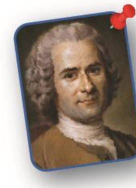

9.6. मुख्य शब्दावलियां (Key Words)

मुख्य शब्दावलियां			
जस्ट वॉर थ्योरी	वैश्विक शासन	आनुपातिकता	पारिस्थितिकी शांति
सामुदायिकतावाद	स्वतंत्रतावाद	निवारण	प्रतिशोधात्मक न्याय
मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा-पत्र (UNDHR)	एहतियाती दृष्टिकोण	सामाजिक न्याय	संघर्ष समाधान

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
✓ सामान्य अध्ययन ✓ निबंध ✓ दर्शनशास्त्र
2025 ENGLISH MEDIUM 13 JULY हिन्दी माध्यम 13 जुलाई
2026 ENGLISH MEDIUM 13 JULY हिन्दी माध्यम 13 जुलाई

[13] International Covenant on Civil and Political Rights

[14] Universal Declaration of Human Rights

9.7. अभ्यास प्रश्न (Practice Question)

उत्तर लेखन प्रारूप

मृत्युदंड गंभीर नैतिक चिंताओं को जन्म देता है। मृत्युदंड के पक्ष और विपक्ष में नैतिक तर्कों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

भूमिका	मुख्य भाग	निष्कर्ष
मृत्युदंड आदि की वर्तमान स्थिति का संक्षिप्त परिचय दीजिए।	मृत्युदंड (निवारण, आदि) के पक्ष और विपक्ष में नैतिक तर्कों (जीवन का अधिकार, आदि) का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।	पुनर्स्थापनात्मक घटकों सहित आजीवन कारावास जैसे विकल्प सुझाते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

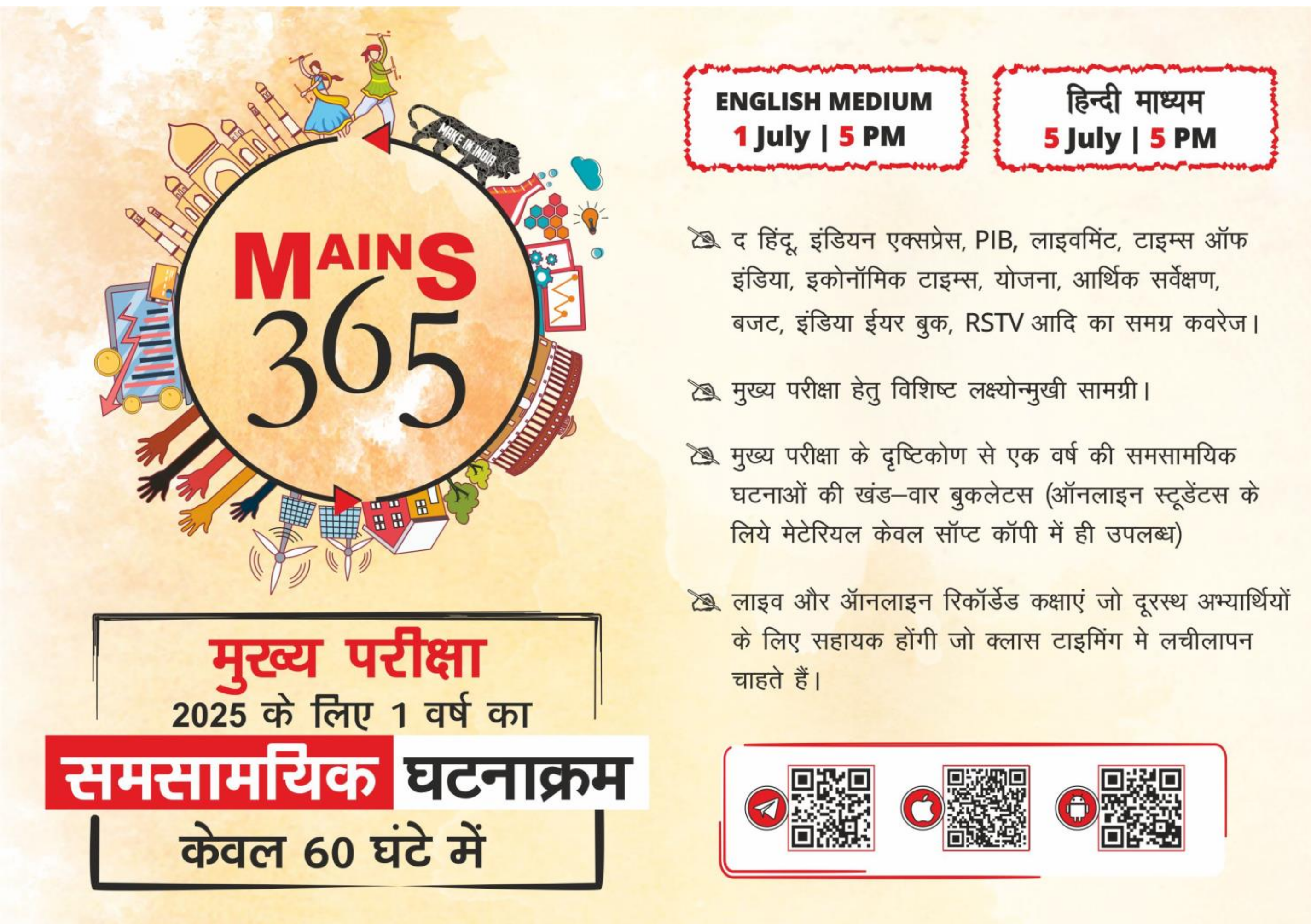

10. अपनी योग्यता का परीक्षण कीजिए (Test Your Learning)

1. हाल ही में, सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश ने लोक सभा का चुनाव लड़ने के लिए अपने पद से इस्तीफा दे दिया। संबंधित न्यायाधीश ऐसे प्रमुख निर्णयों से जुड़े थे, जिनमें सत्तारूढ़ सरकार के कार्यों को उचित ठहराया गया था। इससे विपक्षी दलों ने न्यायाधीश के न्यायिक आचरण को लेकर चिंता जताई।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश के सत्तारूढ़ राजनीतिक दल में शामिल होने से उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों की व्याख्या कीजिए।
- न्यायाधीशों के राजनीति में शामिल होने के पक्ष और विपक्ष में तर्कों का मूल्यांकन कीजिए, इसके लाभ और जोखिम की तुलना कीजिए।
- न्यायिक संस्था में जनता के विश्वास और न्यायाधीशों के कार्यों के बीच संतुलन सुनिश्चित करने के लिए अपनाए जा सकने वाले तरीकों पर चर्चा कीजिए।

*संदर्भ- **राजनीतिक नैतिकता और हितों का टकराव (Political Ethics and Conflict of Interest)***

2. लोक निर्माण विभाग में काम करने वाला एक ईमानदार और समर्पित सिविल सेवक को सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क निर्माण में बड़ी अनियमितताओं का पता चलता है। आगे की जाँच में, उन्होंने पाया कि अन्य अधिकारियों का स्थानीय ठेकेदारों के साथ गठजोड़ है, जो निर्माण के लिए घटिया सामग्री का उपयोग करते हैं। निर्माण पूरा होने पर, सड़क का उपयोग सेना द्वारा किया जाएगा। यह आपातकाल के समय सैनिकों की आवाजाही को सुगम बनाएगी और राष्ट्रीय सुरक्षा में योगदान देगी। हालांकि, अनियमितताओं के बारे में उच्च अधिकारियों से शिकायत करने या मीडिया में उजागर करने से परियोजना में देरी होगी और उसे संबंधित हितधारकों से प्रतिशोध का खतरा हो सकता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- विभिन्न हितधारकों और उनके हितों की पहचान कीजिए।
- मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए और सिविल सेवक के लिए उपलब्ध विकल्पों की उनके गुणों और दोषों के साथ चर्चा कीजिए।

*संदर्भ- **व्हिसलब्लोइंग की नैतिकता***

3. आप एक सरकारी विनियामक संस्था में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं। हाल ही में, आपका एक करीबी दोस्त, जो एक सफल निजी कंपनी चलाता है, एक व्यावसायिक प्रस्ताव लेकर आपके पास आया है। वह उस क्षेत्र में एक नया उद्यम शुरू करना चाहता है, जिसे आपका विभाग नियंत्रित करता है। इसलिए वह नियामक परिदृश्य जानने के लिए आपका मार्गदर्शन चाहता है। वह आपको आश्वासन देता है कि यह सिर्फ मैत्रीपूर्ण सलाह है और आपकी विशेषज्ञता की सराहना के प्रतीक के रूप में आपको कंपनी में एक छोटी हिस्सेदारी प्रदान करने की पेशकश करता है।

इस बीच, आपका विभाग ऐसी नई नीतियां तैयार करने की प्रक्रिया में है जो इस क्षेत्र के व्यवसायों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। आपको इन आगामी परिवर्तनों के बारे में अंदरूनी जानकारी है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस स्थिति में नैतिक मुद्दों और हितों के संभावित टकराव की पहचान कीजिए।
- इस परिदृश्य में आप क्या कार्रवाई करेंगे? लोक सेवकों के लिए नैतिक सिद्धांतों और दिशा-निर्देशों के आधार पर अपनी प्रतिक्रिया का औचित्य सिद्ध कीजिए।
- तीन प्रणालीगत उपाय सुझाइये जिन्हें सार्वजनिक प्रशासन में हितों के ऐसे टकराव को रोकने के लिए लागू किया जा सकता है।

*संदर्भ- **लोक प्राधिकारियों के हितों का टकराव***

4. आप एक ऐसे जिले के SDM हैं जहां गरीबी की दर बहुत अधिक है। आप खाद्य वितरण कार्यक्रम के कार्यान्वयन की देखरेख के प्रभारी हैं। साइट विजिट के दौरान कार्यक्रम के कार्यान्वयन का विश्लेषण करने पर, यह पाया गया कि X गाँव में गाँव के सरपंच ने कार्यक्रम के लिए आवंटित नि:शुल्क अनाज को हड़प लिया है। पिछड़ी जाति के परिवारों को आवंटित अनाज का केवल आधा हिस्सा ही उन्हें दिया गया है। जिले के DM और MP के साथ सरपंच के अच्छे संबंध हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त मामले में कौन-कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?
- उपर्युक्त स्थिति में आपके लिए उपलब्ध विकल्पों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
- आप उपलब्ध विकल्पों में से किस विकल्प का चुनाव करेंगे और क्यों?

*संदर्भ- **सार्वजनिक अवसंरचना और सार्वजनिक सेवा वितरण***

© Vision IAS

5. हाल ही में एक राज्य के शिक्षा सचिव को राज्य लोक सेवा परीक्षा में घोर अनियमितताएँ देखने को मिलती हैं। आगे की जाँच से पता चलता है कि परीक्षा की प्रक्रिया में शामिल अधिकारियों और कुछ अभ्यर्थियों के बीच साँठगाँठ है, जिन्होंने परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए अनुचित साधनों का इस्तेमाल किया है। यह परीक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राज्य में विभिन्न सिविल सेवाओं के लिए अभ्यर्थी की भर्ती करती है। राज्य के प्रशासन की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए इस परीक्षा की शुचिता सुनिश्चित करना आवश्यक है। हालांकि, इस घोटाले को जनता या उच्च अधिकारियों के सामने उजागर करने से भर्ती प्रक्रिया में देरी हो सकती है और लोक सेवा आयोग की छवि खराब हो सकती है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- विभिन्न हितधारकों और उनके हितों की पहचान कीजिए।
- मामले में शामिल नैतिक मुद्दों और शिक्षा सचिव द्वारा किए जा सकने वाले उपायों पर चर्चा कीजिए।

*संदर्भ- **सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी***

6. आप एक ऐसे क्षेत्र के जिला मजिस्ट्रेट हैं, जहां एक प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजना कई वर्षों से लंबित है। यह परियोजना क्षेत्र के विकास के लिए अति महत्वपूर्ण है और यह सार्वजनिक परिवहन में सुधार करके स्थानीय नागरिकों के जीवन को काफी हद तक बेहतर बनाने की क्षमता रखती है। हालांकि, आपको पता चलता है कि इस देरी का कारण व्यापक भ्रष्टाचार है, जिसमें लोक अधिकारियों और निजी ठेकेदारों की मिलीभगत शामिल है। ये हितधारक रिश्वतखोरी में लगे हुए हैं, परियोजना की लागत बढ़ा रहे हैं और परियोजना के लिए निर्धारित धन का गबन कर रहे हैं।

जिला मजिस्ट्रेट के रूप में, आपको निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- आपके विभाग के कुछ वरिष्ठ अधिकारी भ्रष्टाचार में शामिल हैं और आपको डर है कि अगर आप कार्रवाई करते हैं तो आपको प्रतिशोधात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा।
- नागरिक देरी से लगातार निराश हो रहे हैं और आप पर परियोजना को पूरा करने के लिए तत्काल कदम उठाने का दबाव है।
- व्हिसलब्लोअर्स ने भ्रष्टाचार के सबूत पेश किए हैं, लेकिन उन्हें उत्पीड़न और अपनी सुरक्षा को लेकर धमकियों का सामना करना पड़ रहा है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- दी गई स्थिति में आपके सामने कौन-कौन सी नैतिक दुविधाएं हैं?
- भविष्य में भ्रष्टाचार की ऐसी घटनाओं को रोकने और सार्वजनिक परियोजनाओं में जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए लागू किए जा सकने वाले उपायों का सुझाव दीजिए।

*संदर्भ - **भ्रष्टाचार***

7. एक गेमिंग कंपनी है, जो एक लोकप्रिय रियल मनी गेम की मेजबानी करती है। इस कंपनी पर अपने स्वयं के गेमिंग प्लेटफॉर्म पर बॉट्स के उपयोग का आरोप लगाया गया है। ये बॉट गेम के परिणामों में हेरफेर करते हैं और इस पर यूजर्स को आर्थिक और सामाजिक रूप से नुकसान पहुंचाने का आरोप है। लक्षित विज्ञापनों के लिए डेटा बेचे जाने के आरोपों के साथ ही कंपनी की डेटा संग्रह प्रथाओं के बारे में भी चिंताएं हैं।

उपरोक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इसमें शामिल विभिन्न हितधारकों और संबंधित नैतिक चिंताओं की पहचान कीजिए।
- ऑनलाइन गेमिंग के उद्भव के साथ उत्पन्न होने वाली विभिन्न नैतिक चिंताएं क्या हैं और इन नैतिक चिंताओं का कैसे समाधान किया जा सकता है?

*संदर्भ- **ऑनलाइन गेमिंग की नैतिकता***

8. आपको एक ऐसे शहर में पुलिस अधीक्षक नियुक्त किया गया है, जहाँ पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ अपराध में बड़ी वृद्धि हुई है। आप एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ पर भीड़ एकत्रित है, जो एक महिला के साथ यौन उत्पीड़न के आरोपी व्यक्ति के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग कर रही है। आपके विभाग के अधिकारी "तुरंत न्याय" के रूप में आरोपी को सरेआम पीटते नज़र आते हैं। हालांकि, इस कृत्य को लोगों से वाहवाही मिल रही है, लेकिन यह विधि की सम्यक् प्रक्रिया और विधि के शासन के सिद्धांतों के बिल्कुल विपरीत है। जब आप स्थिति का आकलन करते हैं, तो आप अपने विभाग के भीतर एक विभाजन देखते हैं: कुछ अधिकारी इन कार्रवाइयों को जनता के आक्रोश के लिए एक आवश्यक प्रतिक्रिया के रूप में उचित ठहरा रहे हैं, जबकि अन्य नैतिक निहितार्थों और संभावित कानूनी परिणामों के बारे में चिंता व्यक्त कर रहे हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस स्थिति में शामिल प्रमुख हितधारकों की पहचान कीजिए और उनके सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं पर चर्चा कीजिए।
- अपने विभाग में होने वाली न्यायेतर कार्रवाइयों से निपटने और नैतिक मानकों के पालन को बढ़ावा देने के लिए आपको क्या कदम उठाने चाहिए?

*संदर्भ- **तुरंत न्याय***

9. एक धनी उद्योगपति, श्री X, ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल बनाने के लिए 50 करोड़ रुपये दान करते हैं, जिससे उन्हें सार्वजनिक प्रशंसा मिलती है। बाद में पता चलता है कि उन्होंने 30 करोड़ रुपये की कर चोरी की और दान का उपयोग करके लाभ का दावा करते हुए अपनी कंपनी की छवि सुधारने का प्रयास किया। आलोचकों का तर्क है कि उनका परोपकार व्यक्तिगत लाभ का एक साधन है, जबकि समर्थकों का कहना है कि स्कूलों से समाज को अभी भी लाभ होता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- "कर लाभ से प्रेरित परोपकार दान नहीं बल्कि स्मार्ट अकाउंटिंग है।" इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। लाभ और सामाजिक कल्याण को संतुलित करते हुए, आधुनिक भारत में नैतिक कॉर्पोरेट परोपकार का मार्गदर्शन गांधीजी का "न्यासिता" का सिद्धांत कैसे कर सकता है?
- "सामाजिक कल्याण के लिए निजी परोपकार पर सरकारों की बढ़ती निर्भरता राज्य की जिम्मेदारी के क्षरण के बारे में चिंताएं बढ़ाती है।" भारत की विकास संबंधी चुनौतियों के संदर्भ में, इस कथन का परीक्षण कीजिए।

*संदर्भ- **परोपकार: सामाजिक भलाई के लिए एक नैतिक अनिवार्यता***

10. आप एक मध्यम आकार के भारतीय टेक स्टार्टअप के CEO हैं जिसने वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया एक अभिनव मोबाइल ऐप विकसित किया है। यह ऐप ग्रामीण किसानों और छोटे विक्रेताओं जैसी वंचित आबादी को व्यक्तिगत सूक्ष्म-ऋण और वित्तीय सलाह देने के लिए यूजर्स के ऑनलाइन व्यवहार, खर्च करने की आदतों और सोशल मीडिया पर उनकी गतिविधियों का विश्लेषण करने के लिए AI एल्गोरिदम का उपयोग करता है। लॉन्च के बाद से, ऐप ने काफी लोकप्रियता हासिल की है तथा 5 लाख से अधिक यूजर्स को सेवा दे रहा है और स्टार्टअप ने पूंजीपतियों से काफी निवेश आकर्षित किया है। हालांकि, एक न्यूज आउटलेट द्वारा हाल ही में किए गए खुलासे से पता चला है कि यह स्टार्टअप अतिरिक्त राजस्व सृजित करने के लिए तीसरे पक्ष के विज्ञापनदाताओं और बीमा कंपनियों के साथ यूजर्स का डेटा साझा कर रही है, यह जानकारी ऐप के लंबे टर्म्स एंड कंडीशंस में छुपी हुई है जिसे अधिकांश यूजर्स पूरी तरह से पढ़ और समझ नहीं पाए हैं।

आप असमंजस की स्थिति में हैं। डेटा-साझाकरण जारी रखने से स्टार्टअप की वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित हो सकती है और विस्तार को बढ़ावा मिल सकता है, लेकिन यह कानूनी कार्रवाई, यूजर्स के विश्वास की हानि और कर्मचारियों के मनोबल को खतरे में डालता है। इसे रोकने से स्टार्टअप के विकास और निवेशकों के विश्वास पर असर पड़ सकता है, जिससे वंचित समुदायों की सेवा करने का आपका मिशन कमजोर हो सकता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- हितधारकों की पहचान करते हुए, इस स्थिति में मौजूद नैतिक दुविधाओं का विश्लेषण कीजिए।
- CEO के रूप में आपकी संभावित कार्यवाइयां क्या होंगी? प्रत्येक के गुण और दोषों का मूल्यांकन कीजिए।
- आप क्या निर्णय लेंगे और अपने हितधारकों के समक्ष इसे कैसे उचित ठहराएंगे?

*संदर्भ- **सर्विलांस कैपिटलिज्म***

11. आप भारत के एक ग्रामीण जिले में जिला मजिस्ट्रेट के रूप में तैनात हैं, जहाँ हाल ही में व्हाट्सएप पर एक झूठी अफवाह फैली है, जिसमें दावा किया गया है कि एक विशेष समुदाय के लोगों ने दूसरे समुदाय को नुकसान पहुंचाने के लिए स्थानीय जल आपूर्ति में जहर मिला दिया है। इस गलत सूचना के कारण तनाव बढ़ गया है, कुछ ग्रामीण पानी पीने से इनकार कर रहे हैं और अन्य कई व्यक्ति आरोपी समुदाय के खिलाफ हिंसा की धमकी दे रहे हैं। स्थिति तेजी से बिगड़ती जा रही है, और सांप्रदायिक हिंसा का खतरा बढ़ रहा है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस स्थिति में आपके सामने आने वाली नैतिक और प्रशासनिक चुनौतियों की पहचान कीजिए। इस संकट का समाधान करने के लिए आप अपनी कार्रवाइयों को किस प्रकार प्राथमिकता देंगे?
- अनुनय के सिद्धांतों (लोकनीति, भावनात्मकता और तर्क) का उपयोग करते हुए, गलत सूचना का मुकाबला करने और ग्रामीणों के बीच विश्वास बहाल करने के लिए एक रणनीति तैयार कीजिए।
- शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता की भूमिका को ध्यान में रखते हुए, आप अपने जिले में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कौन-कौन से दीर्घकालिक उपाय प्रस्तावित करेंगे?

*संदर्भ- **अनुनय***

© Vision IAS

12. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ती अश्लीलता (Obscenity) और अपशब्दों (Profanity) को देखते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने सॉलिसिटर जनरल को निर्देश दिया है कि वे ऑनलाइन कंटेंट में "गंदी भाषा" और "अश्लीलता" पर अंकुश लगाने के उपायों का प्रस्ताव करें। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक नैतिक मानकों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- एक समाज/ देश को जब कोई बात आपत्तिजनक और अश्लील लगती है, तो वह दूसरे के लिए दैनिक चर्चा का हिस्सा हो सकती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता के बढ़ने से कौन-से नैतिक मुद्दे पैदा होते हैं?
- सरकार यह कैसे सुनिश्चित कर सकती है कि सार्वजनिक सदाचार बनाए रखते हुए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा की जाए? रचनात्मकता और कलात्मक अभिव्यक्ति को बाधित किए बिना अश्लील कंटेंट को सीमित करने के लिए क्या दिशा-निर्देश प्रस्तावित किए जाने चाहिए?
- डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को कंटेंट को विनियमित करने में क्या भूमिका निभानी चाहिए, और वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के साथ समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को कैसे संतुलित कर सकते हैं?

*संदर्भ- **डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अश्लीलता***

13. हाल ही में, आप योग्यता आधारित प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से प्रखंड विकास अधिकारी के पद पर चयनित हुए हैं। अपनी पढ़ाई के उद्देश्य से आप अपने पैतृक गांव से दूर एक महानगर में चले गये थे। रिजल्ट की घोषणा के बाद, आप लगभग 5 वर्षों के बाद अपने गांव जाने का फैसला करते हैं। वहां पहुंचकर, आप अपनी मौसी से मिलते हैं, जो एक वर्ष पहले विधवा हो गई थीं। आपने देखा कि उनके साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है, जैसे कि उन्हें पारिवारिक समारोहों में शामिल नहीं होने दिया जाता है, रसोई और घर के मुख्य क्षेत्रों में प्रवेश करने पर प्रतिबंध है, आदि। इससे परेशान होकर आपने अपने माता-पिता से बात करने का फैसला किया, जिन्होंने आपको बताया कि वहां के ग्रामीण विधवा महिलाओं को अपशकुन मानते हैं और उनसे दूरी बनाए रखते हैं। 21वीं सदी में आपके गांव और अपने घर में ऐसी मान्यताओं की मौजूदगी ने आपको परेशान कर दिया है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- करुणा को परिभाषित करते हुए सुझाव दीजिए कि दूसरों के प्रति करुणा के गुणों को आत्मसात करने से भेदभावपूर्ण सामाजिक समस्याओं से निपटने में कैसे मदद मिलेगी?
- इसमें शामिल प्रमुख हितधारकों की पहचान कीजिए और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों पर चर्चा कीजिए।
- आप यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कदम उठाएंगे कि आपके गांव से ऐसी मान्यताएं खत्म हो जाएं?

*संदर्भ- **महात्मा गांधी और करुणा***

14. XYZ जिले में पिछले दशक में तेजी से आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। औद्योगिक और तकनीकी प्रगति तथा शहरीकरण में पर्याप्त निवेश को इसका कारण बताया गया है। जिले की प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, और यह क्षेत्र व्यापार एवं वाणिज्य का केंद्र बन गया है। सरकारी पहलों से स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार हुआ है। हालांकि, इन सकारात्मक रुझानों के बावजूद, हाल के अध्ययनों से यहां के निवासियों, विशेष रूप से युवाओं के बीच तनाव, चिंता संबंधी विकारों, अवसाद, सामाजिक अलगाव और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में चिंताजनक वृद्धि दर्ज की गई है। सामाजिक अपेक्षाओं को पूरा करने का दबाव, असफलता का डर और भावनात्मक लचीलेपन की कमी इस मानसिक स्वास्थ्य संकट को और बढ़ा रहे हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- एक जिला मजिस्ट्रेट के रूप में, आर्थिक संवृद्धि के बावजूद अप्रसन्नता में हो रही वृद्धि को दूर करने के लिए कौन-कौन से नीतिगत हस्तक्षेप किए जा सकते हैं? गवर्नेंस, सार्वजनिक नीति और सामुदायिक विकास के संदर्भ में चर्चा कीजिए।
- प्रसन्नता मानव विकास का एक अनिवार्य घटक है। नीतिगत लक्ष्य के रूप में प्रसन्नता को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। क्या नीतिगत फ्रेमवर्क में प्रसन्नता को भी आर्थिक संवृद्धि की तरह समान महत्त्व दिया जाना चाहिए।

*संदर्भ- **प्रसन्नता/ सुख***

15. आपने हाल ही में एक सुदूर जिले X के जिला मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यभार संभाला है। वहां की जनता और अधिकारियों से बातचीत करने पर आपको पता चलता है कि जिले में अधिकारियों के बीच भ्रष्टाचार, गुणवत्ताहीन सेवा वितरण और लापरवाही जैसी प्रथाओं के साथ शासन का बहुत खराब रिकॉर्ड है। आगे की जांच करने पर आपको पता चलता है कि अधिकारी और नागरिक दोनों ही अपनी मान्यताओं में काफी पारंपरिक हैं और आधुनिक शासन के विचारों से जुड़ नहीं पाते हैं। इसलिए, आपको प्रशासनिक रणनीति को सुशासन के भारतीय विचारों से जोड़कर उसे नया रूप देने की तत्काल आवश्यकता महसूस होती है, ताकि यह न केवल लोगों की मान्यताओं के साथ जुड़ सके, बल्कि अधिकारी भी पूरी भावना के साथ इसका कार्यान्वयन सुनिश्चित कर सकें।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- सुशासन की भारतीय अवधारणा की प्रमुख आधारभूत धारणाएं क्या हैं?
- कुछ उदाहरणों का उल्लेख करते हुए, सुझाव दीजिए कि जिला X के शासन के सामने आने वाली समस्याओं से निपटने में भारतीय विचार किस प्रकार मदद करते हैं?

*संदर्भ- **सुशासन की भारतीय अवधारणा***

16. आप भारत के विदेश मंत्रालय (MEA) में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं और ITEC एवं विकास साझेदारी प्रशासन (DPA) के तहत भारत की विदेशी सहायता पहलों की देखरेख कर रहे हैं। एक विकासशील देश जो बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य सेवा और खाद्य सुरक्षा के लिए भारतीय सहायता प्राप्त कर रहा है, अब राजनीतिक उथल-पुथल, भ्रष्टाचार के आरोपों और स्थानीय सरकार द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन का सामना कर रहा है।

रिपोर्ट्स बताती हैं कि पिछले फंड का दुरुपयोग किया गया था, जिससे पारदर्शिता को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। साथ ही, यह भी स्पष्ट है कि सहायता को रोकने से कमजोर आबादी के लिए स्थिति और खराब हो सकती है। अंत में, सहायता वापस लेने से BRI ऋणों के माध्यम से चीन के बढ़ते प्रभाव के लिए रास्ता खुल सकता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस मामले में नैतिक सिद्धांत क्या हैं?
- प्रमुख हितधारकों की पहचान कीजिए और उनकी चिंताएं क्या हैं?
- कौन सी व्यवस्था यह सुनिश्चित कर सकती है कि भ्रष्ट शासन को मजबूत किए बिना सहायता लाभार्थियों तक पहुंचे?

*संदर्भ- **मौजूदा दौर की विदेशी सहायता से संबंधित नैतिक सरोकार***

17. आप वर्तमान में एक अच्छे वेतन वाली MNC में कार्यरत हैं, जिसके लिए आपको क्लाइंट्स से मिलने के लिए अलग-अलग शहरों की यात्रा करनी पड़ती है। आपका मासिक बोनस और उच्च पद पर दीर्घकालिक पदोन्नति पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करती है कि आपने एक महीने में कितने क्लाइंट्स के साथ मीटिंग की है। हाल ही में, आपकी माँ को स्टेज 2 कैंसर का पता चला है, जिसके लिए न केवल देखभाल की आवश्यकता है, बल्कि उनके उपचार के लिए आय का एक स्थिर और अच्छा स्रोत भी बनाए रखना आवश्यक है। हालांकि, लगातार यात्रा करने, कार्य से जुड़े लक्ष्यों को पूरा करने और बार-बार अस्पताल जाने के कारण आपको शहर में आयोजित होने वाले एक नाट्य कला कार्यक्रम के लिए अभ्यास करने का समय कम मिल पाता है। आप नाट्य कला के बहुत बड़े प्रशंसक रहे हैं और बचपन से ही इसका अनुसरण करते आए हैं। इसका नियमित अभ्यास करने से आपको बहुत खुशी मिलती है तथा आप दुनिया की भागदौड़ भरी खींचतान से अलग और सहज महसूस करते हैं। काम के बोझ और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने न केवल कार्यक्रम में आपको भूमिका निभाने के अवसर की संभावनाओं को कम कर दिया है, बल्कि आपको चिंता और मानसिक थकान से भी भर दिया है, जिससे आपके काम का प्रदर्शन भी खराब हो गया है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- वर्तमान समय में लोगों में व्यावसायिक गतिविधियों के कारण तनाव के लिए जिम्मेदार कारणों पर चर्चा कीजिए।
- उदाहरण देते हुए, ऐसे उपाय सुझाइए जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अपने कर्मचारियों के लिए प्रभावी कार्य-जीवन संतुलन सुनिश्चित करने हेतु अपनाने चाहिए।
- अपने काम, शौक और परिवार के प्रति जिम्मेदारियों के मध्य संतुलन सुनिश्चित करने के लिए आपको क्या कदम उठाने चाहिए?

*संदर्भ- **अच्छा जीवन: कार्य और अवकाश के बीच संतुलन बनाने की कला***

18. भू-राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में रिवानिया नामक एक काल्पनिक देश स्थित है। यह अपने पड़ोसी देश, कार्डोविया के साथ संसाधन समृद्ध सीमा पर लंबे समय से क्षेत्रीय विवाद का सामना कर रहा है। यह विवाद बार-बार संघर्ष, विस्थापन और क्षेत्रीय अस्थिरता का कारण बनता रहा है। राजनीतिक पूर्वाग्रहों और कमजोर प्रवर्तन के कारण ग्लोबल पीस काउंसिल जैसी बहुपक्षीय संस्थाएं प्रभावी रूप से मध्यस्थता करने में विफल रही हैं, जिससे अविश्वास गहरा रहा है। सामाजिक रूप से, यह विवाद रिवानिया में नृजातीय राष्ट्रवाद और अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव को बढ़ावा देता है, जिससे सामाजिक सामंजस्य को नुकसान होता है। इसके कारण सीमावर्ती क्षेत्रों के निवासियों को भय, ट्रॉमा का सामना करना पड़ता है और ईलाज के लिए अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है, जिससे परिवारो में बिखराव उत्पन्न होता हैं। शांति के पक्षधर कार्यकर्ता इससे निराश रहते हैं, क्योंकि वैश्विक संस्थाएं इस विवाद का समाधान करने के लिए संघर्ष करती हैं, जिससे समाज और लोगों पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस मामले में शामिल विभिन्न हितधारकों और नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए।
- चर्चा कीजिए कि शांति के विभिन्न पहलू एक-दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं?
- रिवानिया में एक नेता के रूप में, आप कार्डोविया के साथ संघर्ष का समाधान करके नैतिक नेतृत्व कैसे प्रदर्शित कर सकते हैं?

*संदर्भ- **शांति के पहलू***

19. हाल के वर्षों में, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के तेजी से विकास ने सार्वजनिक हस्तियों की एक नई श्रेणी जैसे सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के उदय को बढ़ावा दिया है। इस विशाल लोकप्रियता के साथ, इन्फ्लुएंसर्स के पास सार्वजनिक राय को आकार देने, उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित करने तथा फैशन, स्वास्थ्य और जीवन-शैली जैसे क्षेत्रों में लोगों के खरीद संबंधी निर्णयों को प्रभावित करने की शक्ति है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- समाज पर सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण कीजिए। (150 शब्द)
- सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के विनियमन के लिए मार्गदर्शक नैतिक सरोकार पर चर्चा कीजिए। (150 शब्द)

*संदर्भ- **सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और उपभोक्ता व्यवहार***

20. थाईलैंड के एक कैफे ने पतले ग्राहकों को संकरी सलाखों से गुजरने पर छूट दी, जिससे बॉडी शेमिंग को बढ़ावा देने के लिए उसकी आलोचना हुई। भारत में, जहां सौंदर्य मानक पहले से ही गोरे, पतले या मस्कुलर शरीरों के पक्ष में हैं, ऐसी प्रथाएं सुभेद्य समूहों को नुकसान पहुंचा सकती हैं। मीडिया और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा आदर्श रूप-रंगों को बढ़ावा देने के साथ, बॉडी इमेज अब एक व्यावसायिक साधन बन गया है - जिससे युवाओं, महिलाओं और हाशिए पर मौजूद समुदायों के लिए गंभीर नैतिक चिंताएं उत्पन्न होती हैं।

आप एक राष्ट्रीय विनियामक निकाय में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं जिसे एक भारतीय कैफे चेन से उपर्युक्त के समान "फिट-टू-सेव" प्रचार अभियान चलाने के प्रस्ताव की समीक्षा करने का काम सौंपा गया है। आपको चिंता है कि ऐसी प्रथाएं शरीर-आधारित भेदभाव को आम बना सकती हैं और एक हानिकारक मिसाल कायम कर सकती हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस मामले में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए।
- सुझाव दीजिए कि एक विनियामक प्राधिकरण के रूप में आप किस कार्रवाई की सिफारिश करेंगे।

*संदर्भ- **बॉडी शेमिंग के नैतिक आयाम***

21. रवि, एक 28 वर्षीय व्यक्ति है, जिसे एक हाई-प्रोफाइल मामले में एक पुलिस अधिकारी की पूर्व-नियोजित और क्रूर हत्या के मामले में दोषी ठहराया गया है, जिसे मीडिया में व्यापक कवरेज मिला है। ट्रायल कोर्ट ने उसे भारतीय न्याय संहिता के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत मौत की सजा सुनाई है। मारे गए अधिकारी का परिवार फांसी के माध्यम से न्याय और मामले के निस्तारण की मांग कर रहा है, जबकि कई मानवाधिकार संगठन सजा को आजीवन कारावास में बदलने के लिए याचिका दायर कर रहे हैं, जिसमें सजा की अपरिवर्तनीय प्रकृति और मृत्युदंड के उन्मूलन की ओर वैश्विक रुझान का हवाला दिया गया है। रवि मुकदमे और अपील की प्रक्रिया के दौरान पहले ही 3 साल कारागार में व्यतीत कर चुका है, और उसका मानसिक स्वास्थ्य स्पष्ट रूप से बिगड़ गया है। उसके वकील का तर्क है कि सजा उसके जीवन और गरिमा के मौलिक अधिकार का उल्लंघन करती है।

आप विधि और न्याय मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं, जिन्हें सरकार को यह सलाह देने का काम सौंपा गया है कि सजा को बरकरार रखा जाए या दया की सिफारिश की जाए।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- इस मामले में शामिल नैतिक दुविधाओं की पहचान कीजिए।
- इस परिदृश्य में मृत्युदंड से संबंधित प्रतिस्पर्धी मूल्यों और नैतिक दर्शनों (जैसे- उपयोगितावाद बनाम कर्त्तव्य-मूलक नैतिकता) पर चर्चा कीजिए।
- इस मामले में प्रमुख हितधारक कौन-कौन हैं? संक्षेप में उनके दृष्टिकोण और नैतिक चिंताओं की रूपरेखा तैयार कीजिए।
- यदि आप अंतिम निर्णय लेने की स्थिति में होते, तो आपकी सिफारिश क्या होती और क्यों? नैतिक सिद्धांतों, संवैधानिक मूल्यों और प्रासंगिक कानूनी सिद्धांतों का उपयोग करके अपने उत्तर को उचित ठहराएं।
- मृत्युदंड का सहारा लिए बिना न्याय और सार्वजनिक विश्वास सुनिश्चित करने के लिए वैकल्पिक उपाय सुझाएं।

*संदर्भ- **मृत्युदंड और नैतिक आयाम***

22. आप वर्तमान में एक ई-कॉमर्स कंपनी के CEO के रूप में कार्यरत हैं। ऑटोमेशन के आगमन के साथ, आपकी कंपनी ने कई ऑपरेशन को **AI-सक्षम तकनीकों** से स्वचालित कर दिया है। इससे एक ओर जहां भारी खर्च हुआ है, वहीं दूसरी ओर ऐसे कर्मचारी हैं जिनका काम अब **अनावश्यक** हो गया है। इसलिए, कंपनी के बोर्ड ने लगभग **250 कर्मचारियों की छंटनी** करने का फैसला किया है। आपको चयनित कर्मचारियों को यह खबर बताने का काम सौंपा गया है, जिनमें से कुछ के साथ आपके **व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंध** बहुत अच्छे हैं।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- उपर्युक्त मामले में आपके सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं की पहचान कीजिए।
- विभिन्न हितधारकों के प्रति एक व्यवसाय की प्रमुख जिम्मेदारियां क्या हैं?
- कंपनी के बोर्ड को छंटनी से पहले किए जाने वाले उपायों का सुझाव दीजिए।

संदर्भ- **व्यावसायिक छंटनी की नैतिकता**

23. आपको हाल ही में एक दूरस्थ जिले में **मुख्य चिकित्सा अधिकारी** के पद पर नियुक्त किया गया है। आपको एक ऐसी महिला का मामला मिलता है जिसे हाल ही में **सर्वाइकल ट्यूमर** का पता चला था। उस महिला ने अपना अधिकांश जीवन अपने शराबी पति द्वारा की गई हिंसा और उत्पीड़न के बीच बिताया है। अब उसकी बीमारी अंतिम अवस्था में पहुँच चुकी है, जिससे वह असहनीय दर्द और बेबसी झेल रही है। उसका परिवार भी उसकी भलाई के प्रति बहुत विचारशील नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, उसने **चिकित्सकीय सहायता से मृत्यु** के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की है। हालांकि, क्षेत्र के लोग अत्यधिक धार्मिक हैं और यदि ऐसे कृत्य की बात फैल गई, तो अशांति उत्पन्न हो सकती है। इस स्थिति ने आपको एक **कठिन दुविधा** में डाल दिया है जहाँ एक ओर एक असहाय महिला की पीड़ा है, तो दूसरी ओर नागरिक अशांति का मुद्दा है।

उपर्युक्त केस स्टडी के आधार पर, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

- महिला को चिकित्सकीय सहायता से मृत्यु उपलब्ध करवाने के पक्ष और विपक्ष में कुछ तर्कों का उल्लेख कीजिए।
- ऐसी परिस्थितियों में शामिल प्रमुख नैतिक दुविधाएं क्या हैं?
- भारत में गरिमापूर्ण मृत्यु के अधिकार की कानूनी स्थिति क्या है? जैन धार्मिक प्रथा संथारा इस अधिकार को बढ़ावा देने के लक्ष्य में कैसे मदद करती है?

संदर्भ- **गरिमापूर्ण मृत्यु का अधिकार**

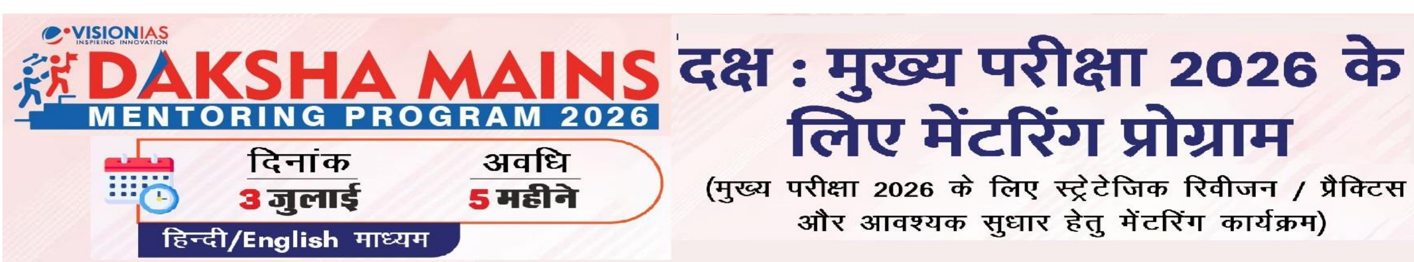

11. परिशिष्ट (Appendix)

भारतीय नैतिक विचारक और दार्शनिक: नैतिक विचार/ मूल्य और उद्धरण

व्यक्तित्व	नैतिक विचार/ विजन/ मूल्य	उद्धरण
कौटिल्य (चाणक्य) 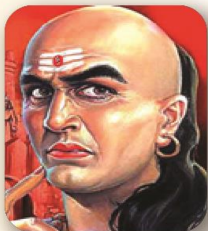	• **कर्तव्य और न्याय-परायणता:** लीडर या नेतृत्वकर्ता को काम (वासना), क्रोध, लोभ, मोह, घमंड, और हर्ष (अति प्रसन्नता) को त्याग कर आत्म-संयम दिखाना चाहिए। • **खुशहाली:** नेतृत्वकर्ता की खुशहाली उसकी प्रजा के कल्याण में निहित है। • **व्यक्तिगत उत्कृष्टता:** मनुष्य जन्म से नहीं, कर्मों से महान होता है।	• मोह के समान कोई शत्रु नहीं और क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं। • संतुलित मन के समान कोई तपस्या नहीं है, संतोष के समान कोई सुख नहीं है, लोभ के समान कोई रोग नहीं है, तथा दया के समान कोई सद्गुण नहीं है।
तिरुवल्लुवर	• **आचरण:** उचित आचरण ही सद्गुणों का मूल स्रोत है जबकि अनुचित आचरण सदैव दुःख का कारण बनता है। ◦ वह आचरण सद्गुण है जो इन चार चीजों से मुक्त है: **द्वेष, काम, क्रोध** और **कटु वचन।** • **शुद्ध आत्मा:** बाह्य शरीर की शुद्धि जल से होती है, जबकि आंतरिक शुद्धि सत्यता से होती है।	• किसी बुराई करने वाले को फटकारने के लिए, बदले में अच्छा काम करके उसे शर्मिंदा करें। • करुणा ही सबसे अधिक दयालु सद्गुण है और यह पूरे संसार को चलायमान रखती है।
गुरु नानक	• **वंड छको:** ईश्वर ने आपको जो कुछ दिया है उसे दूसरों के साथ बांटना और जरूरतमंदों की मदद करना। ◦ उन्होंने अनुयायियों को अपनी कमाई का कम-से-कम दसवां हिस्सा दूसरों के कल्याण हेतु दान करने के लिए प्रोत्साहित किया। • **बिना किसी डर के सत्य बोलो:** झूठ को दबाकर विजय पाना अस्थायी है, जबकि सत्य के साथ अडिग रहना स्थायी है।	• सबसे बड़ी सुख-सुविधा और स्थायी शांति तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति अपने भीतर से स्वार्थ को मिटा देता है। • यदि लोग ईश्वर द्वारा दी गई संपत्ति का उपयोग केवल अपने लिए या उसे संजोकर रखने के लिए करते हैं, तो वह शव के समान है। लेकिन यदि वे इसे दूसरों के साथ बांटने का निर्णय लेते हैं, तो वह पवित्र भोजन बन जाता है।
स्वामी विवेकानंद	• **मानवतावाद:** जनता ही हमारी भगवान होनी चाहिए। मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है। • **निःस्वार्थता:** उन्होंने प्रचार किया कि स्वार्थ अनैतिक है और जो स्वार्थहीन है वह नैतिक है। • **एकता:** इसका तात्पर्य है कि आप मेरा हिस्सा हैं और मैं आपका हिस्सा हूँ; मान्यता यह है कि आपको दुःख पहुँचाने में मैं स्वयं को दुःख पहुँचाता हूँ और आपकी सहायता करने में मैं स्वयं की सहायता करता हूँ।	• आप जो भी सोचते हैं, आप वही होंगे। अगर आप खुद को कमज़ोर समझते हैं, तो आप कमज़ोर होंगे; अगर आप खुद को मज़बूत समझते हैं, तो आप मज़बूत होंगे। • जिस दिन आपके सामने कोई समस्या न आए, यह समझ लें कि आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं।

1

व्यक्तित्व	नैतिक विचार/ विजन/ मूल्य	उद्धरण
सावित्रीबाई फुले 	• वे **दृढ़ता और निस्वार्थता** जैसे मूल्यों को कायम रखती थीं। ◦ समाज के उच्च वर्ग के कई सदस्यों के विरोध के बावजूद, उन्होंने लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा दिया। ◦ उन्होंने ब्यूबोनिक प्लेग के दौरान लोगों की रक्षा करते हुए अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे। • अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ, उन्होंने **1848 में बालिकाओं के लिए भारत का पहला स्कूल** खोला था। • उन्हें **भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पहली महिला शिक्षक** के रूप में मान्यता प्राप्त है।	• कलम, तलवार से **अधिक शक्तिशाली** है। • शिक्षा सामाजिक बुराइयों को मिटाने का सबसे बड़ा हथियार है। • एक महिला को सशक्त बनाओ, और आप पूरे समाज को ऊपर उठाते हैं।
जवाहर लाल नेहरू 	• **कल्याणकारी राज्य:** एक कल्याणकारी राज्य आदर्श रूप से अपने नागरिकों को बेरोजगारी आदि से जुड़े बाजार जोखिमों से बचाकर बुनियादी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। • **प्रशासन:** प्रशासन ऐसा होना चाहिए जो **जनोन्मुख** हो, आम आदमी के प्रति शिष्टाचार दिखाए, लोगों में सहभागिता की भावना पैदा करे तथा लोगों में सहयोग की प्रेरणा दे।	• किसी महान उद्देश्य के लिए निष्ठापूर्वक और कुशलतापूर्वक किया गया कार्य, भले ही उसे तत्काल मान्यता न मिले, अंततः फल देता है। • बुराई अनियंत्रित रूप से बढ़ती है, सहन की गई बुराई पूरी व्यवस्था को विषाक्त कर देती है।
सरदार पटेल 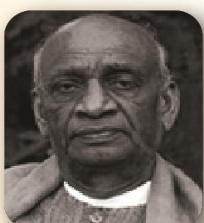	• सरदार पटेल ने सिविल सेवा को भारत का 'स्टील फ्रेम' कहा था, जो प्रशासन में सिविल सेवा के महत्व पर जोर देता है। • **निर्णय लेने की प्रक्रिया में समावेशिता:** उदाहरण के लिए- रियासतों के एकीकरण में, उन्होंने भारत की इच्छा थोपने की बजाय संवाद और वार्ता को प्रोत्साहित किया था।	• शक्ति के अभाव में विश्वास बेकार है। किसी भी महान कार्य को पूरा करने के लिए विश्वास और शक्ति दोनों ही आवश्यक हैं। • चरित्र निर्माण के दो तरीके- उत्पीड़न को चुनौती देने के लिए शक्ति विकसित करना, तथा परिणामस्वरूप होने वाली कठिनाइयों को सहन करना, जिससे साहस एवं जागरूकता पैदा होती है।
ए.पी.जे. अबुल कलाम 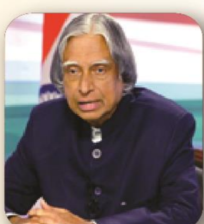	• **सामाजिक ग्रिड:** यह ज्ञान ग्रिड, स्वास्थ्य ग्रिड और ई-गवर्नेंस ग्रिड से मिलकर बना है जो PURA/ पूरा (ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं के प्रावधान) ग्रिड को सहायता प्रदान करता है • **विनम्र बनें:** विनम्रता एक शक्तिशाली गुण है और रहेगी, क्योंकि जहां अहंकार विफल हो जाता है, वहां विनम्रता जीत जाती है।	• बुद्धि विनाश को रोकने का एक हथियार है; यह एक ऐसा आंतरिक किला है जिसे शत्रु नष्ट नहीं कर सकते। • दृढ़ संकल्प वह शक्ति है जो हमें हमारी सभी निराशाओं और बाधाओं से बाहर निकालती है। यह हमारी इच्छाशक्ति को मजबूत बनाने में मदद करता है जो सफलता का आधार है।

2

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स 2026

प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली

15 जुलाई, 2 PM

अवधि – 12 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए **QR कोड को स्कैन कीजिए**

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए **QR** कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल **टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए**

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधिः 12 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधिः 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोटः अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन / मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन
अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित
विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन
इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन / ईमेल / लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़
प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें
प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी
अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest

Congratulations

to all Successful Candidates

10 in TOP 10 Selections in CSE 2024 from various programs of Vision IAS

1 AIR

Shakti Dubey

2 AIR

Harshita Goyal

GS Foundation Classroom Student

3 AIR

Dongre Archit Parag

GS Foundation Classroom Student

4 AIR

Shah Margi Chirag

5 AIR

Aakash Garg

6 AIR

Komal Punia

7 AIR

Aayushi Bansal

8 AIR

Raj Krishna Jha

9 AIR

Aditya Vikram Agarwal

10 AIR

Mayank Tripathi

हिंदी माध्यम में 30+ चयन CSE 2024 में

137 AIR

Ankita Kanti

182 AIR

Ravi Raaz

438 AIR

Mamata

448 AIR

Sukh Ram

509 AIR

Amit Kumar Yadav

HEAD OFFICE (DELHI)
33, Pusa Road,
Near Karol Bagh Metro Station,
Opposite Pillar No. 113,
Delhi - 110005

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor,
Mukherjee Nagar, Opposite Punjab
& Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office,
above Gate No. 2, GTB Nagar
Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

enquiry@visionias.in | /@visioniashindi | /visionias.upsc | /vision_ias_hindi/ | /hindi_visionias

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची